मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द

(दलित जीवन, श्रम, स्त्री-संवेदना आ सामाजिक संघर्षक कथा-संकलन)

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बारह गोट चयनित कथाक संग्रह)

मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द

(दलित जीवन, श्रम, स्त्री-संवेदना आ सामाजिक संघर्षक कथा-संकलन)

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चौदह गोट चयनित कथाक संग्रह)

चयन एवम् सम्पादन

डॉ. रीना कुमारी

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

MANUKKH BANAL RAHBAK JIDD

A Collection of Fourteen Maithili Short Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal
Compiled and Introduced by Dr. Rina Kumari

***Manukkh Banal Rahbak Jidd** is a significant collection of fourteen Maithili short stories by Shri Jagdish Prasad Mandal, one of the most distinguished voices in modern Maithili literature. With more than a thousand short stories to his credit, Mandal is renowned for his nuanced portrayal of the moral, emotional, and social fabric of Mithila, rendered with exceptional depth and realism. A recipient of the Tagore Literature Award (2011) and the Sahitya Akademi Award (2021), his work reflects the conscience and complexity of contemporary rural life.*

Rooted in everyday experience, the stories engage with labour, caste, women's lives, and social pressures as they unfold within ordinary human situations. Mandal's storytelling follows the natural rhythm of life, where dignity is preserved through conduct, patience, and ethical choice rather than overt or dramatic assertion.

Women emerge as thoughtful, resilient, and self-aware individuals, shaping their lives amid shifting social conditions. Labour and marginal existence are presented not as isolated concerns but as integral dimensions of human experience. At its core, the collection explores the sustained effort to remain humane in difficult times, offering a quiet yet resolute literary affirmation of that struggle.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-45-8
Price: 299/-
Copyright: © Publisher

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typography: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
E-mail: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font source: https://fonts.google.com

All rights to this book are reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, or generated in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

समर्पण

मूल्यनिष्ठ साहित्यक प्रति अडिग निष्ठा राखैत, शोधक शास्त्रीय आ विवेकसम्मत दिशा निर्धारित कयनिहार, आदरणीय ओ श्रद्धेय सभ शोध-निर्देशक आ निर्देशिका सभक पावन नाम, जनिक विवेक, अनुशासन आ बौद्धिक उद्गारसँ ज्ञान आ मनुष्यता–दुनू–निरन्तर आलोकित होइत अछि।

- रीना

अनुक्रम

'मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द'क प्रसंग		**07-09**
शुभकामना	**—**	**10-10**
प्रस्तावना	**—**	**10-34**
ठेलाबला	—	36
बपौती सम्पैत	—	45
रेहना चाची	—	54
गुड़ा खुद्दीक रोटी	—	59
उजगी	—	68
बेटीक कुभेला	—	72
मानसरोवरक यात्रा	—	83
बुढ़ापा	—	92
परिपक्व निरलज	—	100
केकरो भरोस	—	109
बुलन्दी	—	117
दसअना-छअअना	—	122
माइक सोग	—	127
गाम भगा देलक	—	134

'मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द'क प्रसंग...

साहित्यक विभिन्न विधाक अन्तर्गत 'समीक्षा' सेहो एक प्रमुख विधा होइछ। कोनो रचनाकारक मौलिक काव्य- सर्जनासँ अधिक कठिन ओ श्रमसाध्य थीक ओकर आलोचना करब, ओकर गुण-दोषपर सम्यक् विवेचन करब।

साहित्य-जगतक ई परम्परा रहलैक अछि जे कोनो काव्य-कृति हो ओकर सर्जनाक पश्चात् ओकर विभिन्न पक्षपर अर्चा-चर्चा होएब वांछित रहल छैक आ ओकर वादहि ओकर गुणवत्ता निखरल-परखल जाइत छैक। आलोचनाक निकषहिपर ई स्वर्णवत कासौटीपर कसल जाइत छैक, ओकर मार्जन-परिमार्जन होइत छैक ओ एही प्रक्रियासँ काव्य-पुरुष अमरकृतिकारक अभिधा पबैत, कालजयी रचनाकारक संज्ञा पबैत सदा-सर्वत्र सुप्रतिष्ठित सम्मानित होइत छथि। एहि प्रक्रियामे अथक साधनाक प्रयोजन पड़ैत छैक, श्रम-स्वेद बहाबए पड़ैत छैक आ तखनहि केओ मणि-माणिक-मुक्ता लए सहृदय साहित्य-रसिक ओ प्रेमी-जनक कर-कमलमे राखि यशी-यशस्वी बनबाक भागी बनबा योग्य होइत छथि। कालजयी कृतिक अभिधा पएबा लेल कालक अविच्छिन्न प्रवाहमे बहए पड़ैत छैक, कालक गतिक समानान्तर चलए पड़ैत छैक।

प्रो. डॉ. रीना कुमारी सहृदय सकल साहित्यक अध्येता-व्याख्याता छथि। छात्रावस्थहिसँ हिनक प्रतिभा-प्रभा निखरल रहल अछि। फलत: समीक्षा-विधाक स्पर्श करैत अपन काव्यात्त्व-प्रतिभाक अत्युत्तम परिचय दैत मैथिली-मंदिरकेँ सुशोभित-सुवासित कएल अछि।

मैथिली साहित्यक एक ख्यातिनाम हस्ताक्षर स्वनामधन्य श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-कृति 'मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द' चौदह गोट कथाक संग्रह थीक, जे सकल राष्ट्रक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमीसँ

पुरस्कृत-सम्मानित भए चुकल अछि, जे दलित-शोषित, सामाजिक संघर्ष, श्रम आ स्त्री-संवेदनाक परिप्रेक्ष्यमे प्रणीत अछि। एही कथा सभक पारायण कए प्रेरित-प्रभावित भए डॉ. रीना अपन सुललित लेखनी चलाए ओहिपर दू आखर लिखबाक अथक प्रयास कएलन्हि अछि। शब्द ब्रह्म होइछ, एहि मर्मकेँ ई जनैत छथि आ तेँ सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूपेँ ओकरा ग्रहण कए कथापर प्रकाश देलन्हि अछि जे वस्तुत: प्रेरक, मार्मिक ओ हृदयग्राही अछि।

डॉ. रीनाक दृष्टि आलोचकीय छन्हि। ई हंस-न्यायक पक्षधर प्रतीत होइत छथि आ तेँ अपन आलोचनामे नीर-क्षीर-विवेवक शरण लैत दृष्टिगत होइत छथि। फलत: हिनक लेखनीसँ नि:सृत कृति विश्वसनीय ओ पठनीय होइत अछि।

सहज सरल ओ स्वाभाविक रूपसँ चलैत जीवनक गतिक चित्रण जगदीशजीक कथामे भेटैत अछि। एहि धारित्रीक जन-जीवनमे अनेक प्रकारक चित्र भेटैछ जाहिमे मर्मस्पर्शी ओ हृदयविदारक सेहो रहैछ आ चिरस्मरणीय सेहो। वेदनाग्रस्त ओ संत्राससँ भरल दु:ख-दैन्यक चित्र-प्रस्तुतिमे विवेच्य कथाकार महारत प्रापत कएने छथि। एहि तथ्यकेँ आलोचक डॉ. रीना उत्तम रीतिएँ उजागर कए अपन गुरु-ज्ञान गरिमा ओ प्रकीर्तित कीर्ति-महिमाक स्तवनीय परिचय देलन्हि अछि।

विवेच्य रचनाकारक कालजयी कृतिमे ‘ठेलाबला’, गामक जिनगी, बतौती सम्पैत, अर्द्धांगिनी, रेहना चाची, गुड़ा-खुद्दीक रोटी प्रभृति दर्जनसँ ऊपर कथा दृष्टिगोचर भेलन्हि अछि ओलाचक रीनाकेँ।

कथामे ठेठ भाषाक ठाठ, ग्रामीण बोलचालक भाषाक प्रयोग आ सामाजिक परिवेशक चित्रांकन सटीक रूपेँ भेटैछ, जकर यथातथ्य स्वरूपक निरूपण-चित्रणामे आलोचक रीना साफल्य हस्तगत कएलन्हि अछि।

मण्डलजीक कथा-कृतिक प्रसंग डॉ. रीना यथार्थे लिखैत छथि- “एहि एक संग्रहमे अलग-अलग वर्ष, अलग-अलग अनुभव आ अलग-अलग सामाजिक परिस्थितिसँ उपजल कथासभ एक संग आएल अछि। ई संकलन मण्डलजीक लेखनक निरन्तरता आ समयक संग विकसित होइत संवेदनशील दृष्टिक ठोस प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।”

एतावता ई कहब सर्वथा समीचीन प्रतीत होइछ, जे समस्तीपुर कालेज समस्तीपुरक मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापकक पदपर सुप्रतिष्ठित डॉ. रीना कुमारी मैथिलीक भविष्य छथि। सम्प्रति हिनक श्रम उत्तरोत्तर सार्थक होइत हिनका यशी-यशस्वी बनओने रहत। कथन छैक- 'सत्यश्रमाभ्यां सकलथि सिद्धि'- तकरा चरितार्थ करैत।

एहि संग हम अपन प्रिय छात्राकेँ कृतिक स्वागत करैत हृदयत: मनत: संवर्द्धना करैत छी।

- धीरेन्द्र नाथ मिश्र

अवकाश प्राप्त वि. वि. प्राचार्य,

मैथिली विभाग, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा।

मो. +91 94703 84395

शुभकामना —

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक नवीनतम कथासंग्रह — मनुक्ख बनाम [illegible] - मे कुल चौदह गोट कथा छै। एहि कथा सभक पूर्व प्रकाशन भ' चुकल छै- ताहिमे स' उत्तम कथा सभके [illegible] रूपमे संकलित कयल जाइत छै। स्वाभाविक जे विभिन्न कालखण्डमे ~~कथा~~ जे तत्व-बिन्दु सभ प्रभावी रहलै- तकरा कथाक स्वरूप देलनि कथाकार। अतः ~~जीवन~~ विविध बहुरंगी जीवनक कथा सभ छै, जेकर आनन्द पाठकें भेटतैन आ कथाकारके यश-प्रतिष्ठा।

हमर हार्दिक ई मंगलकामना जे कथाकार सदति ऊर्जान्वित रहथि आ मैथिली कथा विधाकें समृद्ध करथि। —

नीता झा

[illegible]

बासन्ती नवरात्र
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

19.3.2026

2 Apr 2026, 7:49 pm

प्रस्तावना

प्रस्तुत पोथीक कथासभक संकलन करैत काल हमरा सोझमे पहिल प्रश्न ई नहि रहल जे एहिमे कतबा कथा समाहित करी। असल जिज्ञासा ई रहल जे एहिमे केहन कथाक समायोजन करी। कथा जीवन होइत अछि; अतः अनुभवसँ साकार भेल जीवनक प्रति दृष्टि दैत ओहन कथासभक संकलन कएल गेल अछि जाहिमे जीवनक महत्व आ जीवनक गरिमा केंद्रमे अछि।

एहि क्रममे जखन हम आगाँ बढ़लौं आ आदरणीय जगदीश प्रसाद मण्डलजीक किछु कथाक अवलोकन कएलौं, तखन अनायास हमरा सोझमे एक बिम्ब उपस्थित भेल, मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द। ई कोनो भावुक कथन वा क्षणिक प्रतिक्रिया नहि छल, वरण ठोस आधारक संग उभरल अवधारणा छल। मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द जीवनक ओ अवस्था छी जेतए मनुक्ख नित्य-प्रति अपने-आपकेँ परखैत अछि, अभावक भीतर, अपमानक सामना करैत, श्रमक बोझ उठबैत आ चुपचाप संघर्ष करैत।

मण्डलजीक कथासभमे जीवन कोनो असाधारण घटना बनि कऽ नहि उपस्थित होइत अछि। हुनकर रचनामे जीवन अपन सामान्य चालिमे चलैत देखाइत अछि, मुदा ओहि सामान्यतामे मानवीय गरिमा बचाकऽ रखबाक सतत प्रयास अंतर्निहित अछि। ई संकलन ओहि प्रयासक दस्तावेज छी जतए मनुक्ख अपन व्यवहार, धैर्य आ निर्णयसँ स्वयंकेँ व्यक्त करैत अछि, हारि-जीतक कोनो उद्घोष नहि करैत अछि।

एहि दृष्टिसँ ई पोथी मात्र कथा-संग्रह नहि अछि। ई जीवनक ओ दृष्टिक संकलन छी जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्दक रूपमे निरंतर विकसित होइत रहैत अछि।

एहि संग्रहक कथासभ एही अनुभव-संसारसँ जन्म लेने अछि। जाहि

कारणेँ ई कथा पढ़ैत काल पाठककेँ कोनो पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष नहि भेटैत अछि। पाठक जीवनक भीतर चलैत प्रक्रियाक साक्षी बनैत अछि।

एहि संग्रहमे कुल चौदहटा कथा शामिल अछि। एहन चयन हमरासँ सहजतासँ वा संयोगवश नहि भेल। कथा चुनैत काल सदिखन ई विचार हमरा मनमे रहल जे जीवनक विभिन्न पक्षकेँ कृत्रिम रूपेँ फराक-फराक खाँचामे बाँटि कए कथा रूपेँ प्रस्तुत नहि कएल जाए, कारण जीवन स्वयं कखनो एना खंडित रूपेँ अस्तित्वमे नहि रहैत अछि।

दलित जीवन, श्रम, स्त्री-संवेदना आ सामाजिक संघर्ष अलग-अलग शब्द जकाँ बुझाए सकैत अछि, मुदा वास्तविक जीवनानुभवमे ई सभ एक-दोसरामे घुलल-मिलल रहैत अछि। दलित जीवन श्रमसँ कटैत नहि अछि, श्रम स्त्रीक अनुभवसँ अलग नहि होइत अछि, आ सामाजिक संघर्ष सदिखन टकरावक प्रत्यक्ष रूपमे प्रकट हो से आवश्यक नहि।

कखनो ई संघर्ष बाहर देखाइत अछि, तँ कखनो मनक भीतर चुपचाप लेल गेल निर्णय जीवनक दिशा मोड़ि दैत अछि। एहि संग्रहक कथासभ एही सुक्ष्म आ परस्पर जुड़ल यथार्थकेँ अपन स्वाभाविक प्रवाहमे सामने आनैत अछि, जेतए जीवन एकसंग अनेक स्तरपर संचालित होइत देखाइत अछि।

एहि संग्रहक केन्द्रमे जे कथाकार छथि, हुनकर जीवन बुझब आवश्यक अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल बिहार राज्यक मधुबनी जिलाक लखनौर प्रखंड अन्तर्गत बेरमा गामक निवासी छथि। हुनकर जन्म 5 जुलाइ 1947 ई.मे भेल। हिन्दी आ राजनीतिशास्त्र सन विषयमे स्नातकोत्तर शिक्षा पूर्ण कएला बाद, हुनका सामने जीवनक बाट चुनबाक समय आएल।

सामान्यतः एहन समयमे बहुतो लोक नौकरी, शहर आ व्यक्तिगत सुविधा दिस बढ़ैत अछि। मुदा मण्डलजी अपन दोसरे दिशा चुनलनि। खेती-बारी हुनकर मुख्य पेशा बनल आ ओ गामेमे रहि कऽ जीवन-यापन कएलनि।

ई निर्णय साधारण नहि छल। ई जीवन-दृष्टिसँ जुड़ल, सोच-समझिकऽ लेल गेल निर्णय छल। खेती हुनका लेल केवल आजीविका मात्र नहि रहल; ई हुनका लेल समाजक आधार आ जीवनक केन्द्रीय सरोकार बनि गेल।

गाम-समाजक भीतर रहैत ओ रूढ़ि, अंधविश्वास, जातीय भेद आ सामन्ती

व्यवहार निरंतर देखैत रहलनि। ई सभ अनुभव हुनकर भीतर धीरे-धीरे जमा होइत गेल आ भीतर आगि जकाँ सुलगैत रहल। एहि क्रममे ओ सामाजिक संघर्षक बाट चुनलनि।

ई संघर्ष कोनो अल्पकालिक प्रक्रिया नहि रहल। लगभग पैंतीस वर्ष धरि ओ एहि मार्गपर डटल रहलनि। केस-मोकदमा, प्रशासनिक दबाव, जेल-यात्रा आ समाजक भीतर होइत टकराव, ई सभ अनुभव हुनकर जीवनक अभिन्न हिस्सा बनि गेल। ई सभ बाहरसँ देखल घटना मात्र नहि, बल्कि जिअल-भोगल जीवनक यथार्थ रहल।

एहि दीर्घ सामाजिक संघर्षक उपरान्त साहित्य-लेखन दिस मण्डलजीक रुझान विकसित भेलनि। नियमित लेखन 2000 ई. क बाद प्रारम्भ कएलनि। मण्डलजी पहिने जीवन जिएलनि, समाजकेँ लगसँ देखलखिन, खेतमे श्रम केलाह आ साधारण लोकक पीड़ा बुझलनि। तकर बाद लेखन आरम्भ केलनि। एहि कारणेँ हुनकर रचनामे कृत्रिमता कम आ अनुभूतिक गहराइ अधिक देखाइत अछि। हुनकर कथा ऊँच मंचसँ देल गेल उपदेश जकाँ नहि लगैत अछि; ओ गामक आँगनसँ उठल स्वर जकाँ प्रतीत होइत अछि।

आइ हुनकर लेखन-विस्तार अत्यन्त व्यापक अछि। कथा, उपन्यास, नाटक, कविता, बाल-साहित्य, आत्मकथात्मक गद्य आ आलोचनात्मक लेखन सभ क्षेत्रमे हुनकर सक्रियता देखल जाइत अछि। कथाक संख्या हजारसँ अधिक अछि। सभ विधासभ मिला कऽ रचनाक कुल संख्या पंद्रह डेढ़ हजारसँ ऊपर पहुँचि चुकल छनि। ई आँकड़ा निश्चयहि ध्यान आकर्षित करैत अछि। मुदा एहि आँकड़ासँ बेसी महत्व हुनकर निरन्तरता, अनुशासन आ नियमित श्रम रखैत अछि। हुनकर लेखन दीर्घकालीन साधनाक फल अछि।

एहि संग्रहक चयन करैत काल हमरा लेल मुख्य प्रश्न ई रहल जे मण्डलजीक विशाल कथा-जगतसँ कोन कथासभ पाठकक सामने एकसंग रखल जाए। चयनक आधार कथा-सार नहि रहल, बल्कि मनुक्ख आ मनुक्खक जीवनक स्पन्दन रहल। एहि कथासभमे श्रम अपन पूर्ण थकानक संग उपस्थित अछि। स्त्री-पात्र दया वा करुणाक प्रतीक बनि कऽ सामने नहि अबैत अछि; ओ विवेक, धैर्य आ आत्मसम्मानक प्रतिनिधि रूपमे उभरैत अछि। सामाजिक संघर्ष एतए जीवनक भीतर बनैत मौन निर्णयक रूपमे प्रकट होइत अछि, जे धीरे-धीरे

जीवनक दिशा बदलैत अछि।

एहि संग्रहक कथासभ मात्र एक कालखण्डक उपज नहि अछि। ई कथासभ विभिन्न कालखंड आ विभिन्न कथा-संग्रहसँ चुनि कऽ लेल गेल अछि। ई चयन गामक जिनगी (2009)सँ लऽ कऽ विखण्डण (2025) धरि प्रकाशित कथा-संग्रहसभपर विस्तार पाबैत अछि। 'गामक जिनगी' जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पहिल प्रकाशित संग्रह अछि। उपन्यास विधामे हुनकर पहिल कृति मौलाएल गाछक फूल छिऐन, जकर लेखन-वर्ष 2004 अछि। मण्डलजी 2000 इस्वीसँ नियमित रूपेँ लेखन शुरू केलनि आ अद्यतन लिखैत रहल छथि। शुरुआती समयमे ओ अपन रचनाक अन्तमे लेखन-तिथि अंकित नहि करैत छलाह; मुदा 2014 इस्वीसँ ई अभ्यास नियमित रूपेँ अपनाओल गेल।

एहि संग्रहमे शामिल कथासभ अपन-अपन लेखन-काल, शब्द-संख्या आ मूल संग्रहक आधारपर मण्डलजीक दीर्घ रचनात्मक विस्तार प्रस्तुत करैत अछि। ठेलाबला (2572 शब्द) गामक जिनगी 2009 सँ लेल गेल अछि। बपौती सम्पैत (2350 शब्द) अर्द्धांगिनी 2013 सँ अछि। रेहना चाची (1307 शब्द, 9 जुलाइ 2014) लजबिजीसँ। गुड़ा-खुद्दीक रोटी (2443 शब्द, 8 जुलाइ 2015) अपन नामक संग्रहसँ। उजगी (1079 शब्द, 9 मार्च 2016) शुभचिन्तकसँ। बेटीक कुभेला (2767 शब्द, 31 मार्च 2017) बेटीक पैरुखसँ। मानसरोवरक यात्रा (2576 शब्द, 31 जुलाइ 2018) गपक पियाहुल लोकसँ। बुढ़ापा (2122 शब्द, 10 नवम्बर 2019) पसेनाक मोलसँ। परिपक्व निरलज (2232 शब्द, 20 अप्रैल 2020) रहै जोकर परिवारसँ। केकरो भरोस (2237 शब्द, 31 अगस्त 2021) नीक ठकान ठकेलौंसँ। बुलन्दी (1329 शब्द, 19 अगस्त 2022) अप्पन सातीसँ। दसअना-छअना (1243 शब्द, 7 जून 2023) टकुआटानसँ। माइक सोग (2086 शब्द, 23 अगस्त 2024) सहोदर भायसँ। आ गाम भगा देलक (1898 शब्द, 22 अगस्त 2025) सत्यमेव जयतेसँ लेल गेल अछि।

एहि एक संग्रहमे अलग-अलग वर्ष, अलग-अलग अनुभव आ अलग-अलग सामाजिक परिस्थितिसँ उपजल कथासभ एकसंग आएल अछि। ई संकलन मण्डलजीक लेखनक निरन्तरता आ समयक संग विकसित होइत संवेदनशील दृष्टिक ठोस प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

एहि पोथीसँ हमर व्यक्तिगत यात्रा सेहो अन्तरंग रूपेँ जुड़ल अछि। एम.ए. कएलाक बाद, जखन हम पी-एच.डी. लेल नामांकन करौलहुँ, तखन संदर्भ-पोथी खोजबाक क्रममे हम निर्मली पल्लवी प्रकाशन पहुँचलहुँ। हमर पति सेहो संग छलथि। ओतए गेलाप बुझि पड़ल जे ई प्रकाशन मात्र छापाखाना नहि अछि, बल्कि साहित्यक एक जीवित केन्द्र अछि।

ओही क्रममे हम बेरमा गाम सेहो पहुँचलहुँ आ ओतए कथाकार (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)सँ भेँट भेल। हुनका संग ई भेँट केवल औपचारिक परिचय धरि सीमित नहि रहल। कथा आ कथाकारक जीवन एक-दोसरासँ अलग कए बुझब असंभव लागल। ओहि दिनक बातचीत, हुनकर सहजता आ हुनक दृढ़ता एहि संग्रहक चयन-प्रक्रियामे भीतर धरि समाएल रहल।

मण्डलजीक भाषा लोक-बोलीसँ उपजल अछि। संवाद जीवनक बीचसँ आएल अछि। जेतए शब्द थाकि जाइत अछि, ओतए मौन अपन अर्थ स्वयं कहि जाइत अछि। एहि शैलीमे दलित जीवन, श्रम, स्त्री-संवेदना आ सामाजिक संघर्ष सहज आ स्वाभाविक रूपेँ प्रकट होइत अछि। भारी शब्दावलीक आवश्यकता कतहु महसूस नहि होइत अछि। साधारण शब्द आ साधारण वाक्यक माध्यमेँ गहींर भाव पाठक धरि पहुँचि जाइत अछि।

एहि संग्रहक कथासभ केवल मनोरंजनक साधन बनबाक लेल नहि लिखल गेल अछि। ई कथासभ जीवनक भीतर ठाढ़ कएल गेल प्रश्न अछि। पाठक जखन ठेलाबला पढ़ैत छथि, तखन श्रमक अर्थ बदलैत देखैत छथि। रेहना चाची पढ़ैत काल बुढ़ापाक एकाकीपन आ समाजक दूरी स्पष्ट होइत अछि। गुड़ा-खुद्दीक रोटी आ बेटीक कुभेला पढ़ैत समय स्त्रीक भीतर जमा धैर्य आ पीड़ा सामने अबैत अछि। गाम भगा देलक पढ़ैत काल विस्थापनक वेदना आ समाजक कठोर चेहरा स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

ई पोथी पाठकक हाथमे दैत काल हमर एक गोट अपेक्षा अछि। ई कथासभ तटस्थ मनसँ पढ़ल जाए। जँ कतहु चुभन हो, तँ ओ चुभन कथा-शक्तिक संकेत बुझल जाए। मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द कठिन समयमे एक-दोसरक संग देबाक भाव पैदा करैत अछि। जँ ई जिद्द बचल रहल, तँ समाजक भीतर मानवीय आलोक सेहो बचल रहत।

भूमिका हमरा बुझने अपन बात कहि चुकल अछि। आब जखन पाठक

पन्ना पलटैत छथि, तखन हुनका सामने कथाक एकटा संसार ठाढ़ होइत अछि। ई संसार एक्के रंगक नहि अछि, कतहु ठेला खींचैत देहक थकान देखबैत अछि, कतहु बरखी-भोजक भीतर छिपल जिम्मेदारी, कतहु वृद्धावस्थाक एकाकीपन, कतहु मानसिक असंतुलनक मौन पीड़ा, कतहु स्त्रीक धैर्य आ आत्मसम्मान, तँ कतहु विस्थापनक दुर्दम्य पीड़ा सेहो देखबैत अछि।

मुदा एतेक भिन्न अनुभवक बीच एकटा बिम्ब निरंतर धड़कैत रहैत अछि, मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द। ई बिम्ब समुच्चा कथासभक भीतर बहैत मूल धारा थिक। एही धारापर ध्यान देलासँ विश्लेषणक क्रम टूटैत नहि अछि, बल्कि उल्टे कथा-दर-कथा एकटा सतत यात्रा जकाँ जुड़ैत चलि जाइत अछि।

एही कारणेँ आगूक पन्नासभमे हम कथासभक सार कहबाक लेल प्रवेश नहि करैत छी। हम ओहि क्षणकेँ चिन्हबाक लेल आगू बढ़ैत छी जेतए पात्र अपन परिस्थितिसँ लड़ैत, ओकरा बुझैत, सहैत, आ कखनो-कखनो मौन रहितहुँ निर्णय लैत अपन मनुष्यता बचबैत अछि। एही दृष्टिसँ आब प्रत्येक कथाक विवेचन आरम्भ कए रहल छी-

'ठेलाबला' कथा भोला नामक एक श्रमिकक जीवन-संघर्षक सघन चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ओ बहुत छोट उमेरसँ अभाव, मारि, अपमान आ असुरक्षाक वातावरणमे पल्लवित होइत अछि। माएक मृत्यु भऽ जाइत अछि आ सतमाए घरमे अबैत छथि। गामक लोक तरह-तरहक अटकल लगबैत अछि, मुदा भोला ओहि वातावरणमे डटल रहैत अछि।

धीरे-धीरे ओ नाच पार्टीक रंगीन संसारमे फँसि जाइत अछि। ओ बीड़ी पीबैत अछि, चोरि करैत अछि आ बेर-बेर मारि खाइत अछि। आखिरकार ओ एहि दलदलसँ बाहर निकलि अबैत अछि। करिया काका ओकर पीड़ा बुझैत छथि आ ओकरा सहारा दैत छथि। भोला विवाह करैत अछि, मुदा समाज फेर ओकर जीवन तोड़ि दैत छैक। कनियाँ ओकरा छोड़ि दैत अछि। भोला भीतरसँ टूटि जाइत अछि आ गाम छोड़ि बाहर चलि जाइत अछि।

कलकत्ता पहुँचलापर भोला एक अनजान शहरमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि। भाषा आ रस्ता दुनू ओकरा लेल अपरिचित रहैत अछि। भूख लागल रहैत अछि, मुदा ओ हिम्मत नहि हारैत अछि। ओ अपन चारू कात देखैत अछि आ ठेला खींचनिहार लोक ओकरा अपन जकाँ बुझाइत छथि। ओ एक गोट ठेलाबलासँ

गप्प करैत अछि, जे ओकरा धरमशालामे लऽ जाइत अछि। ओहि ठाम भोला अपनापन अनुभव करैत अछि। दोसर ठेलाबलासभक संग ओकर मेल-जोल बनैत अछि। चाह, पान, बातचीत आ संबंधक माध्यमसँ एक नव समुदाय बनैत अछि। भोला पहिल बेर एहन सिनेह आ स्वीकार्यता अनुभव करैत अछि। ओ ठेला खींचए लगैत अछि। श्रम ओकरा जीवनक अर्थ दैत अछि।

समय बीतैत अछि। भोला फेर गाम अबैत अछि। ओ घरक लोकक लेल कपड़ा आ चकलेट आनैत अछि। ओकर जीवन धीरे-धीरे फेरसँ सम्हरैत छइ। दोसर विवाह होइत छइ। संतान होइत छइ। भोला ठेला खींचि कऽ कमाइत अछि आ ओहि कमाइसँ परिवार चलबैत अछि। पत्नीकेँ ऑपरेशन करबैत अछि आ बेटा-दुनूकेँ पढ़बैत अछि। भोला मानैत अछि जे पढ़ाइ परिवारक भविष्य छी। ओ अपन श्रम बढ़बैत अछि, मुदा बेटाक पढ़ाइ कखनो नहि छोड़ैत अछि।

कथाक अन्तमे बेटा रतन आ लालक संवाद अत्यन्त अर्थपूर्ण बनि जाइत अछि। बेटा अपन पिताक ठेला देखैत अछि, मेहनतक मूल्य बुझैत अछि आ ओहि पेशापर कखनो लाज नहि करैत अछि। ओ ज्वाइनिंगसँ पहिने पिताकेँ घर बजबैत अछि आ हुनकर गोड़ लागए चाहैत अछि। एहि दृश्यमे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द स्पष्ट रूपेँ सामने अबैत अछि। भोला ठेला खींचैत अछि, मुदा आत्मसम्मानकेँ कखनो नहि छोड़ैत अछि। बेटा ठेला खींचबाक परंपरा नहि, बल्कि श्रमक गरिमा अगिला पीढ़ीमे उतारि दैत अछि। यैह जिद्द कथाक मेरुदण्ड थिक।

'बपौती सम्पैत' कथा गुलटेन नामक गामक एक कारीगर आ व्यवहारिक मनुक्खक जीवन-दृष्टिक प्रस्तुति अछि। ई कथा धन-सम्पतिपर केन्द्रित नहि अछि, बल्कि अनुभव, श्रम, नैतिकता आ सामाजिक उत्तरदायित्वक विरासतपर आधारित अछि। गुलटेन अपन जीवनमे बहुत बेसी भौतिक वस्तु जमा नहि करैत अछि, मुदा जे किछु पबैत अछि, ओकर सही उपयोग करब जनैत अछि। ओ अपन बाप-दादासँ पाओल लूरि, सोच आ व्यवहारकेँ जीवनक असली पूँजी मानैत अछि।

कथाक आरम्भ पितृपक्ष, मातृनौमी, बरखी आ भोज जकाँ धार्मिक-सामाजिक परम्परामे होइत अछि। एहि अवसरपर गुलटेन अपन भूमिका सहजतासँ निमाहैत अछि। ओ गलती करैत अछि, ओकरा स्वीकार करैत अछि, मुदा जिम्मेदारीसँ कखनो पाछाँ नहि हटैत अछि। बरखी करबाक निर्णय ओकर

संस्कारक परिपक्वताकेँ प्रकट करैत अछि। ओ जानैत अछि जे समाजमे मान-सम्मान श्रम आ व्यवहारसँ अर्जित होइत अछि।

गुलटेन जखन अपन बापक स्मृति करैत अछि, तखन ओकर विचार कथाकेँ अर्थपूर्ण विस्तार दैत अछि। ओकर बाप औंठा-निशान दैत छलाह, मुदा जीवनक सभ काजक ठोस आ सटीक हिसाब रखैत छलाह। खेती, घरहट, गाछ-बाँस, गीत-बाजा आ मेला-तमासाक अनुभव गुलटेनक भीतर संस्कार बनि कए बसि गेल अछि। ओ पढ़ल-लिखल नहि अछि, मुदा जीवनक व्यवहारिक बुद्धि ओकरा समाजमे उपयोगी आ भरोसेमंद बनौने अछि।

गुलटेनक बपौती सम्पत्ति खेत, घर, पैसा वा जेवर नहि अछि। ओकर असली सम्पति लूरि थिक, काज करबाक तागत थिक आ समाजक संग ठाढ़ रहबाक आदत। ओ अनाड़ी लोककेँ काज सिखबैत अछि। बीमार लोककेँ डॉक्टर लग लऽ जाइत अछि। संकटमे लोकक संग ठाढ़ रहैत अछि। गुलटेन मानैत अछि जे समाज आपसीए सहारे चलैत अछि।

बरखी भोजक दिन पूरा गाम जुटैत अछि। बेटी, पत्नी, पड़ोसी आ सम्बन्धी सभक बीच कहासुनी होइत अछि। तैयो काज रुकैत नहि। गुलटेन चुपचाप सभ बात सुनैत अछि आ परिस्थिति सम्हारैत अछि। अन्ततः भोज सफल होइत छै आ एक प्रकारक संतोष उत्पन्न होइत अछि। गुलटेन अपन पिताकेँ मने-मने गोड़ लगैत अछि। एहिठाम मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द स्पष्ट रूपेँ देखाइत अछि। गुलटेन अपन विरासत बेचैत नहि अछि, बल्कि ओकरा जीबैत अछि। श्रम, मर्यादा आ सामाजिक जिम्मेदारीक आधारपर ओ अपन मनुष्यताकेँ थामने रहैत अछि।

'रेहना चाची' कथा सामाजिक विस्थापन आ टूटैत मानवीय सम्बन्धक पीड़ादायक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ई कथा समयक मारि झेलैत एक वृद्ध स्त्रीक जीवनानुभवकेँ उजागर करैत अछि। रेहना चाची अपन जीवनमे मेहनती आ सक्रिय लोक रहलीह। ओ गाम-गाम घुमिकय व्यापार करैत रहलीह, आ समाजमे अपन विशेष पहचान बनौने रहलीह।

समय बदलैत अछि। रास्ता असुरक्षित भऽ जाइत अछि। छीना-झपटी बढ़ैत अछि, जाहि कारणेँ हुनकर कारोबार बंद भऽ जाइत अछि। अन्ततः, हुनका गाम छोड़बाक विवशता होइत अछि।

विस्थापन देहक संग-संग मनोस्थितिपर सेहो तीव्र प्रभाव छोड़ैत अछि। रेहना चाचीक शरीर थाकल अछि, आ हुनकर मन अतीतक स्मृतिमे अटकल रहल अछि। ओ अपन पुरान गाम, अपन काज आ अपन सम्मानक स्मृतिमे जीबैत छथि। वर्तमानमे ओ अपनाकेँ अनचिन्हार अनुभव करैत छथि।

कोरामे प्रपौत्र छनि, मुदा बेटा-पोता संग नहि छथि। परिवार होइतहु, ओहि सुरक्षा-बोधक अनुभूति हुनका नहि होइत छनि। समाज आब हुनका ओहि भूमिकामे स्वीकार नहि करैत अछि, जे भूमिका ओ पहिने निरंतर निभबैत रहथिन।

किशुन भाय कथामे एक संवेदनशील पात्र छथि। ओ अतीतसँ पूर्णत: जुड़ल छथि। बचपनक अपनापन एखनहुँ हुनक मोनमे जीवित अछि। रेहना चाचीक अवस्था देखिकऽ समयक असर स्पष्ट बुझाइत अछि। ओ सहायता करए चाहैत छथि, मुदा मनमे संकोच उठैत छनि। सामाजिक रीति-नीति आ व्यवहारिक सिमान हुनकर डेगकेँ रोकि दैत अछि। ओ भीतरहि भीतर द्वंद्वक शिकार छथि।

कथा स्मृति आ यथार्थक टकराव प्रस्तुत करैत अछि। अतीत प्रकाशसँ भरल अछि, वर्तमान प्रश्नसँ घेराइल अछि, आ भविष्य अनिश्चिततामे डूमल अछि। वृद्धावस्था मनुक्खकेँ असहाय बना दैत अछि, आ विस्थापन व्यक्तिकेँ समाजसँ अलग कए दैत अछि।

कथाकारक उद्देश्य पाठकमे सामाजिक जिम्मेदारीक चेतना जगाबऽ अछि। वृद्ध आ विस्थापित लोकक जीवनपर गम्भीरतासँ सोचबाक आवश्यकता अछि। सम्बन्ध केवल स्मृतिसँ नहि, व्यवहारसँ टिकैत अछि। मनुष्यता संवेदनासँ जीवित रहैत अछि, आ ई कथा ओहि संवेदनाकेँ जागृत करैत अछि; अक्षरस: मनुक्ख बनल रहबाक जिद्दकेँ प्रतिपादित करैत अछि।

'गुड़ा-खुद्दीक रोटी' कथा गामक चौकसँ शुरू होइत अछि। भोरक हल्ला सामान्य नहि अछि। लोकक बोल तीख अछि। मोहनपुरवाली आ लालपुरवाली सन स्त्रीगण बीमार सकुनी दादीक नामपर हँसी करैत छथि। सुदामा ओकरा रोकैत छथि। सुदामाक कहब सोझ अछि जे जँ दादीकेँ जनैत छी, तखन अपमान किएक?

एतए कथा अपन मूल स्वर पकड़ैत अछि। सात दिनसँ बीमार छथि।

हुनकर मुहँपर एक्के वाक्य अटकल अछि, गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब। लोक एहि बातकेँ तमाशा बना दैत अछि। कियो हँसैत अछि, कियो गारि पढ़ैत अछि, कियो दादीक इच्छाकेँ सनक कहैत अछि। ई गामक मनोवृत्तिक सजीव चित्र अछि, जेतए बूढ़-बुजुर्गक इच्छाकेँ सम्मान नहि देल जाइत अछि।

कथाकार बीचमे प्रवेश करैत छथि। ओ हल्लाक मर्म बुझए चाहैत छथि। ओ चौकक स्वभाव स्पष्ट करैत छथि। चौक गप करबाक जगह छी, आरोप लगबाक जगह छी, निर्णय लेबाक जगह छी। चौक समाजक चेहरा सेहो छी। कथा चौककेँ ऐना बनबैत अछि।

झबड़ी दीदी कथाकारकेँ सटीक सूचना दैत छथि। हुनकर बातमे समाजक तानाबाना साफ झलकैत अछि। ओ मोहनपुरवालीक गलती मानैत छथि, मुदा समाजक बन्हन टूटि नहि जाए, से चिन्ता करैत छथि। एहि ठाम झबड़ी दीदी सामाजिक विवेकक प्रतीक बनिकऽ उभरैत छथि। ओ बुझैत छथि जे झगड़ा कतए तक जा सकैत अछि। ओ गामक भाषा आ नीति दुनूकेँ जानैत छथि।

सकुनी दादीक जीवन-रेखा कथाक मेरुदण्ड छी। दादी मात्र बूढ़ स्त्री नहि छथि। ओ श्रमक इतिहास छथि। ओ परिवर्तनक अनुभव छथि। ओ अपन सासुरमे खेती-बाड़ी, लूरि-बुधिसँ सभसँ लड़ैत आगू बढ़ल छथि। ओ घरक रूढ़ि देखलनि, विरोध झेललनि, आ अपन परिवारकेँ श्रम दिस मोड़लनि। बाड़ीमे छलांग देब एक प्रतीक छी। ई साहस छी। ई जिद्द छी।

एहि जिद्दक संग दादीक एकटा बड़का गुण जुड़ल अछि। ओ काज सिखबैत छथि। ओ परिवारक काजक लूरि दैत छथि। ओ परिवारमे पुरुषक निष्क्रिय भूमिकापर प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। ओ परिवारमे कर्मक मर्यादा उठबैत छथि। ई "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द" केर मूल अर्थ थिक। कठिन परिस्थितिमे सेहो मनुष्यता बनौने राखब, काजक प्रति सम्मान बनौने राखब। पेट, प्रतिष्ठा आ परम्पराक बीच सन्तुलन बनौने राखब- ई सभ "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द"केँ प्रमाणित करैत अछि।

पतिक मृत्यु एहि कथाक केंद्रबिंदु छी। पचास वर्षक उमेरमे पति चलि गेलखिन। दादी एकाएक जीवनक मंचपर असगरे ठाढ़ भेली। हुनका चारि बेटी आ एक बेटा छनि। समुच्चा परिवार हुनक जिम्मेदारी बनि गेल। इलाजक दीर्घ क्रम परिवारकेँ आर्थिक आ मानसिक रूपेँ भीतर धरि तोड़ि देलक।

समाज विधवाक जीवनपर सहजहि कलंक जोड़ैत अछि, मुदा दादी ओहि दबावमे टूटैत नहि छथि। ओ परिवारकेँ सम्हारैत छथि, घरकेँ बसबैत छथि आ पीढ़ी दर पीढ़ी ओकर आधार ठाढ़ करैत छथि। ई दादीक दीर्घ संघर्ष थिक। ई संघर्ष कोनो घोषणा नहि, बल्कि रोजमर्राक जीवन थिक।

आब कथा आधुनिक समय दिस मुड़ैत अछि। पोता सभ बाहर छथि, गौहाटी, बंगलौर, दिल्ली। एक भाँइ घरमे टिकल रहल छथि। सेवा, पाप, मुक्ति, आ एकसंग रहबाक विचार दादीक जीवनकेँ छूइत अछि। ई पीढ़ी सभक द्वन्द्व अछि। परदेश जरूरी भऽ गेल अछि। घरक खालीपन बढ़ि गेल अछि। वृद्धक सेवा प्रश्न बनि गेल अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे दादीक "गुड़ा-खुद्दीक रोटी" क आग्रह सामने अबैत अछि। ई मात्र भोजनक इच्छा नहि, स्मृतिक अंतिम कड़ी थिक। ई नैहरक समयक स्मृति थिक। धानक ढेकी, गुड़ा, खुद्दी, ओहि श्रमक स्वाद। ई स्वाद दादीक जीवनीपर लागल मुहर जकाँ अछि। दादी कहैत छथि, आब ने ओ देवी आ ओ कराह, मुदा हीक ओही सीकपर टाँगल अछि। ई वाक्य बहुत भारी अछि। एतए दादी कहि रहल छथि जे समय बदलि गेल, मुदा मन नहि बदलल।

गामक लोक एतए चूक करैत अछि। लोक दादीक इच्छा बुझबाक प्रयास नहि करैत। लोक हँसी उड़बैत अछि। ई हँसी क्रूर बनि जाइत अछि। सुदामा जकाँ प्रतिरोधक स्वर कम अछि। झबड़ी दीदी जकाँ विवेक कम देखाइत अछि। कथा एहि समाजपर प्रश्न उठबैत अछि। बूढ़क बात कहिया सुनब? बूढ़क जीवनक मोल कहिया बुझब?

"मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द" एहि कथामे दू ठाम देखाइत अछि। पहिल, सकुनी दादीक संपूर्ण जीवन, जेतए श्रम, साहस, परिवर्तन आ परिवार-निर्माणक यात्रा अछि। दोसर, कथाकारक व्यवहार, जे अपमानक हल्ला सुनिकए तमाशा नहि बनैत छथि। ओ बुझए लेल जाइत छथि। दादीक पएर छुबैत छथि। ओ दादीक संग गप्प करैत छथि। ओ रोटी बनबाक विधि पुछैत छथि। ई संवेदना मनुक्ख बनल रहबाक पहिल शर्त थिक।

कथाक भाषा गामक जीवंत बोलीमे अछि। रूपक सभ ठोस, स्पष्ट आ अनुभवसँ जुड़ल अछि। ढेकी, गुड़ा, खुद्दी, बाड़ी, चौमास, चौक, सीक आ हीक सभ शब्द मात्र वस्तुकेँ संकेत नहि करैत अछि। ई शब्द सभ संस्कृति आ श्रमक

प्रतीक रूपमे देखल जाइत अछि। कथा पाठककेँ ओहिठाम लऽ जाइत अछि, जेतए हमसभ सभकिछु बिसरि जाइ छी। बूढ़क इच्छा मजाक नहि होइत अछि। बूढ़क स्मृति घरक धरोहर होइत अछि। जे घर धरोहरकेँ सम्मान नहि दैत, ओ घर भीतरसँ खोखला भऽ जाएत, प्रस्तुत कथा ईहो संदेश दैत अछि।

पात्रसभ अपन-अपन भूमिका निभबैत छथि। मोहनपुरवाली आ लालपुरवाली समाजक कठोर आ असंवेदनशील चेहरा बनि उभरैत छथि। सुदामा प्रतिरोधक छोट स्वर थिक। झबड़ी दीदी सामाजिक विवेकक आवाज थिक। सकुनी दादी श्रम-संस्कृतिक प्रतिमा बनिकऽ उभरैत छथि। कथाकार संवेदना आ जिज्ञासाक आँखि थिक। ई सभ पात्र मिलिकऽ कथाकेँ एकटा महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्नक दिग्दर्शन करबैत अछि।

'उजगी' कथा मानसिक असंतुलन आ आधुनिक जीवनक दबावक सूक्ष्म अभिव्यक्ति करैत अछि। रमाकान्त कथा-केंद्रमे छथि। ओ पढ़ल-लिखल छथि, मुदा अपन जीवनक ठोस दिशा तय नहि कऽ सकल छथि। नीनक उड़ान, भीतरक बेचैनी, आ मौन पीड़ा हुनकर मानसिक स्थितिकेँ उजागर करैत अछि। रमाकान्त व्यक्तिगत पात्र होइतहुँ सामूहिक यथार्थक प्रतीक बनि जाइत छथि।

कथाकार स्वयं रमाकान्तक संगी छथि। ओ शिक्षित वर्गक प्रतिनिधित्व करैत छथि, जे तर्कसंगत सोच रखैत अछि, मुदा स्वयं जीवनक प्रवाहमे बहि रहल छथि। कथाकार संवेदनशील छथि, निर्णय लेबय चाहैत छथि, आ स्थितिक गंभीरताकेँ स्पष्ट रूपेँ बुझैत छथि। कथामे ओ घर आ बाहरक दुनिया, रोगी आ डॉक्टर, भावना आ व्यवहारक बीच एक महत्वपूर्ण सेतु जकाँ काज करैत छथि; जे एहि कथाकेँ मानवीय गहिराई प्रदान करैत छथि। ओ वैधव्य जीवन जी रहल छथि, मुदा भीतरसँ मजबूत छथि। रमाकान्त लेल ओ माए जकाँ छथि। हुनकर चुप्पी, डर, आ व्यग्रता मातृत्वक सहज अभिव्यक्ति थिक। ओ अपन दुःख शब्दमे नहि, व्यवहारमे प्रकट करैत छथि। चाची एहिसँ देखबैत छथि जे रोग परिवारक भीतर एकटा सामूहिक बोझ बनि जाइत अछि।

डॉक्टर साहेब आधुनिक विवेकक प्रतीक छथि। ओ रोगकेँ दैहिक आ मानसिक दुनू रूपमे देखैत छथि। हुनकर कथन कथाकेँ निष्कर्ष दिस आगू लऽ जाइत अछि। ओ कहैत छथि जे दवाइक संग जीवनशैलीक बदलाव सेहो जरूरी अछि। डॉक्टर साहेब समाधान प्रस्तुत नहि करैत छथि, बल्कि समझदारीक मार्ग

सुझबैत छथि।

कथाकार देखबैत छथि जे डिग्री, पढ़ाइ, आ सामाजिक पहचान मानसिक संतुलन सुनिश्चित नहि करैत अछि। जखन मनुष्यक भीतर थकान जमा होइत अछि, तखन 'उजगी' जकाँ अवस्था जन्म लैत अछि। कथा पाठककेँ संवेदनशील बनेबाक आग्रह करैत अछि आ ई सिखबैत अछि जे मानसिक स्वास्थ्य पारिवारिक आ सामाजिक जिम्मेदारी थिक।

बेटीक कुभेला: एहि कथामे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द अत्यन्त संयत, शान्त, मुदा सशक्त रूपमे सामने अबैत अछि। कथा बुधनी काकीक मृत्युसँ शुरू होइत अछि, मुदा केन्द्रमे मृत्यु नहि अछि। केन्द्रमे ओ परिस्थिति अछि जाहिमे बाँचल लोकक नैतिक परीक्षा होइत अछि।

दुखिया काका पत्नी गुमैलापर समाजक परम्परा अनुरूप क्रिया-कर्म पूरा करैत छथि। ओ एतेक तत्पर छथि जे शोक, सिनेह आ संवेदनाक स्थानपर विधि-विधान हावी देखाइत अछि। एहि ठाम कथा एक तीख प्रश्न उठबैत अछि। की परम्परा निभाएब मनुक्ख बनबाक प्रमाण थिक, वा ई मनुष्यताक विस्मृति बनि जाइत अछि?

सबुरिया, पाँच वर्षक बेटी, कथाक मौन केन्द्र बनि जाइत अछि। ओ माइक मुँह लग बैसिकऽ नोर बहबैत अछि, मुदा ओकर पीड़ापर केकरो ध्यान नहि जाइत अछि। ओ दृश्य पाठककेँ भीतर तक झकझोरि दैत अछि। एहि ठाम मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द एहि बच्चीक अस्तित्व आ गरिमाक प्रश्न बनिकऽ उठैत अछि।

कथाकार बुझैत छथि जे जँ अग्नि देबाक अधिकार बेटीकेँ देल जाइत, तँ ई अधिक न्यायपूर्ण होइत। मुदा समाजक डर आ रूढ़ि एतेक मजबूत अछि जे ओहि दिशामे सोचबो अस्वीकार्य मानल जाइत अछि।

जीवन काकाक संवाद कथामे सामाजिक यथार्थक परत खोलैत अछि। बिरखौ, पंचदान आ कुरसी जकाँ शब्द परम्परा आ वर्गभेदक प्रतीक बनि जाइत अछि। कथा देखबैत अछि जे मृत्यु समान होइतहुँ, संस्कार आ शोकक प्रदर्शन समान नहि होइत अछि। जिनका सामर्थ्य अछि, हुनकर शोकक आयोजन बड़का होइत अछि। जे असमर्थ छथि, हुनकर दुख सीमित रूपमे देखाओल जाइत अछि। एहि ठाम मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द बराबरीक सवालक संग जुड़ि जाइत अछि।

कथाक सभसँ सशक्त क्षण अन्तमे अबैत अछि, जखन दुखिया काका दोसर विवाह नहि करबाक निर्णय लैत छथि। ओ कहैत छथि जे दोसर विवाह करब तँ बेटीपर कुभेला होएत। ई निर्णय करुणा, जिम्मेदारी आ आत्मबोधसँ उपजल अछि। ओ वंशक तर्क अस्वीकार करैत छथि आ जीवनक चैनकेँ प्रमुखता दैत छथि। एहि ठाम दुखिया काका पितृसत्तात्मक सोचसँ हटिकऽ मनुक्ख बनबाक निर्णय लैत छथि।

कथा कोनो घोषणा नहि करैत अछि, कोनो समाधान नहि थोपैत अछि। ई शान्त स्वरमे देखबैत अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द अक्सर चुप्प निर्णयमे प्रकट होइत अछि। असुविधाजनक सत्यकेँ स्वीकार करबाक साहसमे, आ कमजोरक संग चुपचाप ठाढ़ रहब सेहो मनुष्यता होइत अछि।

एही कारणेँ 'बेटीक कुभेला' एकटा मानवीय गरिमाक सशक्त आख्यान बनि जाइत अछि, जे पाठकक सोचकेँ भीतरसँ हिला दैत अछि।

'मानसरोवरक यात्रा' कथामे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द अपन सभसँ रोचक रूपमे वैज्ञानिक जीतनलाल भाय आ जीवनलाल भायक संवादमे प्रकट होइत अछि। कथा बाहरी यात्रापर कम, भीतरक अस्थिरतापर अधिक केन्द्रित अछि।

जीतनलाल भाय, भाभा अनुसंधान संस्थानसँ सेवा-निवृत्त भऽ गाम अबैत छथि। ओतय आबिकऽ हुनक भीतर एकटा नव रिक्तता जन्म लैत अछि। काज छूटलाक बाद मनक ओज शरीरक ओजसँ मेल नहि खाइत अछि। एही रिक्ततामे मानसरोवर हुनका लेल केवल भौगोलिक गन्तव्य मात्र नहि रहि जाइत अछि। ई स्थान हुनकर अपन अस्तित्वक अर्थ खोजबाक एक उपाय बनि जाइत अछि।

दोसरे दिस छथि जीवनलाल भाय। ओ गामक संस्कृत महाविद्यालयमे नोकरी करैत छथि। हुनकर जीवन ढीला रूटीनसँ भरल अछि, मुदा ओ व्यावहारिक जिम्मेदारीसँ गहींर रूपे जुड़ल छथि। हुनका लेल मानसरोवर आध्यात्मिक महत्त्वक संग-संग दुर्गमता, उमेरक भार आ घरक सच्चाइकेँ संकेत करैत अछि। हुनकर प्रतिरोध सीधा टकरावमे नहि प्रकट होइत अछि। ई बहाना, भावना आ लोकाचारक माध्यमसँ व्यक्त होइत अछि, जे चतुर समझदारीक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

आमक कलम, गाछसँ लगाव, चोर-चहारक भय- ई सभ जीवनलाल भायक अपन तरहक मनुष्यता बचेबाक तरीका बनि जाइत अछि। ओ अपन जेठ भायक सम्मान बरकरार रखैत अपन सीमा सुरक्षित रखए चाहैत छथि।

कथाक केन्द्रमे कोनो ठोस संघर्ष नहि अछि। केंद्रमे दू तरहक मनुष्यता अछि। जीतनलाल भाय विज्ञानक लोक होइतहुँ सेवा-निवृत्तिक बाद अध्यात्म दिस झुकैत छथि, मुदा हुनकर झुकावमे एकटा भीतरसँ उपजल घबराहट छिपल अछि। ओ रिक्तता भरबाक लेल यात्रा करऽ चाहैत छथि।

ओही समय जीवनलाल भाय, जे अध्यात्मक भाषा बुझैत छथि, अपन देह, खेत, गाछ आ घरक जिम्मेदारीक धरातलपर ठाढ़ छथि। ओ मानसरोवरकेँ प्रतीक बना दैत छथि। एकटा शीतल, कोमल, पवित्र हृदय-रूपी सरोवर। ओ वैज्ञानिक भायक स्मरण करबैत छथि जे किछु यात्रा बाहर नहि होइत अछि, भीतर होइत अछि।

कथाक सभसँ मार्मिक क्षण ओहि समय अबैत अछि जखन जीतनलाल भाय कहैत छथि जे आमक नुक्सानक दाम द' देब। एतए विज्ञानक गणना मानवीय सम्बन्धपर हावी होएबाक प्रयास करैत अछि। उत्तरमे जीवनलाल भाय प्रेम आ वादा केर भाषा ल' अबैत छथि। ओ कहैत छथि जे गाछक संग जुआन हारल छी। ई तकरार आर्थिक बनाम नैतिक मूल्यक टकराव अछि। सवाल उठैत अछि कि की सभ किछु पैसासँ भरपाइ कएल जा सकैत अछि?

कथाक अन्तिम बिंदु ई देखबैत अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द कखनो यात्रा करबाक रूपमे प्रकट होइत अछि, आ कखनो यात्रा टारबाक निर्णयमे। जीतनलाल भाय अपन रिक्ततासँ बचबाक लेल मानसरोवर यात्रा चाहैत छथि, जीवनलाल भाय अपन जिम्मेदारीकेँ छोड़बाक विरोध करैत छथि। दुनू अपन-अपन ठामपर सही छथि।

मुदा कथा पाठकक मनमे एक प्रश्न छोड़ि जाइत अछि। सेवा-निवृत्तिक बाद जे मन भटकैत अछि, ओकर उपचार की यात्रा छी, वा सम्बन्ध, कर्तव्य आकि भीतरक सम्हार?

'बुढ़ापा' कथामे ई अवस्था केवल देहक ढीलापन भरि नहि अछि, बल्कि ई परिवारक भीतर सम्मान, अधिकार आ जवाबदेहीक बीच फँसल एक नाजुक स्थिति बनिकऽ सामने अबैत अछि। शुरूमे लेखक जीवनक चक्र, जन्म-मृत्यु आ

कालचक्रक सत्यक चर्चा करैत छथि, मुदा तुरन्ते ओ विचार उचितपुर गामक सामाजिक यथार्थमे उतरि जाइत अछि। एतए "बुढ़ापा" कोरा विचार नहि, रोजमर्राक अनुभव बनि जाइत अछि।

उचितलाल बाबा अस्सी पार कऽ चुकल छथि। देहक चाम ढील भऽ गेल अछि, मुदा मनक कामनाक प्रवाह आबो सक्रिय अछि। ई चित्रण विशेष अछि, कारण लेखक स्पष्ट करैत छथि जे देह भले बूढ़ भऽ जाइत अछि, मुदा मनक धार जल्दी बूढ़ नहि होइत। उचितलाल बाबा अपन जीवनमे "भक्ति रूपे" जीबाक प्रयास कएलनि अछि। ओ सामाजिक सम्बन्ध गढ़लनि अछि, संयम रखलनि अछि, आ ई कारणे हुनकर बुढ़ापा एक स्थिरता, संतुलन आ समझदारीक प्रतीक बनिकऽ देखाइत अछि।

एहीक ठीक विपरीत छथि विलास बाबा। ओहो वृद्ध छथि, मुदा अपन परिवारक बीच एकटा "खाधि" जकाँ बनि गेल छथि। तीन पीढ़ीक परिवार दुनूक संग रहैत अछि, मुदा जेठ भाय उचितलाल बाबा सम्बन्ध जोड़ैत छथि, तँ विलास बाबा सम्बन्धक भीतर कटुता आ अविश्वासक जालमे अटकल छथि। विलासक अड़बड़ाहट कथाकेँ पहिल पैघ धक्का दैत अछि। ओ सीधा आरोप लगबैत छथि जे घरक लोक अपन चालि बिगाड़ि कऽ दोष बुजुर्गपर द’ दैत अछि। "मुरही पेट बिगाड़ैए" जकाँ उपमा बुढ़ापाक सामाजिक अपमानक ठोस प्रतीक बनि जाइत अछि।

कथाकार खुशीलाल एहि ठाम मात्र दर्शक बनि नहि रहि जाइत छथि। उचितलाल बाबा हुनका साक्षी बनेबाक आग्रह करैत छथि। ई संकेत करैत अछि जे बुढ़ापाक प्रश्न मात्र घरक अंदर रहिकऽ समाधान योग्य नहि अछि, बल्कि ओकरा लेल समाजक बीच गवाही, बातचीत आ मध्यस्थता आवश्यक अछि। मुदा साक्षी बनब सहज काज नहि। खुशीलालक मनमे डर उठैत अछि। हुनका लगैत अछि जे गवाही देनाइ आजुक समयमे जानपर बनि सकैत अछि। ई संकेत करैत अछि जे समाजमे भरोसाक ढाँचा कमजोर पड़ि चुकल अछि।

खुशीलाल जखन विलास बाबासँ पुछैत छथि जे वृद्ध होइते अपने दोसराक बातक महत्त्व दैत छी, वा अपन टेढ़ विचारपर अडिग रहैत छी, तखन कथा अपन मूल बिंदुपर पहुँचैत अछि। बुढ़ापाक असली चुनौती देहक कमजोरीमे निहित नहि अछि। ई प्रश्न अछि जे एक बुजुर्ग व्यक्ति अपने केहन "श्रेष्ठजन" बनि कऽ

परिवारक बीच अपन स्थान बनबैत छथि। एहि ठाम विलास बाबा ठमकैत छथि, आ उचितलाल बाबा मुस्की दैत छथि। ई मुस्की व्यंग्यक नहि, अनुभवक मुस्की अछि। समाधान बहारसँ नहि, भीतरसँ शुरू होइत अछि, जखन आदमी अपन दोष देखबामे सक्षम बनैत अछि।

कथाक शिल्पक एक विशेष पक्ष चुप्पी अछि। खुशीलाल बीचमे चुप भऽ जाइत छथि। ई चुप्पी कायरता नहि, सोच-समझक परिणाम थिक। बुजुर्ग दुनू "चलनपियारे" छथि। कतेको बेर बीचमे बाजब अपनाकेँ "घटिया" बना दैत अछि। कथा एहि मनोवैज्ञानिक सच्चाइकेँ छुपबैत नहि अछि। ई बिना स्पष्ट कहने बड़का बात कहि दैत अछि।

अन्तमे उचितलाल बाबाक हस्तक्षेप कथाक नैतिक केन्द्र बनि जाइत अछि। ओ विलास बाबासँ कहैत छथि, "मरै बेर जस-अजस लऽ कऽ नहि जाउ। तामस आ पीड़ा छोड़ू।" "अप्पन घर, अप्पन परिवार" जकाँ बात सरल बुझा सकैत अछि, मुदा एहेन कथनमे वृद्ध बुद्धिक सार बसल अछि। अपमानक प्रतिक्रिया स्वरूप परिवार छोड़ि देब समाधान नहि थिक। समाधान संवाद करब, समय दऽ कऽ सोचब आ मनक तापकेँ ठंढा करबमे निहित अछि।

कथा बुढ़ापाक तीन स्तरपर देखबैत अछि। पहिल, देहक क्षय आ मनक धार बीच अंतर। दोसर, परिवारक भीतर अधिकार आ दोष-आरोपक राजनीति। तेसर, वृद्धक विवेक आ संतुलन, जाहिसँ ओ अपन गरिमा बनौने रखि सकैत छथि।

कथा पढ़िकऽ बुझाइत अछि जे बुढ़ापा अन्तिम अवस्था मात्र नहि थिक। ई एकटा "न्याय-परिक्षा" थिक, जेतए घरक लोकक व्यवहार, बुजुर्गक स्वभाव आ समाजक संवेदनशीलता एकसंग परखल जाइत अछि।

'परिपक्व निरलज' कथामे "निरलजता" कोनो क्षणिक अवगुण नहि, बल्कि समयक संग पकि गेल एक सामाजिक वृत्ति रूपमे सामने अबैत अछि। बुधियार भाय एहि वृत्तिक प्रतिनिधि छथि। ओ ठगी करैत छथि, लोककेँ छलैत छथि, जेल जाइत छथि, आ फेर समाजमे एहेन सहजतासँ घूमैत छथि, जेना किछु घटले नहि हो। कथा एही "सहजता" केर नैतिक प्रश्न बनबैत अछि।

रजनीकान्त जखन बुधियारक नाम सुनैत छथि, तँ ओ तुरन्त असहज भऽ जाइत छथि। देह सिहरि उठैत अछि। ई प्रतिक्रिया कोनो व्यक्तिगत दुश्मनीसँ

उत्पन्न नहि होइत अछि। ई एकटा नैतिक अस्वीकारक तीव्र अनुभूति थिक। रजनीकान्त बुझैत छथि जे जे व्यक्ति स्वार्थ, छल आ बेइमानीसँ जेल गेल अछि, ओकर हालचाल पूछब मतलब ओकर काजकेँ मौन स्वीकृति देब। लेखक एतए एकदम स्पष्ट सीमांकन करैत छथि कि प्रत्येक जिज्ञासा सदैव सकारात्मक नहि होइत अछि।

बुधियारक पृष्ठभूमि कथाकेँ अर्थगत स्पष्टता प्रदान करैत अछि। महाजनी, सूद-सवाइ, राजनीतिक साँठ-गाँठ आ बैंक मैनेजरक संग मेल-जोल ई सभ तथ्य एकटा सुसंगठित संरचनाक संकेत दैत अछि। एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ व्यक्तिगत स्तरपर अपराधी नहि छथि। ओ व्यवस्था भितरक चालाक आ सचेत खिलाड़ी छथि। किसानसभक नामपर लोन लऽ कऽ धन हड़पब आ तगादा गरीबक माथपर छोड़ब ई सभ काज योजनाबद्ध अपराधक स्पष्ट रूप थिक।

जेलसँ निकललाक बाद, बुधियारक मनस्थिति आश्चर्यचकित करबाक संग भयावह सेहो अछि। ओकर चेहरापर ग्लानि, पछतावा, भय किछु नहि। उल्टे ओ हँसैत कहैत अछि जे जनम लेने छी तँ केस-फरियादसँ डरब कियैक? एतए निरलजता अपन परिपक्व रूपमे देखाइत अछि, जेतए अपराध जीवनक अनुभव बनि जाइत अछि, आ नैतिकता अव्यवहारिक चीज बनिकऽ रहि जाइत अछि।

मनसुख जकाँ पात्र समाजक ओ हिस्सा देखबैत छथि जेकर कोनो नैतिक मेरुदण्ड नहि अछि। ओ समाजक नाओंपर चलैत छथि, आ नैतिक दूरी बनाएब जरूरी नहि बुझैत छथि। ओ भेलनि, हालचाल पूछलनि, संबंध निभेलनि, मुदा कोनो सवाल नहि उठेलनि। एहि खामोशीसँ बुधियार जकाँ लोक समाजमे बारंबार पुनः प्रवेश पाबि लैत अछि।

गिरिधारी लालक अनुभव कथाक पृष्ठभूमिक विस्तार करैत अछि। जमीन बेचबाक अगिला किस्त पहिने दऽ कऽ बादमे धोखा खेनाइ एक एहन घटना अछि जे स्पष्ट करैत अछि जे बुधियारक इतिहास लम्बा आ पुरान रहल अछि। गिरिधारी लालक बात बहुत तीख अछि। ओ कहैत छथि जे समाज बहुत जल्दी बिसरि जाइत अछि। स्मृति कमजोर भऽ जाइत अछि। एकरूपता टूटि जाइत अछि। आ यैह कमजोरी निरलजताकेँ बल दैत अछि।

कथाक अन्तिम निर्णय एकदम स्पष्ट अछि। रजनीकान्त आ गिरिधारी लाल निर्णय लैत छथि जे बुधियारक जिज्ञासा करए नहि जाएब। ई निर्णय कोनो

झगड़ासँ नहि उपजैत अछि, अपितु आत्मसम्मानक रक्षा लेल कएल गेल सोझ निर्णय छी। ओ बुझैत छथि जे एहेन लोकसँ नैतिक दूरी बना कऽ राखब सेहो मनुष्यता थिक।

एहि कथामे "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द" चिचियाइत कोनो नारा नहि थिक। ई चुप्प निर्णय, नैतिक दूरी आ अपन सोचक रक्षा करबाक दृढ़तामे व्यक्त होइत अछि। जखन समाज अपन विवेक कमजोर कऽ दैत अछि, तखन व्यक्ति अपन स्तरपर सजग रहि कऽ मनुक्ख बनल रहैत अछि। एतबे कथाक मूल स्वर अछि।

'केकरो भरोस' कथा अपन शुरुआत साधारण गप-सप्प जकाँ करैत अछि, मुदा भीतरसँ ई "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द"केँ गहिरे स्तरपर उजागर करैत अछि। कछुआ हाटपर सनतन आ मनोहरक भेंट समय आ अनुभवक संगम थिक। हाट, स्टेशन, पानक दोकान, खेती आ यात्रा ई सभ बाहरी दृश्य थिक, मुदा कथाक केन्द्रीय भाव आत्मनिर्भरता, आत्मबल आ आत्मसम्मान अछि।

ई जिद्द कोनो घोषणात्मक उद्घोष या उत्तेजित भावना नहि थिक। ई जीवनक सहज संवादमे धीरे-धीरे प्रकट होइत अछि। मनोहर अपन जिनगीक संघर्षसभ–बाढ़ि, खेतीक नुकसान, बाड़ीक नास आ जीवनक अनिश्चितता–के स्वीकृत करैत छथि। एही समस्त पीड़ासभ हुनकर आवाजमे प्रतिध्वनित होइत अछि। एहेन परिस्थिति मनुक्खकेँ दोसराक सहारापर निर्भर कए दैत अछि, मुदा सनतन भाय ओकरा सामना एकटा स्पष्ट विचारसँ करबैत छथि।

सनतन भाय अपन खेती आ जीवनक अनुभव साझा करैत छथि। ओ बतबैत छथि जे समयक संकेत बुझिकऽ काज करब जरूरी अछि। बरखा देखिकऽ बीआ रोपबाक ढंग बदलनाय, धानक किस्म चुननाय, धरतीक स्वभाव समझिकऽ खेती करनाय, ई सभ हुनकर सजगता आ विवेकक प्रतीक अछि। ओ परिस्थिति सँग लड़ैत नहि, ओकरा बुझिकऽ अपन काजकेँ सम्हारैत छथि। एहेन सोच मनुक्खकेँ टूटैसँ बचबैत अछि।

सभसँ निर्णायक क्षण ओ अछि, जखन सनतन भाय कहैत छथि जे केकरो भरोसे जिनगी नहि चलैत। एतए "भरोसा" केर अर्थ दोसर लोकपर निर्भरता नहि अछि। एकर अर्थ अपन विवेक, अपन निर्णय आ अपन श्रमपर टिकल विश्वास अछि। एतए "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द" आत्मदया नहि,

आत्मबल बनिकऽ सामने अबैत अछि।

मनोहर ई स्वीकार करैत छथि जे कठिन समयमे ओ दोसराक मुँह जोहैत रहलाह। ई स्वीकारोक्ति कमजोरी नहि, बल्कि ईमानदारी अछि। सनतन भाय ओकरा उपदेश नहि दैत छथि, बल्कि अपन अनुभवक माध्यमसँ देखबैत छथि जे जखन मनुक्ख अपन धरती, अपन मेहनति आ सोचसँ जुड़ैत अछि, तखन फेर जिनगी सम्भव बनैत अछि।

एहि कथामे "मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द" परिस्थिति बदलबाक आग्रह नहि अछि। ई संकल्प परिस्थिति भितर अपन मानवीय गरिमा आ आत्मबलकेँ बनौने रखबाक चेतन प्रयास थिक। चाहे खेती सफल हो वा असफल, यात्रा सहज हो वा कठिन, जखन मनुक्ख अपन विवेकसँ निर्णय लैत अछि, तखन ओ पराजित नहि होइत अछि।

कथा ई विश्वास पाठक धरि बहुत सहज भाषा आ प्रवाहमे लऽ जाइत अछि।

'बुलन्दी' कथा ग्रामीण जीवनक ओ साँच चेहरा सामने लबैत अछि, जेतए कठिनाइ, विपत्ति आ अभाव सामान्य बात अछि। कथा एहि सन्देशपर आधारित अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द कोनो सुविधापर निर्भर नहि रहैत, बल्कि गरिमापूर्ण संघर्ष आ आत्मबलसँ उपजैत अछि।

दिन ढलि रहल छल, मुदा साँझ अखनो पूरा उतरल नहि छल। रूपौली गाम अपन पुरान चालिपर चलि रहल छल। बाढ़ि, रौदी, सुखार, दुखार सभक संग जीबाक अभ्यास लोकमे बनि गेल छल। एही गामक अस्सी वर्षक रूपचन काका ओहेन बुजुर्ग छथि, जे प्रकृति द्वारा देल गेल मारि आ जीवनक कमी-कौरकेँ सामान्य मानिकऽ अपन दिन-राति पार करैत छथि।

मिथिलामे भूकम्प, बाढ़ि, झंझट-बिहाड़ि, ठनका जकाँ प्राकृतिक आपदासभ समय-समयपर लोककेँ डेरबैत रहल अछि। मुदा मिथिलाक लोक ओहि डरमे ठाढ़ रहिकऽ जीनाइ छोड़ि नहि दैत अछि। उपजाऊ धरती आ कठोर मौसम एतए संग-संग रहैत अछि। खेत-पथार उपज दैत अछि, मुदा घर-दुआर प्रायः अधूरा रहि जाइत अछि।

हथिया नक्षत्रक दिन छल। मेघ टोलक ऊपर लटकैत छल। हम कोबीक

बीआ लेबाक काजसँ रूपचन काकाक घर लग पहुँचि गेलहुँ। ओहि समय बरसाक बून तेज भऽ गेल। हम दौड़िकऽ हुनकर दरबज्जापर पहुँचलहुँ। काका दरबज्जापर बैसल छलाह। आगू एकटा बाल्टी राखल छल। छप्परक छेदसँ पानि टप-टप कऽ ओहि बाल्टीमे चूइत छल।

काका हमरा देखिते कहलाह जे गमछा सदा देहपर रहबाक चाही। ओ अपन गमछा हमरा देलाह। हम देह पोछि कऽ हुनका लग बैसि गेलहुँ। हुनकर व्यवहार सहज आ सिनेहपूर्ण छल। मुदा बाल्टीमे गिरैत पानिक ओ दृश्य हमरा भीतरसँ व्यथित कऽ दैत रहल।

किछुए काल बाद काका दुर्गापूजाक बात छेड़लाह। मुदा हम ओहि गपमे मन नहि लगा सकलहुँ। हम सोझे पुछि देलहुँ जे एतेक उमेर भऽ गेल, तखनहु दरबज्जाक दशा एहेन किएक?

काका मर्माहत नहि भेलाह। ओ एकदम शान्त स्वरमे कहलाह- जीवनक जड़ि लोकक हाथसँ फिसैल गेल अछि। फेर कहलाह- भोजन जीवनक पहिल जरूरत अछि। जतेक लोककेँ पेट भरि भोजन नहि भेटैत अछि, ओ तँ छत-बोघरक चिंता बादमे अबैत अछि। जे उपलब्ध अछि, ताहिसँ जीवनक उपाय बनेबाक सीख चाही।

ई बात हमरा भीतर दूर धरि पैसि गेल। काका हँसैत कहलाह- हम अपन जिनगी बुलन्दीसँ पार केलहुँ। तूँ सेहो अपन जिनगी बुलन्दीसँ पार करह।

'दसअना-छअना' कथा लेखक द्वारा एक संवेदनशील सामाजिक क्षण, अर्थात् मृत्यु-संस्कारक प्रसंगकेँ आधार बनाकए लिखल गेल अछि। कथा एहि बहाने ओ सामाजिक संरचना आ प्रवृत्तिक आलोचना करैत अछि, जेतए धर्म, परम्परा आ जातीय पेशा आधारित श्रमक अपमान निरंतर घटित होइत अछि।

कथा सामान्य पारिवारिक संवादसँ शुरू होइत अछि। श्रीकान्त भाय गामसँ बाहर रहिकए अबैत छथि। हुनकर अनुपस्थिति संकेत दैत अछि जे गामक वातावरण एतेक तनावपूर्ण भऽ चुकल अछि, जे बिना तटस्थ हस्तक्षेपक विवादक समाधान कठिन भऽ गेल अछि। सुकुमारि भौजीक वाक्य व्यंग्यक रूपमे नहि लऽ सकैत अछि। ई ओहन सामाजिक सत्यक बयान थिक जेतए समाज नीक लोकक उपस्थितिकेँ सेहो सहजतासँ स्वीकार करबाक स्थितिमे नहि रहल अछि।

गुलटेन द्वारा देल गेल समाचार कथाक केन्द्र बनि जाइत अछि। मुकुन्दबाबाक श्राद्धकर्ममे महापात्र आ नौआक बीच दैछनाक बँटवारा लेल उठल झगड़ा धर्मसँ संबंधित विषय नहि रहि जाइत अछि। ई संघर्ष श्रमक गरिमासँ जुड़ल एक महत्वपूर्ण प्रश्नक रूपमे सामने अबैत अछि। महापात्रक प्रभुत्व आ नौआक हाशियापर स्थित भूमिका एहेन समाजक संकेत दैत अछि जे श्रेणी आधारित सोचसँ संचालित होइत अछि। खर्च बढ़ल, आडम्बर बढ़ल, लेकिन जे श्रमिक वर्ग छी, तिनकर हिस्सेदारी घटैत जा रहल अछि।

“दसअना-छअना” केवल मुद्रा या राशि नहि अछि, ई एक सामाजिक मानसिकताक प्रतीक अछि। ई मानसिकता तय करैत अछि जे के कतेक मूल्यवान अछि आ के खाली विधि रूपमे देखल जाइत अछि। एही ठाम मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द कोनो भावुक प्रयास नहि रहि जाइत अछि, बल्कि न्यायबोध आ सामाजिक विवेकक एक लड़ाइ बनि जाइत अछि। जखन धर्मक नामपर असमानताकेँ वैध मानल जाए लगैत अछि, तखन मनुष्यताकेँ बचब एकटा कठोर चुनौती बनि जाइत अछि।

श्रीकान्त भाय एहि समुच्चा प्रसंगमे हड़बड़ाहट या तमाशा देखबाक मानसिकताकेँ अस्वीकार करैत छथि। ओ चुपचाप, लेकिन सजग रूपमे बुझए चाहैत छथि। ओ प्रश्न करैत छथि, आ तथ्य जानबाक कोसिस करैत छथि। हुनकर ई रुख कथाकेँ नैतिक धरातल दैत अछि। एतए मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द शोर आ उत्तेजनाक रूपमे व्यक्त नहि भेल अछि। ई संतुलन, विवेक आ बौद्धिक उपस्थितिमे प्रकट होइत अछि।

कथाकार पाठककेँ बाध्य करैत छथि जे ओ धर्म, परम्परा आ सामाजिक व्यवहारक भीतर पैसल असमानतापर गम्भीरतासँ सोचए। कथा देखबैत अछि जे कतहु-कतहु समाज एखनो तक श्रेय, श्रम आ सम्मानक बाँटवारामे निष्पक्ष नहि बनि सकल अछि।

“दसअना-छअना” अंततः ओ मानसिक रेखा बनि जाइत अछि जइमे लोकक मूल्य हुनकर जाति, पेशा आ प्रतीकात्मक भूमिकासँ नापल जाइत अछि, नहि कि हुनकर श्रम या योगदानसँ। कथा एहि मनोवृत्तिक आलोचना करैत अछि।

‘माइक सोग’ कथा एकटा नौकरीपेशा व्यक्ति मनोहरक जीवनक माध्यमसँ एहेन मानसिक संघर्षकेँ उघारैत अछि, जेतए पारिवारिक दायित्व आ

आधुनिक पेशागत जीवन आपसमे टकराइत अछि। कथा सामाजिक मान्यतासँ उपजल आंतरिक द्वंद्व, संवेदनाक क्षीण होइत रूप, आ आत्मबोधक तीख रूपकेँ बहुत संयत आ प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि।

मनोहर ऑफिसक ऑडिट, फाइल, समयसीमा आ दबावक बौद्धिक जालमे एतेक फँसल छथि जे माइक मृत्यु जकाँ गम्भीर मानवीय क्षण सेहो हुनका पहिने आर्थिक आ व्यावहारिक चिन्ता जकाँ प्रतीत होइत अछि। शोकक पहिल प्रतिक्रिया संवेदनाक रूपमे प्रकट नहि होइत अछि। ई खर्च, काज आ कागजी प्रक्रिया बनिकए सामने अबैत अछि। एही चित्रणसँ कथा ई गम्भीर सवाल उठबैत अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक अर्थ एखन केतए ठाढ़ अछि?

कथाक मध्यभागमे श्राद्ध-कर्मपर होइत संवाद सामाजिक सोच आ व्यक्तिगत मतक टकरावकेँ उघारैत अछि। मनोहर भीतरसँ ओहि परम्परासँ सहमत नहि छथि, पत्नी सेहो साफ असहमति दैत छथि, मुदा निर्णय समाजक दबाव, लोक-लाज, आ जातीय रीतिक मजबूरीमे बनैत अछि। एहि ठाम मनुष्यता भावनासँ कटि कऽ एकटा सामाजिक स्वीकृति-केन्द्रित समझौता बनि जाइत अछि। गाम पहुँचला पछाइत लोकक प्रतिक्रिया, खर्चक चर्चा आ गुनगुनी बात कथाकेँ समाजक संवेदनहीन यथार्थ दिस लऽ जाइत अछि। माइक मृत्यु व्यक्तिगत शोक नहि रहि जाइत अछि, बल्कि ओ एकटा प्रतिष्ठा आ प्रदर्शनक आयोजन बनि जाइत अछि। भोज, पंचदान आ नवका कपड़ाक होड़ मनुक्खक भीतरक संवेदनाकेँ दबा दैत अछि। मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द एतए भावनात्मक सच्चाइसँ नहि, सामाजिक रूप-सज्जासँ परिभाषित होइत देखाइत अछि।

कथाक अन्तिम बिंदु बहुत मार्मिक अछि। रेलक स्लीपर डिब्बामे बैसल मनोहर अपन आत्मस्वीकृति करैत छथि। ओ बुझे छथि जे जे सेवा, समय आ सान्निध्य माइक जीवित अवस्थामे हुनका द्वारा नहि देल गेल, से मृत्युपरांत विधि-विधानसँ पूरा नहि भऽ सकैत अछि। ओ सोचैत छथि जे वास्तविक मनुष्यता कर्तव्यक नामपर शोक मनाबऽमे निहित नहि अछि। ई तँ जीवित अवस्थामे अपन सिनेह आ जिम्मेदारी निभेबाक भावनामे प्रकट होइत अछि।

कथा ई सिखबैत अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द केवल विधिक पालन तक सीमित नहि अछि। ई जिद्द जिनगीक भीतर सजीव सम्बन्ध आ सक्रिय सहभागितामे निहित अछि।

'गाम भगा देलक' कथा बाह्य रूपसँ बाढ़ि, बरखा आ यात्रा जकाँ लगैत अछि, मुदा भीतर जाकऽ ई सामाजिक अन्याय, विस्थापन आ स्त्रीक आत्म-सम्मानक सशक्त दस्तावेज बनि जाइत अछि। हथिया नक्षत्रक बरखा आ कोसी-कमलाक बाढ़ि कथा लेल एकटा प्राकृतिक पृष्ठभूमि बनेबाक संग-संग एकटा प्रतीक बनैत अछि। ई संकेत करैत अछि जे जेना प्रकृति विस्थापनक कारण बनैत अछि, तहिना समाज सेहो कखनो-कखनो अपन लोककेँ भगाए दैत अछि।

सरूपकाका चेरापूँजी देखबाक इच्छा जाहिर करैत छथि। ओ मात्र प्राकृतिक स्थल देखए चाहैत नहि छथि, बल्कि जीवनक किछु भिन्न अनुभव बुझए चाहैत छथि। असाम पहुँचि रधिया भौजीसँ भेंट होइत अछि, जइठाम कथा अपन मूल स्वर पकड़ैत अछि।

रधिया भौजी अपन जीवन कथा सुनबैत छथि। हुनकर कथा एकटा स्त्रीक संघर्षक कथा छी, जे अपन बेटाक संग गाम छोड़ए लेल विवश भेलि। हेजामे पतिक मृत्यु, ओकरा बाद महाजन द्वारा घर छिनब आ गामक लोक द्वारा भेटल मौन स्वीकृति एकसंग देखबैत अछि जे कोना एकटा स्त्रीक जीवन गामक भीतर असुरक्षित भऽ गेल अछि। गाम, जे सिनेह, सहारा आ अपनत्वक प्रतीक होएबाक चाही, ओहि स्त्री आ बच्चा लेल भयक स्थल बनि जाइत अछि। रधिया भौजीक निर्णय केवल पलायन नहि छल, ओ एकटा साहसिक विकल्प छल, जइमे मातृत्व, विवेक आ आत्म-सम्मानक बल शामिल छल।

असाम पहुँचि भौजी पहिने अनजान भाषा, वातावरण आ श्रमसँ जूझैत छथि। ओ चाह बगानमे मजदूरी करैत छथि, फेर धीरे-धीरे स्कूलमे नोकरी करैत छथि। ओ अपन घर बनबैत छथि, बेटाकेँ पढ़बैत छथि। ई सभ संघर्ष देखबैत अछि जे मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द केवल परिस्थितिसँ टकराएब नहि होइत, बल्कि परिस्थितिक संग लड़ैत अपन अस्तित्व बचाएब सेहो होइत अछि।

सरूपकाका एतए केवल दर्शक बनिकए नहि रहि जाइत छथि। ओ संवेदनशील साक्षीक रूपमे उपस्थित भऽ जाइत छथि। हुनका मोन पड़ैत अछि जे ओ मेहनती छथि, इमानदार छथि, मुदा रधिया भौजीक कथा सुनिकए बुझैत छथि जे केवल नीक रहनाइ पर्याप्त नहि अछि। जखन समाज ताकत आ संपत्तिक पक्ष लेत, तखन कमजोर आ पीड़ित लोककेँ न्याय नहि भेटत।

कथाक अंतिम स्वर रधिया भौजीक वाक्यसँ गूंजैत अछि। ओ कहैत छथि

जे जे गाम भगा देलक, ओहि गामक मुँह फेर देखए चाही नहि। ई वाक्य विरोधक रूपमे नहि देखाइत अछि। ई आत्म-सम्मान आ आत्म-सुरक्षाक एक सजीव घोषणा बनि जाइत अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे प्राकृतिक बाढ़ि लोक बहा दैत अछि, मुदा लोक फेरसँ अपन घर बना लैत अछि। मुदा सामाजिक अन्यायक बाढ़ि जीवनकेँ भीतरसँ तोड़ि दैत अछि, आ ओ घाव पीढ़ी दर पीढ़ी चलैत अछि।

'गाम भगा देलक' केवल विस्थापनक कथा नहि अछि। ई स्त्रीक आत्मनिर्णय, जुझारुपन आ गरिमा बचाबऽ लेल कएल गेल संघर्षक यात्रा अछि।

कथा कहैत अछि जे जँ कोनो ओहन परिस्थिति बनैत अछि, जेतए मनुक्ख अपन मूल्य, सम्मान आ जीवनक संभावना सुरक्षित नहि बुझैत अछि, तँ ओ गाम वा समाज ओकरा लेल रहि नहि जाइत अछि।

एहि कथासभक विवेचन एतए आबि कऽ रूकैत नहि अछि, आ ने मनुक्ख बनल रहबाक जिद्द एतए समाप्त होइत अछि। ई जिद्द जीवनक निरन्तर अवस्था थिक। कथासभ अपन-अपन धरातलपर समाप्त भऽ जाइत अछि, पात्र अपन निर्णय लऽ कऽ आगू बढ़ि जाइत छथि, मुदा पाठक ओहिठाम ठहरि जाइत अछि जेतए मनुष्यतापर प्रश्न उठैत अछि।

एहि विश्लेषणक उद्देश्य कथासभपर फैसला देब नहि अछि। एकर उद्देश्य ओहि क्षणसभकेँ चिन्हब अछि जेतए साधारण लोक असाधारण नैतिक साहस देखबैत अछि। कतहु ठेला खींचैत श्रमिक अछि, कतहु वृद्ध स्त्री, कतहु नौकरी-पेशामे लागल मनुक्ख, तँ कतहु विस्थापित माए। सभक संघर्ष भिन्न अछि, मुदा मूल जिद्द एक्के अछि, अपन परिस्थितिक भीतर रहिकऽ मनुक्ख बनल रहब।

एही कारणेँ ई संग्रह केवल कथा-आस्वादन बनिकऽ नहि रहि जाइत अछि। ई संवेदनाक अभ्यास बनि जाइत अछि। पाठक जखन अंतिम पन्ना बन्द करैत छथि, तखन कथासभ ओतहि ठहरि जाइत अछि, मुदा ओहि जिद्दसँ उठल प्रश्न पाठकक भीतर लगातार चलैत रहैत अछि। सम्भवतः एही सतत प्रश्नमे एहि पोथीक सार्थकता निहित अछि।

- डॉ. रीना कुमारी

ठेलाबला

टाबरक घड़ीमे बारह बजेक घण्टी बजिते भोलाक निन्न टुटि गेलैन। ओछाइनपर सँ उठि सड़कपर आबि हियासए लगला तँ देखलैन जे डण्डी-तराजू माथसँ थोड़बे पच्छिम झूकल अछि। मेघौन दुआरे सतभैयाँ झँपाएल। जेमहर साफ मेघ रहै ओम्हुरका तरेगन हँसैत मुदा जेमहर मेघौन रहै ओम्हुरका मलिन। गाड़ी-सवारी एक्कोटा नहि। सड़क सुनसान। मुदा बिजलीक इजोत पसरल। गस्तीक सिपाही टहलैत। सड़कपर सँ भोला आबि ओछाइनपर पड़ि रहला मुदा मन उचला-चाल करैत रहैन। सिनेमाक रील जकाँ पैछला जिनगी मनमे नचैत रहैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि तर-सँ-ऊपर अबैत तहिना भोलोक मनक खुशी हृदयसँ निकैल चिड़ै जकाँ अकासमे उड़ैत रहैन। किएक ने खुशी अबितैन, हेराएल वस्तु जे भेट गेल रहैन। मन गेलैन परसुका चिट्ठीपर, जे गामसँ दुनू बेटा पठौने। असम्भव काज बुझि बिसवासे नै होइत रहैन। पत्र तँ नइ पढ़ल होइत रहैन मुदा पढ़बै काल जे पाँति सभ सुनने छला से ओहिना आँखिक आगू नचैत रहैन। पत्र उघारि आँखि गड़ा देखए लगला- “बाबू, पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। इच्छा अछि जे घरसँ विदा होइ काल अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ निकली। तँए पाँच तारीखकेँ दस बजेसँ पहिनहि अपने गाम पहुँच जाइ।”

पत्रक बात मनमे अबिते भोला गाम आ शहरक बीचक सीमानपर लसैक गेला। मनमे एलैन, समाजसँ निकैल छातीपर ठेला घिंच दूटा शिक्षक समाजकेँ देलिऐ, की ओइ समाजक आरो ऋण बाँकी अछि? जँ नहि तँ किएक ने छाती लगौता...।

जहिना गामसँ धोती गोल-गला आ दू टाका लऽ कऽ निकलल छेलौं, तहिना देहक कपड़ा, सनेस, चाह-पानक खर्च छोड़ि किछु ने ऐठामसँ लऽ जाएब...।

चिड़ै टाँहि देलकै, फेर ओछाइनपर सँ उठि भोला बाहर निकलला तँ देखलखिन जे बाँस भरि ऊपर भुरूकबा आबि गेल अछि। चोट्टे घुमि कऽ आबि संगी-साथीकेँ उठा अपन सभ किछु बाँटि देलखिन, अपना-ले खाली मासुलक खर्च, सनेस आ पाँकेट खर्च मिला साए रुपैआ रखि, कपड़ा पहिर, धरमशालाकेँ गोड़ लागि हँसैत निकैल गेला।

जहन आठे बर्खक भोला रहए तहिये माए मरि गेलैन। तीनिए मासक पछाइत पिता चुमौन कऽ लेलखिन। ओना, पहिलुको पत्नीसँ रघुनीकेँ चारिटा सन्तान भेल रहैन। मुदा खाली भोलेटा जीवित रहल। सतमाए-कैँ परिवारमे एने भोलाकेँ सुखे भेलइ। ओना, गामक जनिजातियो आ पुरुखोकेँ होइ जे सतमाए भोलाकेँ अलबा-दोलबा कऽ घरसँ भगा देतै, नहि तँ परिवारमे भिनौज जरूर कराइए देतइ। मुदा सबहक अनुमान गलत भेल। भोला घरसँ सोलहन्नी फ्री भऽ गेल। फ्री खाली काजेटा मे भेला, मान-दान सेहो बढ़िए गेलइ। दुनू साँझ भानस होइते माए फुटा कऽ भोलाले सीकपर थारी साँठि कऽ रखि दइ छेली। भलेँ भोला दिनुका खेनाइ साँझमे आ रौतुका खेनाइ भोरमे खाइत।

परोपट्टामे जालिम सिंह आ उत्तमचन्दक नाच जोर पकड़ने। सभ गाममे तँ नाच पार्टी नहि, मुदा एक गाममे नाच भेने चरिकोसीक लोक देखए अबैत।

भोलाक गामक नाच पार्टी सभसँ सुन्दर अछि। जेहने नगेड़ा बजौनिहार तेहने बिपटा। जइसँ पार्टीक प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़िते जाइत।

..घरसँ फ्री भेने भोला नाचक परमानेंट देखनिहार भऽ गेल। नाचो एक-आध घन्टा, दू घन्टा आकि तीन घन्टाक नहि, भरि रौतुका। जेहने देखनिहार जिद्दी तेहने नचिनिहारो। गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ छौड़ा-मारड़ि धरि भरि मन मनोरंजन करैत। मनोरंजनो सस्ता। ने नाच पार्टीकेँ रुपैआ दिअ पड़ैत आ ने खाइ-पीबैक कोनो झंझट। ओना, गामक बारह-चौदह-अना लोकक हालतो रद्दीए। मुदा जे किसान परिवार छल ओ अपना ऐठाम मासमे एक-दू दिन जरूर नाच करबै छला। नटुआकेँ खैयोले दइ छेलखिन आ कोनो-कोनो समानो कीनि कऽ। भोलो नाच पार्टीक अंग बनि गेल, डिग्री सेदैक जिम्मा भेट गेलइ। डिग्री सेदैक जिम्मा भेटते भोलाकेँ काजो बढ़ि गेलइ। घूर-ले जारनोक ओरियान करए पड़इ। अपना काजमे भोला मस्त रहए लगल। मुदा एतबेसँ ओकर मन शान्त नइ भेलइ। काजक सृजन ओ अपनोसँ करए लगल। स्टेजक आगूमे जे छोटका धिया-पुता

बैस पीह-पाह करइ। ओकरो सभपर निगरानी करए लगल। आब ओ चुपचाप एकठाम नै बैसए। घुमि- घुमि कऽ महफिलोक निगरानी करए लगल। आरो काज बढ़ैलक। नटुआ सबहक बीड़ी सेहो लगबए लगल। बीड़ी सुनगबैत-सुनगबैत अपनो पीयब सीखि लेलक। किछुए दिनक पछाइत भोला नमहर बीड़ी-पियाक भऽ गेल। किएक तँ एक्के-दू दम जँ पीबए तैयो भरि रातिमे तीस-पैंतीस दम भऽ जाइ छेलइ। जइसँ भरि राति मूड बनल रहै छेलइ।

बीड़ीक कसगर चहैट भोलाकेँ लगि गेल। रातिमे तँ नटुए सभसँ काज चलि जाइ छेलै मुदा दिनमे जहन अमलक तलक जोर करै तँ मन छटपटाए लगइ, मूडे भङैठ जाइ। मूड बनबै दुआरे भोला बापक राखल बीड़ी चोरा-चोरा पीबए लगल। जइक चलैत सभ दिन किछु-ने-किछु बापक हाथे मारि खाइत।

एक दिन एक्केटा बीड़ी रघुनीकेँ रहैन। भोला चोरा कऽ पीब लेलक। कोदारि पाड़ि रघुनी गामपर एला तँ बीड़ी पीबैक मन भेलैन। खोलियासँ आनए गेला तँ बीड़ी नइ देखलैन। चोटपर भोला पकड़ा गेल। सभ तामस रघुनी भोलापर उतारि लेलैन। ..मारि खाए भोला कनैत उत्तर-मुहेँक रस्ता पकड़लक। कनीए आगू बढ़ल कि करिया कक्काक नजैर कनैत भोलापर पड़ल। कानबसँ ओ बुझि गेला जे भीतरिया मारि लागल छइ। ..पुचुकारि कऽ करिया काका पुछलखिन-

“की भेलौ भोला, किए हुचकै छँह?”

करिया कक्काक सिनेह पाबि भोला आरो हुचैक-हुचैक कानए लगल। हुचकैत भोला जे किछु काकाकेँ कहलकैन ओ हुचकीए-मे हेरा गेल। काका भोलाक बात नै बुझलैन। मुदा काका बिगरला नहि, भोलाक दहिना डेन पकैड़ रघुनीकेँ कहए बढ़ि गेला।

काकाकेँ देखि रघुनियोँक मन पघिल गेलैन। लगमे आबि काका कहलखिन-

“रघुनी, भोला बच्चा अछि किएक तँ बिआह नइ भेलैए। तँए नीक हेतह जे बिआह करा दहक। अपन भार उतैर जेतह। परिवारक बोझ पड़तै अपने सुधरत। अखन मारने दोषी हेबह, समाज अबलट्ट जोड़तह जे बाप कुभेला करै छइ। जनिजातिक मुँह रोकि सकबहक ओ कहतह जे ‘माए मुइने बाप पित्ती...।”

करिया कक्काक विचार रघुनीक करेजकेँ छेदि देलकैन। आँखिमे नोर आबि गेलैन। अखन धरि रघुनीक जे आँखि करिया कक्कापर रहैन ओ भोलाक

गाल परहक सुखल नोरक टघारपर पहुँच अँटैक गेलैन। ओना, मारिक चोट भोलाक देहमे निजाइए गेलै जे संग-संग बिआहक बात सुनि मनमे खुशियो उपकलै। बुधिक हिसाबसँ भलेँ भोला बुड़िबक अछि मुदा नाचमे मेल-फीमेलक गीत तँ गबिते अछि।

पिताक हैसियतसँ रघुनी करिया काकाकेँ कहलखिन- “काका, हम तँ ओते छह-पाँच नै बुझै छिऐ, काल्हिए चलह केतौ लड़की ठेमा कऽ बिआह कैये देबइ।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि करिया काका रस्ता घेलैन।

भोलाक बिआह भेला आठे दिन भेल छेलै कि पाँच गोरेक संग समैध आबि रघुनीकेँ कहलकैन- “बिआहसँ पहिने हम सभ नै बुझलिऐ, परसू पता लगल जे लड़िका नाच पार्टीमे रहैए। नटुआ-फटुआ लड़िकाक संग अपन बेटीकेँ हम नै जाए देब। ई सम्बन्ध नइ रहत। अपना सभमे तँ खुजले अछि। अहूँ अपन बेटाकेँ बिआहि लिअ आ हमहूँ अपना बेटीक दोसर बिआह कऽ देब।”

कहि पाँचो गोरे चलि गेला।

ससुरक बात सुनि भोलाक बुधिए हेरा गेलइ। जहिना जोरगर बिर्ड़ो उठलापर सभ किछु अन्हरा जाइ छै तहिना भोलोक मन अन्हराए लगलै, दुनियाँ अन्हार लागए लगलै। ओना, तीन मास पहिनहि नाच पार्टी टुटि गेल छेलइ। एकटा नटुआ एकटा लड़कीकेँ लऽ पड़ा गेल जइसँ गाम दू फाँक भऽ दू ग्रुपमे बँटा गेलइ। सौंसे गाममे सनासनी चलए लगलै। तैपर सँ भोला आरो दू फाँक भऽ गेल। पाण्डु रोगी जकाँ भोलाक देहक खून तरे-तर सुखए लगलै। मुदा की करैत वेचारा। किछु फुरबे ने करइ। ग्लानिसँ मन कसाइन हुअ लगलै। मने-मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल, कोन सुगराहा भगवान हमरा जन्म देलैन जे बहुओ छोड़ि देलक। विचारलक जे ऐ गामसँ केतौ चलिए जाएब नीक हएत।

घरसँ भोला पड़ा गेल। संगी-साथीक मुहसँ दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइक विषयमे सुननहि रहए। जइसँ गाड़ियोक भाँज बुझले रहइ। मुदा ने जेबीमे पाइ रहै आ ने बटखर्चा। खाली दूटा टाका संगमे रहइ। अबधारि कऽ भोला कलकत्ताक गाड़ी पकैड़ लेलक।

हबड़ा स्टेशन गाड़ी पहुँचते भोला उतरल। टिकट नइ रहनौं एक्को मिसिया डर मनमे नहि। निर्मली-सकरीक बीच कहियो टिकट नै कटबै छल। एक बेर पनरह अगस्तकेँ सिमरिया धरि बिनु टिकटे घुमि आएल छल। प्लेटफार्मक गेँटपर दूटा सिपाहीक संग टी.टी. टिकट ओसुलैत। भोलाकेँ देखि टी.टी.क मनमे भेलै, दरभंगिया छी भीख मंगए आएल अछि। टिकट नै मंगलकै। सिपाहियोकेँ बुझि पड़लै जे जेबीमे किछु छै नहि। टिकटेबला यात्री जकाँ भोलो गेँट पार भऽ गेल।

सड़कपर आबि भोला आँखि उठा कऽ तकलक तँ नमहर-नमहर कोठा, चौरगर सड़क, हजारो छोटका-बड़का गाड़ी आ लोकक भीड़ देखलक। मनमे भेलै, भरिसक आँखिमे ने किछु भऽ गेल! जहिना आँखि गड़बड़ भेने एक्के चान सातटा बुझि पड़ैए तहिना ने तँ बुझि पड़ैए! ..दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि फेर देखलक तँ ओहिना भीड़ देखि मनमे उठलै, जहन एते लोकक गुजर-बसर चलै छै तँ हमर किए ने चलत। आगू बढ़ि लोकक बोली अकानए लगल। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैत। अखन धरि बुझैत जे जहिना गाए-महींस सभठाम एक्के रंग बजैए तहिना ने मनुक्खो बजैत हएत। मुदा से नइ देखि भेलै जे भरिसक हम मनुक्खक जेरिमे हेरा ने तँ गेलौं..! मुदा फेर मनमे उठलै, लोक तँ संगीक बीच हेराइए, असगरमे केना हेराएत।

..विचित्र स्थितिमे भोला पड़ि गेल। ने आगू बढ़ैक साहस होइ आ ने केकरोसँ किछु पुछैक। हिया हारि उत्तर-मुहेँ विदा भऽ भेल। सड़कक किनछैर सभमे खाइ-पीबैक छोट-छोट दोकान पतियानी लागल देखलक। भूख लगले रहै मुदा खाली जेबी आ लोकक बोलक कारण हिम्मते ने होइ। जेबी टोबलक तँ एकटा दू-टकही रहइ। मोन पड़लै मधुबनीक स्टेशन कातक होटल, जइमे पाँच रुपैए प्लेट दइत। ई तँ सहजे कलकत्ता छी। ऐठाम तँ आरो बेसी महग हेबे करत। एकटा दोकानक आगूमे ठाढ़ भऽ गर अँटबए लगल जे नइ भात-रोटी तँ एक गिलास सतुए पीब लेब। ..बगे देखि दोकानदारे कहलकै-

“आबह आबह, बौआ। ठाढ़ किएक छह?”

अपन बोली सुनि भोला घुसैक कऽ दोकान लग पहुँच पुछलक- “दादा, केना खुआबै छहक?”

“तीन मास पहिने धरि आठे-अनामे खुअबै छेलिऐ। अखन बारह-अनामे

खुअबै छिऐ।”

भोलाक मनमे संतोख भेलइ। पाइएबला गहिंकी जकाँ बाजल- “कुर्रा करैले पानि लाबह।”

भरि पेट खेनाइ खा भोला आगू बढ़ल। ओना, तँ रंग-बिरंगक वस्तु देखैत मुदा भोलाक नजैर खाली दुइए-ठाम अँटकै। देबाल सभमे साटल सिनेमाक पोस्टरपर आ सड़कपर चलैत ठेलापर। जइ पोस्टरमे डान्स करैत देखए ओइठाम अँटैक सोचए जे ई नर्तकी मौगी छी आकि मुनसा। गाम-घरमे तँ पुरुखे मौगी बनि डान्स करैए। फेर मोन पड़लै संगीक-मुहेँ सुनल ओ बात जे कहने रहैए सत्य हरिश्चन्द फिल्ममे मर्दे मौगियोक रौल केने रहए...।

गुनधुन करैत भोला बढ़ल तँ अपने जकाँ छौड़ाकेँ ठेला ठेलने जाइत देखि सोचए लगल, ई काज तँ हमरो बुते भऽ सकैए। गाड़ीक डरेवरी तँ करल नै अबैए। बिनु सिखने रिक्शो केना चलौल हएत। ततमत करैत आगू बढ़ल। सड़कक बगलेमे एकटा ठेलाबलाकेँ चाह पिबैत देखलक। ओइठाम जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। चाह पीब ठेलाबला पुछलक-

“कोन गाँ रहै छह?”

भोला बाजल- “बिशौल।”

‘बिशौल’ सुनिते ठेलाबला कहलकै-

“हमहूँ तँ सुखेते रहै छी, चलह हमरा संगे।”

गप-सप्प करैत दुनू गोरे धरमतल्लाक पुरना धरमशाला लग पहुँचल, ठेलाकेँ सड़केपर छोड़ि दीनमा भोलाकेँ धरमशालाक भीतर लऽ जा कऽ कहलक- “समांग, असगरे केतौ जैहह नहि। हेरा जेबह। एतै रहह, ताबे हम एक ट्रीप मारने अबै छी।”

टंकीपर हाथ-पएर धोइ भोला दीनमासँ बीड़ी मांगि पीब, पीलर लगा ओङैठ कऽ बैस रहल। आँखि उठा कऽ तकलक तँ झड़ल-झुरल देबालक सिमटी, तैपर केतौ-केतौ बर-पीपरक गाछ जन्मल देखलक। पैखाना कोठरी आ पानिक टंकीक आगूमे ठेहुन भरि थाल किचार सेहो देखलक, मोन पड़लै गाम। नाच-पार्टी टुटि गेल! घरवाली छोड़ि देलक! दू पाटी गाम भऽ गेल! सोचिते-सोचिते भोलाकेँ निन्न आबि गेलइ। बैसले-बैसल सुति रहल।

गोसाँइ डुमिते बुचाइ (दोसर ठेलाबला) आबि भोलाकेँ जगबैत पुछलक- “कोन गाम रहै छह?”

आशा भरल स्वरमे भोला बाजल- “बिशौल।”

बिशौलक नाओं सुनिते मुस्कियाइत बुचाइ पुछलकै- “रूपनकेँ चिन्है छहक?”

“उ तँ हमरा कक्के हएत।”

अपन भाइक ससुर बुझि भोलासँ सार-बहनोइक सम्बन्ध बनबैत बाजल- “चलू, पहिने चाह पीबी। तहन निचेनसँ गप-सप्प करब।”

कहि टंकीपर जा बुचाइ देह-हाथ धोइ, कपड़ा बदैल भोलाकेँ संग केने दोकानपर गेल। आँखिक इशारासँ दोकानदारकेँ दू-दूटा पनितुआ, दू-दूटा समौसा दइले कहलक। दुनू गोरे खा, चाह पीब पानक दोकानपर पहुँच बुचाइ दूटा पान मंगलक। ‘पान’ सुनि भोला बाजल- “पान छोड़ि दियौ, बीड़ीए कीनि लिअ।”

बीड़ी पिबैत दुनू गोरे धरमशालाक भीतर पहुँचल। समय भेने एका-एकी ठेलाबला सभ आबए लगल। बिशौलक नाओं सुनिते अपन-अपन सम्बन्ध सभ फरिछौलक। सम्बन्ध स्थापित होइते बेरा-बेरी चाह चलए लगलै। चाह पिबैत-पिबैत भोलाक पेट अगिया गेल। अखन धरिक जिनगीमे एहेन सिनेह भोलाकेँ पहिल दिन भेटलै। भेला ठेलाबला सबहक परिवारक अंग बनि गेल। सभ बेवस्था ठेलाबला सभ कऽ देलक। दोसर दिनसँ ठेला ठेलए लगल।

शनि दिनकेँ सभ ठेलाबला रौतुका शो सिनेमा देखए जाइत। ओइ शोमे एक क्लासक कन्सेशन भेटइ। भोलो सभ शनिकेँ सिनेमा देखए लगल।

चौदह मास बीतला पछाइत भोला गाम आएल। नव चेहरा नव विचार भोलाक। घरक सभ सदस-ले कपड़ा अनलक। धिया-पुताकेँ दू-दूटा चौकलेट देलक। धिया-पुताक हाथमे चौकलेट देखि एका-एकी जनिजातियो सभ आबए लगली। झबरी दादी सेहो एली। भोलाकेँ देखिते झबरी दादी बाजए लगली- “कहू तँ ऐसँ सुन्नर पुरुख केहेन होइ छै जे सौंथ जरौनियाँ छोड़ि देलकै!”

दादीक बात भोलाकेँ बेधि देलक। आँखि नोराए लगलै। रघुनीक मन सेहो कानए लगलै। दोसरे दिन रघुनी लड़की ताकए घरसँ निकलल। ओना, लड़कीक तँ कमी नहि, मुदा गाम-घर देखि कऽ कुटुमैती करैक विचार रघुनीक मनमे रहैन।

लड़कीक कमी तँ ओइ समाजमे अधिक अछि जइमे भ्रूण-हत्याक रोग धेने छइ। समैयो बदलल। गिरहस्त परिवारसँ अधिक पसिन लोक नोकरिया परिवारकेँ करैए। बगलेक गाममे भोलाक बिआह भऽ गेल।

बिआहक तीनिए दिनक पछाइत कनियाँक बिदागरियो भऽ गेलै आ पाँचमे दिन भोला कलकत्तो चलि आएल। सालक एगारह मास भोला कलकत्ता आ एक मास गाममे गुजारए लगल। गाम अबैत तँ अपनो घरक काज सम्हारि अनको सम्हारि दइत। तेसर साल चढ़िते भोलाकेँ जौंआँ बेटा भेलइ। नवम् मास चढ़िते भोला गाम आबि गेल। मनमे आशो बनले रहै जे पाइ-कौड़ीक दिक्कत तँ नहियेँ हएत। सभ ठेलाबला अपन संस्था बना पाइ-कौड़ीक प्रबन्ध केने अछि। मुदा पहिल बेर छी, कनियाँक देखभाल तँ कठिन अछिए। सरकारीक कोनो बेवस्थो नहियेँ छइ। मुदा समाजो तँ समुद्र छी, जेतए बिनु कहनौं सेवा भेटैए। जइसँ भोलोकेँ कोनो बेसी परेशानी नहियेँ भेल।

समय आगू बढ़ल। पाँच बरख पुरिते भोला दुनू बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखौलक। शहरक वातावरणमे रहने भोलोक विचार धिया-पुताकेँ पढ़बै दिस झुकि गेल रहइ। मनमे अरोपि लेलक जे भलेँ खटनी दोबर किएक ने बढ़ि जाए मुदा दुनू बेटाकेँ जरूर पढ़ाएब। अपन आमदनी देखि पत्नीक ऑपरेशनो कराइए नेने रहए। जइसँ परिवारो समटले रहइ।

पढ़ैमे जेहने चन्सगर रतन तेहने लाल। क्लासमे रतन फस्ट करैत आ लाल सेकेण्ड। सतमा क्लास धरि दुनू भाँइ फस्ट-सेकेण्ड स्कूलमे करैत रहल। हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ आर्ट लऽ पढ़ए लगल जइसँ क्लासमे कोनो पोजीसन तँ नहियेँ होइत मुदा नीक नम्बरसँ पास करए लगल।

मैट्रिकक परीक्षा दऽ दुनू भाँइ कलकत्ता गेल। अखन धरि आने परदेशी जकाँ अपनो पिताकेँ बुझै छल, तँए मनमे रंग-बिरंगक इच्छा संयोगने कलकत्ता पहुँचल रहए। मुदा पिताक मेहनत, छाती बले ठेला घीचैत देखि पराते भने गाम घुमैक विचार दुनू भाँइ कऽ लेलक। पितेक जोरपर तीन दिन अँटकल। मुदा किछु किनैक विचार छोड़ि देलक। मेहनतक कमाइ देखि अपन इच्छाकेँ मनेमे दुनू भाँइ दाबि लेलक। मुदा तैयो भोला दुनू बेटाकेँ फुलपेन्ट, शर्ट, घड़ी, जुत्ता कीनि देलखिन। तीन मासक पछाइत मैट्रिकक रिजल्ट निकलल। दुनू भाँइ, रतनो आ लालो प्रथम श्रेणीसँ पास केलक। फस्ट डिवीजन भेलोपर आगू पढ़ैक विचार

मनमे नै अनलक। उपार्जन-ले सोचए लगल। नोकरीक भाँज-भुँज लगबए लगल। नोकरियो सबहक तँ वएह हाल। गामक-गाम पढ़ल बिनु पढ़ल नौजवानक फौज तैयार अछि। एक काज-ले हजार हाथ तैयार अछि। जइसँ समाजक मूल पूजी, मानवीय पूजी आगिमे जरैत सम्पैत जकाँ नष्ट भऽ रहल अछि।

समय मोड़ लेलक। पढ़ल-लिखल नौजवान-ले नोकरीक छोट-छीन दरबज्जा खुजल। गामक स्कूलमे शिक्षा-मित्रक बहाली हुअ लगलै। जइसँ नव ज्योतिक संचार गामोक पढ़ल लिखल नौजवानमे भेल। ओना, समैयक हिसाबसँ शिक्षा मित्रक मानदेय मात्र खोराकी भरि अछि मुदा बेरोजगारीक हिसाबसँ तँ नीक अछिए। बगलेक गामक स्कूलमे रतनो आ लालोक बहाली भऽ गेलइ। पाँच तारीककेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करत। आगू नहि पढ़ैक दुख जेते दुनू भाँइक मनमे रहै तइसँ बेसी खुशी नोकरीसँ भेलइ। ओना, कोँपर सन बुधिमे कलुषताक मिसियो भरि आगमन नइ भेल छल। तथापि दुनू भाँइ बैस कऽ अपन परिवारक सम्बन्धमे सोचए-विचारए लगल। रतन लालकेँ कहलक- “बौआ, कोन धरानी बाबू अपना दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन से तँ देखले अछि। अपनो सभ एक सीमा धरि पहुँच गेल छी, तँए अपनो सबहक की दायित्व बनैए से तँ सोचए पड़तह?”

रतनक बात सुनि लाल बाजल- “भैया, अपना सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जइ धरतीपर श्रवण कुमार सन बेटा भऽ चुकल छैथ। पाँच तारीखसँ पहिने बाबूकेँ कलकतासँ बजा लहुन। हम सभ ठेलाबलाक बेटा छी, ऐमे कोनो लाज नै अछि। मुदा लाजक बात तहन हएत जहन ओ ठेला घिंचता आ अपना सभ कुरसीपर बैस दोसरकेँ उपदेश देबइ।”

मुड़ी डोला स्वीकार करैत रतन बाजल- “आइये बाबूकेँ चिट्ठी खसा दइ छिऐन जे पढ़िते गाड़ी पकैड़ घर चलि आउ। पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। दुनू भाँइक विचार अछि जे अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ डेग उठाएब।”

दुनू भाँइक विचार सुनिते माइक मन सुख-दुखक सीमानपर लसैक गेलैन। जरल घराड़ीपर चमकैत कोठा देखए लगली। आँखिमे नोर छिलैक एलैन। मुदा ओ दुखक नै सुखक...। ❑

⧖ गामक जिनगी, 2009 ⧖

बपौती सम्पैत

आसिनक अन्हरिया चौठ। गोटि-पँगरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनौमी-पितृपक्ष साझीए चलि रहल अछि। कियो-कियो बाप-दादा-परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो-दादी-परदादी निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीवे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा ईहो गोटि पँगरे। किछु गोरे ठेकिऔने जे एकादशी-के जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्ष-ले नौमी आ पितृपक्ष-ले एकादशी-के नोतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइए जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन खुअबैए। जेकरा ढढक कहैए आ किछु गोरे मातृपक्ष-ले महिलाकेँ आ पितृपक्ष-ले पुरुखकेँ नोत दऽ सेहो खुअबैए। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष 'मातृनौमी' आ दोसर 'पितृपक्ष'। नौमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि...।

दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खाइक मन भेलइ। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते छल कि पत्नी आबि कहलकै-

"घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि, भनसा बेर भऽ गेल, कखन आनब?"

"अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमैन बनाएब ताबे हम दौगले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबइ।"

गुलटेन हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लइते, मरचूनक दुआरे केनादन लगलै कि थुकैड़ कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौंड़ देलकै, दोसर काज पछुआइत देखि गुलटेनक मन आरो घोर-घोर भऽ गेल। मनमे उठलै- पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठामक फाट सीने दोसरठाम मसैक जाइ छै तहिना परिवारोक

काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू-मुहेँ नै ससैर रूकि गेलइ। चिन्ताकेँ अँटैकते गुलटेनक मनमे खुशी भेलइ। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवताकेँ होइ छैन ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी? ई दुनियाँ केकरा-ले छइ? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी नइ कि उपभोग करैक...। गुलटेनकेँ देखि आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना बाजल-

"तमाकुल खा लएह काका, तखन जइहह।"

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक- "बौआ, अगुताएल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी-काल नइ अँटकब।"

"एह काका! तोहूँ हरिदम अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नइ रहै छह।"

कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल लइते गुलटेनकेँ रसगर लगलै, सुआद पाबि बाजल- "बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन! एहेन टिपगर माल! कोन दोकानक छियौ?"

"काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक वेपारी साइकिलपर एक बोझ नेने बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीम रहल। एह! भरि राति ओ वेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला पछाइत एक्केटा तेहेन खिस्सा–रजनी-सजनीक– उठौलक जे ओरेबे ने करइ। जखन डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ- 'आब छोड़ि दियौ, बड़ राति भऽ गेल।' तखन जा कऽ छोड़लक।

भिनसर भने पोखैर-झाँखैर दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपर सँ साइकिल निकालि तमाकुल सेरियाबए लगल। हमहूँ गिलास धोइ चक्कापर रखि एलौं, जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल। कहलिऐ- 'ई की दइ छी?' ओ कहलक- 'हम वेपारी छी कोनो अभियागत नहि। तँए खेनाइक पाइ दइ छी।' आब तोंही कहह काका, ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत? की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पैत छी किने। एकरा केना आँखिक सोझहामे मेटाइत देखब।"

थूक फेक गुलटेन बाजल- "एहनो कियो बुड़िबक्की करए। पाभैर खेने हएत कि नइ खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक

केलह जे पाइ नै छूलह।”

अपन बड़प्पन देखि मुस्की दैत भुखना बाजल-

“ऐँह की कहिय काका! ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल- ‘से केना हएत। हम कि कोनो भूखल-दूखल छी कि वेपारी छी।’ मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐ। तखन ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक- ‘जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइए-ले दइ छी।’ सएह छी।”

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल-

“बौआ, अखन औगुताएल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।”

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। दोकानपर गेल। गुलटेनकेँ देखिते झिंगुर काका कहलखिन-

“अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअ!”

माथ हसोंथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल-

“अखन कटबै-जोकर कहाँ भेल हेन! जखन कानपर केश लटकए लगत तखन ने कटाएब।”

“बिसैर गेलह! काल्हिए ने बाबूक बरखी छिअ। हमरो चच्चा साहैबकेँ छिऐन। दुनू गोरे एक्के दिन ने मरल रहैथ।”

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेनकेँ धक्-दे मोन पड़ल। बाजल-

“हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जँ अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छुटिये जाइत।”

“अखनो किछु नइ भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहेन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोरे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।”

“अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर वेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब कि ओरियान बात करब आकि ओकरा सभकेँ बजबैले जाएब...।”

“असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे

तँ पाँच बरखी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैत अछि आ कम-सँ-कम एगारह गोरेकेँ खाइयोले दैत अछि। तोरा एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनौमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजी केँ तीर्थेपर बरखी पड़ि गेलैन, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नइ रहलैन। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकेँ खुअबै छहक तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना, ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलैनो तँ अपन महत रखैए किने।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेन दोकानदारकेँ कहलक-

"हे हौ घोघन साहु, झब-दे एक टकाक नून दएह।"

गमछामे नून बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस विदा भेल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदय पसीझ गेलइ। मोन पड़लै, बाबू अनका जकाँ नै छला। आगू-पाछूक बात जनै छला। जँ से नहि, तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितैथ। कोनो कि कमाइ-खटाइ नै छला। जँ से नै छला तँ कातिक मासमे ओते खरचा करि कऽ भागवत केना करबै छला। तैपर सँ भोजो-भनडारा करिते छला। हमरे-ले की कम केलैन? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलैन। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नइ होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी! जँ खेते रहैत आ खेती करैक लूरिए नइ रहैत, तँ छुच्छे खेते लऽ कऽ की करितौं। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए कि दाही, अछैते खेते हाट-बाजारसँ मोटा उघै छैथ। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि केकरोसँ अधला जीबै छी...।

अपन खुशहाल जिनगीपर नजैर अबिते गुलटेनक हृदय आनन्दसँ ओलैड़ गेल। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नहि, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे जेकरा अ आ नै लिखए अबै छै ओ 'मुरुख' अछि? बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मटियो तेल आ चिन्नियोँ अनै छला। बड़का-बड़का सर्टिफिकेटोबला सभकेँ देखै छिऐन जे दारू पीब लेता आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंगरेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छैथ! तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छला। खाइ बेरमे आँगनमे नइ रहै छेलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छला। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छला आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बुझि पड़ै छेलैन तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दइ छेलखिन

नइ तँ ओते छोड़ि कऽ उठै छला। आ-हा-हा! एहेन बाप होएब की अधला छी। जखन काज करए जाइ छला तँ संगे नेने जाइ छला आ काजक लूरि सिखबै छला। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छेलैन। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नइ ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बाउल उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलैन जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समय होइ छइ। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदैत कऽ सकैए। जेकरा लूरिए ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत.?

अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहिबला गाछीक मचकीपर नजैर गेलइ। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि! बड़क गाछपर सँ बई काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला , पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झूलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत.! असकरे कृष्ण-राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करै छला, बौसरियो बजबै छला आ आसो लगबै छला। मुदा अखन तँ देखै छी जे बजा कियो बजबैए, नाच कियो करैए आ गीत कियो गबैए। तेहने ने देखनिहारो अछि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैए तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैए तँ कियो ओकर कानक झूमकाकेँ। गौनिहारक आवाज सुनैए कि ओकर मुँह देखैए.!

नूनक पोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन बाजल-

"बाबूक बरखी काल्हिए छी। बिसैर गेल छेलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी-ले जे चाउर रखने छी, ओकरा निकालि रौदमे पसाइर दियौ। राहैड़ सेहो उलबए पड़त। बेरू-पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइए पौड़ल जाएत। ओना अम्हौरपर सौंझुको दूध जनैम जाएत।"

पतिक बात सुनि मुनिया बजली-

"एहेन अहाँ बिसराह जे छी से सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत! ने

कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाएकेँ खबैर देलिऐन।”

“अच्छा सभ हेतइ। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहैथ जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छैथ आ पारो लगौता।”

कहि, गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना नोत दऽ चोट्टे घुमि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर, माने लूरिगर तेहने बिसराहो। ई सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दूहब, डरबुक-सँ-डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पाँगब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांङ्गिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटैक नाथब, हर लगाएब इत्यादि काज समाजमे केकरो कऽ दइत। करबो केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पैत बुझैए।

बरखी-भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसैर गेल। अपन दायित्व बुझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लगली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइए तहिना समाजोक लोक आबए लगलैन...।

रवियापर नजैर पड़िते गुलटेन बाजल-

“रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइए-ले छेलौं। भने आबिए गेलह। बहुत दिन जीबह।”

रविया-

“किए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी आँगनमे बजली; तब बुझलौं।”

“ठीके बुझलहक। बिसैर गेल छेलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलैन। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नइ हएत।”

“हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।”

“चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब

मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुएबैन से नीक हएत?"

"सौंझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। केते दूध पौड़बहक?"

"दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।"

"अदहा मन सँ हेतह?"

"अपना सभमे दहीए केते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आकि फल-फलहरी खाइयो चाहत से आनत केतए-सँ।"

"हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो किए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमैन-कदीमा आ बाड़ीमे भँट्टा अछिए। तइले पाइ किए खर्च करबह। औगताइमे अदौरी बनौल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?"

"मन होइए जे बड़-बड़ीक ओरियान करी।"

"तों सनैक गेलह हेन। बड़-बड़ीक घाटि केते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।"

"हँ, से तँ ठीके कहलह।"

"अखन जाइ छिअ। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह, आकि पुजौनिहारो औथुन।"

"अपना सभमे केते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छइ।"

भगिन-पुतोहु दालि दड़ैले अबै छेली। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजैर पड़लैन। मुँह बिजकबैत बजली-

"बुढ़ा, अपनो मरता आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।"

कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़ली।

गोसाँइ डुमिते भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भाइक माथपर चाउर-दालिक मोटरी। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आँगन पहुँच सिंहेसरी कानल नहि, माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइ छइ। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना

बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खुट्टापर लगहैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत.?

ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक-

"अँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपए नइए जे काल्हि बाबाक बरखी छिऐन आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?"

तैबीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेल। माथपर मोटरी रहबे करै तखने मुनिया सिंगहेसरीकेँ कहलक-

"दाइ, हमर कोन दोख, मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहेन बिसराह छथुन जे बिसैर गेलखुन। आइए बुझलौं।"

माइक जवाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नइ बुझि माएकेँ अगुअबैत बाजल- "जाबे बाबा जीबै छला ताबे केते मानै छला। आब जखन ओ नै छैथ तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबैन। एगारहो गोरेक तँ ओरियान करि कऽ अबितौं।"

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै-काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइ छइ। मुदा हम तँ बिसैर गेल छेलौं। ..सामंजस करैत गुलटेन बाजल-

"पाहुन किए ने एलखुन?"

सिंहेसरी बाजल-

"से तूँ नइ बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।"

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजली-

"ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिए जेहने ई तेहने उ। अहूठीम तँ दहीक ओरियान भइये रहल हेन। तइले तोरा किए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइयेक छिऐ, आकि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-वौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोइ गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।"

पत्नी आ बेटीकेँ शान्त होइत देखि गुलटेन मुस्की दैत बाजल-

“गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। केते भारी काजे अछि।”

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लगि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने बाजल- “बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?”

हँसैत सिंहेसरी बाजल-

“बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन कटैए।”

भोजमे खूब जश गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एमहर-दौड़ तँ ओमहर-ताकमे दुनू परानी लगल रहल। मुनियाक छाती केराक भालैर जकाँ कँपैत रहलैन। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहली। जेना भुख-पियास केतौ पड़ा गेल। मुदा भोजक जश दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक-

“बाबू, सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।”

खेला-पीला पछाइत गुलटेनक मनमे सिनेमाक रील जकाँ सभ काज नाचए लगल- ठीके ने लोक कहै छथिन जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छेलैन तहिना ने हेतैन। आ-हा-हा! ओंगरी पकैड़-पकैड़ घर बन्हैक लूरि सिखौलैन! जीबले बारहो मासक काज सिखौलैन.!

मने-मन गुलटेन पिताकेँ स्मरण करैत गोड़ लगलक। ❑

⌛ अर्द्धांगिनी, 2013 ⌛

रेहना चाची

दिन लहसैत किशुन भाय लौफा हाटसँ घुमती बेर जखन दीप पहुँचला तँ बाटपर ठाढ़ रेहना चाचीपर नजैर पड़लैन। कोराक बच्चा-प्रपौत्रकेँ रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत रहथिन।

रेहना चाचीक 'आवाज' सुनिते किशुन भायकेँ सात-आठ बर्ख पहिलुका बुझि पड़लैन मुदा सत्तैर बर्खक झूर-झूर भेल शरीर, धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक सुरखी देखि शंको भेलैन। ओना, सात-आठ बर्खसँ किशुन भाय रेहना चाचीकेँ नै देखने रहैथ तँए हँ-नै दुनूमे मन फँसल रहैन। फँसबो उचिते छेलैन। एक दिनमे तँ राज-पाट उनैट जाइए, सात-आठ बर्ख तँ सहजे सात-आठ बर्ख भेल।

मुदा तैयो मन तरसैत रहैन, तरंगी होइत रहैन जे रेहना चाचीक आवाज छी। लग्गा भरि हटि बाटेपर साइकिल दहिना पैरक भरे ठाढ़ केने, रेहना चाचीपर आँखि गड़ौने मने-मन विचारिते छला आकि अनायास मुँह फुटलैन-

"रेहना चाची।"

'रेहना चाची' सुनि चाची बच्चापर सँ नजैर उठा चारू दिस खिरौलैन। दछिनवारि भाग साइकिलपर ठाढ़ भेलपर नजैर पड़लैन। चेहरासँ चिन्ह नै सकली। मुदा कानमे किशुनक आवाज ठहकलैन। आवाज ठहैकते बोल फुटलैन-

"बौआ, किशुन।"

'बौआ किशुन' सुनि किशुन भायकेँ जीहमे जान एलैन। जान अबिते जीहपर राखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप-रंग आ बोल ठहकलैन। वएह रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ दच्छिन भाग लखनौर, उत्तरमे बेरमा, पूबमे कछुबी आ पच्छिम सुखेत भरि छेलैन। यएह छेलैन हुनकर कर्मभूमि आ दीप छेलैन पतिभूमि। एक तँ अहुना दीप ओहन गाम अछि जइमे छोट घराड़ीक

परिवार बेसी अछि। जइसँ बरो-बाट घराड़ीए बनि सुखसँ रहैए। पहिने घराड़ीपर घर तखन ने जाइ अबैले आकि चलै-फिड़ैले बर-बाटक खगता होइए। बाटक काज तँ एक पेड़ियो, खुरपेड़ियो आ धुरपेड़ियोसँ चलि सकैए मुदा घराड़ी बिना 'घर' बाँसक धूजा बनि थोड़े फहराएत...।

घराड़ी भरि जमीनमे बास करैवाली रेहना चाचीक जीविकाक बेवसाय छेलैन, भोरे अपन जवाबदेहीक अँगना-घरक काज सम्हारि, पथियामे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक पारक हिसाबसँ निकैल एक अनिया अलता, पैयाही डोरा, पैयाही सुइयाक संग आनो-आन वौस लऽ गामक सीमान टपि आन सीमानमे भरि दिन गमा साँझ पड़ैत फेर अपन सीमानमे पहुँच जाइ छेली।

मिथिलाक जे गौरव-गाथा अछि- दुआरपर आएल बाट-बटोही, भूखल-दूखल जँ खाइबेर पहुँचैत वा जलखैए बेर पहुँचैत आकि जखन जे समय रहल, पहिने हुनकर आग्रह करिऐन। ओना, खाधुरोक अपन राज-पाट छइ। जँ से नै छै तँ ओइठामक भोजैतक कोटा हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियानक पछाइत किए नतहारी ताकब छइ। ओहन नतहारी जकाँ तँ नहि मुदा हिस्सामे बखरा तँ लोक निमाहिते अछि।

कोनो गाम अबैसँ पहिने रेहना चाची बिसैर जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की आ रहब केतए। परिवार परिवारक बीच खाली कारेबारक सम्बन्ध नहि। घन्टा-घन्टा बैस रेहना चाची अपनो जिनगी आ परिवारो-समाजोक जिनगीक खिस्सा-पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आएल छेली। साइकिलपर सँ उतैर किशुन भाय, स्टेण्डपर साइकिल ठाढ़ कऽ बजला-

"चाची गोड़ लगै छी?"

किशुन भाइक गोड़ लागब रेहना चाची सुनबे ने केली जे असीरवाद दितथिन, ले बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन-

"बौआ, माए नीके छह किने। जहियासँ गाम छूटल, कारोबार गेल तहियासँ चीन्हो-पहचीन गेल! के केतए जीबैए आ केतए मरि गेल...! मरि गेल मनक सभ सखी-बहिनपा...!"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाइक माथ चकरेलैन। जहिना एक-जनिया, दू-जनिया, बहु-जनिया ओछाइनो-बिछाइन चकराइत जाइए तहिना बुधिओ-बुधियारी आ चासो-बास तँ चकराइते अछि। तहिना किशुन भाइक मन

चकरा गेलैन। चकरा ई गेलैन जे गाम छूटल! गाम किए छूटल? गुम-सुम भेल किशुन भाय रेहना चाचीक झूर-झूर भेल चेहरा देखए लगला, जेना खेसारी-बदामक बीड़िया झूर-झूर भेलो पछाइत गरदी तरकारीक रूप पकैड़ भोज्य भोग पबैक सुख पबैत अपन जिनगी चैनसँ गमबए चाहैए, तहिना चाचीक मन सेहो पुलकैत रहैन। मुदा बिनु बुझनौं तँ नइने लोक बुझैत। कोनो बात सुनब आ बुझब, दू भेल। बुझैले बेसी सुनए पड़ै छै, सुनै तँ लोक एकहरफियो अछि। भाय पुछलखिन-

"चाची, गाम केना छूटल?"

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रेहना चाचीकेँ एको मिसिया बिसबिसी नै लगलैन। जेना नीक जिनगी पाबि कियो नीक सिरासँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना भगिन-जमाए पाबि रेहना चाची खुशी छैथ। मुदा पेटमे पेटेले झगड़ा उठि गेलैन। झगड़ा ई उठलैन जे बीतल जिनगीमे जे घटल सत बात अछि ओ बाजल जा सकैए की नहि? ओना, आब ओइ बातक खगतो नहियेँ जकाँ अछि मुदा इतिहास तँ काल-खण्ड विहीन भइये जाएत?

रेहना चाचीक मन बेकाबू भऽ गेलैन! मुदा बिसवास देलकैन। बिसवास ई देलकैन जे अबैया दिन सुखैया तँ ऐछे, तखन किए ने अपन जिनगीक बात भाइयो-भातीजकेँ कहि दिऐ। आब कियो जिनगी लूटि लेत।

बजली-

"बौआ, सात-आठ बर्खसँ गाम सभ छोड़लौं, ओना, खटनी छुटने देहो हर-हरा गेल, मुदा मन अखनो कहैए जे जानि कऽ रोगा गेलौं...। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी हुअ लगल, जे आन गामक लोकक कारेबारेटा नहि, चलैक रस्तो कटि-खोंटि गेल।"

एक संग किशुन भाइक मनमे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा जहिना मुड़ी आ टाँग कटल लहासकेँ परखब कठिन भऽ जाइए तहिना चाचीक बात सुनि भेलैन। छीना-झपटी आकि झपटी-झपटा, वएह ने जे जहिना प्रखर वक्ता लोकैन अपन मेहिका चाउरमे मोटका चाउर फेँटि काज ससारि लइ छैथ आकि मोटके चाउरमे मेहिका फेँटि दइ छथिन..? मुदा अनेरे मन वौअबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-

"चाची, जहिया जे भेल, से भेल। आब नीके छी किने?"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाची विस्मित भऽ गेली। 'विस्मित' ई भऽ गेली जे यएह देह छी, अपन गाम लगा पाँच गामक लोकसँ हबो-गब करै छेलौं आ खेबो-पीबो करै छेलौं, कमाइयो-खटा लइ छेलौं, से तँ छिनाइए गेल! ओना, आब अपन उमेरो ने रहल जे माथपर पथिया लऽ चारि गाम घुमि कारोबार करब। रेहना चाची बजली-

"अपन बेटा-पोता अल्ला हेरि लेलैन, मुदा फेर वएह ने देबो केलैन।"

रेहना चाचीक उत्तर किशुन भाय नीक जकाँ नै बुझि सकला। तेकर कारण भेलैन जे लगले सुनला जे 'बेटा-पोता हेरि लेलैन' आ लगले सुनला जे 'प्रपौत्र बच्चा छी' आ भगिन-जमाइक परिवारमे रहै छी...।

मनकेँ सोझरबैत किशुन भाय बजला-

"चाची, हमरा ओहिना मोन अछि, जखन माइयो आ अहूँ एकेठीन बैस खेबो करी आ नीक-अधला गपो करी।"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तैर बर्खक जिनगी बिजलोका जकाँ मनमे चमकलैन। करियाएल मेघ, बदरियाएल मौसम, सरदियाएल रातिमे जखन बिजलोका चमकै छै तखन ओ अपन इजोतक संग आवाज करैत कहै छै जे हम लाली इजोत छी नै कि पीड़ी। पीड़ी दूर-देशक होइ छै लाली लगक। प्रमाण असतक होइ छै आकि सतक? सत तँ अपने सत भऽ सौंसे फल फड़ जकाँ अछि।

रेहना चाचीक आगूमे ठाढ़ किशुन भाइकेँ ने 'अक' चलैन आ ने 'बक'। दिन सेहो लुक-झुका गेल। सुरूज तँ डुमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल छल। किशुन भाय बजला-

"चाची, अखन तँ दिन निसचित नै भेल मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ लिऔन करै छी।"

किशुन भाइक 'लिऔन' सुनि रेहना चाचीक मन ठहकलैन। मन ठहकलैन ई जे आब वएह जुग-जमाना रहल आकि ओइसँ नीको-अधला भेल?

नीक-अधलाक बीच रेहना चाची चपा गेली। जइसँ बोथिया गेली। बोथिया ई गेली जे की सम्बन्ध छल! कोरा-काँख तर केते दिन किशुनलालकेँ नेने छी, पाबैनमे पबनौट खुएलौं आ अपने केते खेलौं, तेकर कोन हिसाब। जिनगीए ओही

भरोसे बीतल किने...।

आइ ओइ किशुनलालक बेटाक बिआह छी, की आब ओतए पहुँच पाइब सकै छी? केना पाबि सकै छी? जैठाम लोक अधला काज करै छल तैठाम गंगाजलसँ सिक्त कऽ नीक बनौल जाइ छल आ अखनो बनौल जाइए। मुदा ओहन तँ जगहे खिया गेल। मुदा जैठाम गंगेजल अधला बनि जाएत, तैठाम की उपाय...।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलैन। मुदा सौंझुका तारा जकाँ जेना मनमे भुक-दे उगलैन- जँ कहीं काजेक चर्च पाछू पड़ि जाएत आ अनेरूए गप साँझ पड़ा देत, तइसँ नीक जे काजक नाँगैर पकैड़ धार पार होइ। बजली-

“बौआ, ढौओ-कौड़ी लेलहक हेन?”

ढौआ-कौड़ीक बात सुनि किशुन भाइक मन पुलकलैन। बजला-

“चाची, बिआहक अखन गपे-सप उठल हेन, ओ सभ गप पछुआएले अछि, जखन बिआहमे एबे करब तखन सभ गप बुझा देब।”

किशुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मनमे उठलैन, जेते अल्ला-मियाँ परिवार सभकेँ झाँपन-तोपन दैत रहथिन तेते नीक। भगवान सभकेँ नीक करथुन। बजली-

“किशुन बौआ, देखिते छह जे अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै-जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से...।”

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।❑

⌛ लजबिजी, 2014 ⌛

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

किरिण फुटलो ने छल कि चौकक चबूतराबला चापाकलपर हल्ला भेल। ओहन हल्ला नइ भेल जेना सात गामक लोक एक्केबेर करैए, मुदा ओहनो नइ भेल जे दू पथियासँ कम होइ।

मोहनपुरवाली अपन पड़ोस गामवाली, माने लालपुरवाली-केँ झटकी मारि कहलकैन-

"ओ बुढ़िया! खाली भभटपन लधने अछि, मरैके मन ने ते उठि-उठि आगि तपै छी।"

पड़ोसिनीक विचारमे हुँहकारी भरैत लालपुरवाली टोकारा भरलैन-

"जेकरा जे घिनाएब लिखल छै ओ कियो बाँटि लेत।"

चबूतराक निच्चाँमे सकुनी दादीक परपोती–सुदामा–दतमैन करैत टहलैत ठाढ़ रहए। पूर्ण जिनगी जीनिहारि अपन एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीक खिदहाँस सुनि सुदामा ललैक गेल।

झटैक कऽ चबूतरापर चढ़ि मोहनपुरवालीकेँ गट्टा पकैड़ बाजल-

"अहाँ सभ जे एना केकरो अकची-दोकची जहपटार छीटने फिड़ै छी से पहिने हमरा ई बुझा दिअ जे दादीकेँ जनै केना छिऐन?"

एक तँ मोहनपुरवालीकेँ पड़ोसिनी लालपुरवालीक भर, दोसर एके तरपानमे सात समुद्र सेहो पार करैत रहए। माने एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीपर थाल-कादो फेकैत रहए। जे बात सुदामा बुझि गेल।

परिस्थिति विषम होइत गेल, तेकरे हल्ला भेल। अन्तमे यएह फरिछौट भेल जे सात दिनसँ सकुनी दादी बीमार छैथ, एक्केटा रट लगल छैन जे गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब तखन प्राण छुटत। सएह चरचा गाममे पसैर गेल। जेकरा

व्याख्याकार सभ अपना-अपना ढंगे कियो हाथीक नाँगैर छुबि हाथी बुझैए तँ कियो सूढ़ छुबि...। मुदा बात से नइ अछि। बात अछि भरल-पुरल परिवारमे सकुनी दादीक पति पचासे बर्खक अवस्थामे मरि गेलखिन, पचास बर्खसँ ऊपरसँ घरक भार उठौने सकुनी दादी आइ एक साए तीन बर्खक अवस्थामे ओछाइन धेने खाली ओतबे बात बजै छैथ, दोसर कोनो बात नहि बजै छैथ। अन्तो-अन्त सभ चुप होइत गेली।

जखन हल्ला भेल तखन अपनो नीन टुटि गेल रहए, मुदा ओछाइन नइ छोड़ने रही। नइ छोड़ैक कारण छल जे बिनु बुझने केना जाएब। ओना बुझैयोक केते रस्ता अछि। जहिना एक कानब ओहन होइए जे मृत्युक सूचना दइए तँ दोसर हँसैक सूचना सेहो दइते अछि। तहिना ने हल्लोक अछि, केतौ चोर-चोरक हल्ला होइए, तँ केतौ अगिलग्गीक हल्ला, केतौ झगड़ा-झंझटक हल्ला होइए तँ केतौ नाच-तमाशाक। मुदा से हल्लाक अकान नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए अनकासँ पुछब जरूरी भइये गेल।

ओछाइन छोड़ि चौक दिसक रस्ता पकड़लौं। चौको तँ चौके छी। ने गामक ठेकान आ ने चौकक ठेकान। केतौ साहित्यिक चौक, तँ केतौ राजनीतिक, केतौ संगीतक तँ केतौ सिनेमा-सर्कसक, केतौ ताड़ी दोकानक महराइ तँ केतौ दारू दोकानक बुबकी।

लोक चौकपर किए बैसत? जँ नइ बैसब तँ दस गोरेक विचारक आदान-प्रदान केना हएत, आ जँ से नइ हएत तँ अपन-अपन गाम भेल, जेना मन फुरए तेना राखू।

दरबज्जापर सँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि झबड़ी दीदीकेँ अबैत देखलयैन। मनमे खुशी उपकल, खुशी ई उपकल जे लोको तँ लोके छी, केकरो फुटल लोटा जकाँ पेन फुटल छै तँ केकरो दहीक तौला जकाँ कान ओदरल छै...। मुदा से नइ झबड़ी दीदी गामक बेटी छैथ। दुरागमनक मासे दिनक पछाइत पीसा मरि गेलखिन। तहियेसँ वैधव्य धारण केने पिताक परिवारमे आबि बसली। गामक बेटी झबड़ी दीदी, तँए गामक केकरोसँ अनोन-विसनोन किए हेतैन।

सबहक ऐठाम आएब-जाएब काज-उदेममे अदौड़ी-बरी खोंटब इत्यादि सामाजिक काजसँ जुड़ि समाजी रूपमे रहि रहली अछि। एकटा पैघ गुण ईहो छैन जे जेही नजैरसँ समाजकेँ भाए-बोन बुझै छैथ, तहिना विचारोक मिलानी रखने

छैथ जइसँ शत-प्रतिशत बात सत् लग तक पहुँचल रहै छैन । तँए दीदीक भेँटकेँ शुभ मुहूर्त बुझि पुछलयैन- "दीदी, केम्हर हल्ला भेल छेलइ?"

जेना दीदी ओइ झगड़ाक पनचैतिये केने अबैत होथि तहिना बजैक सुर-सार मुँहपर चमकैत रहैन। होइतो अहिना छै, पञ्च जँ अपन पनचैती लोककेँ जना नइ देलक आ पेटे-पेट रखि लेलक तँ गोल-माल नइ किए हएत। दीदी बजली-

"बौआ, गामक ते तोहीं सभ ने पुरुख-पातर भेलहक, सोल्होअना गलती मोहनपुरवालीक छेलइ, मुदा समाजो तँ समाज छी, एहेन तँ नइ ने जे सामाजिक बन्हने टुटि जाए।"

दीदीक सहगर विचार सुनि आरो बुझैक विचार भेल, विचार ई भेल जे ठाँहि-पठाँहि केकरो दोखी कहि देब आ बात बुझले ने रहत, तखन तँ अनेरे तेसर बखेड़ा बखारी बनौत। पुछलयैन- "दीदी, कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

जेना एकतोर महराइ गाबि महरैया साँस छोड़ैए आ मरसिया एकटा खतम करैत एके धुनमे दोसर शुरू करैए तहिना झबड़ी दीदी बजली- "बौआ, तूँ सभ बेटा-भातिज भेलह, तोरा लग नइ बाजब तँ केकरा कहबै।"

दीदी जेना अपन पनचैतीक भारक कान्ह बदलैत होथि तहिना बुझि पड़ल। कान्ह बदलब दुनू होइए। एक कान्हपर सँ दोसर कान्हपर लेब आ दोसरकेँ कान्हपर देब सेहो होइए, से बुझि पड़ल। कहलयैन- "कनी तखन जैड़ेसँ कहियौ, दीदी?"

झबड़ी दीदी बजली- "सकुनी दादी ओझाइन पकैड़ लेलैन जे दिन छैथ से छैथ। हुनके-ले लोक सभ रसगुल्ला, लालमोहन, अमीरती सभ लऽ जाइ छैन तँ देखिते कहै छथिन- 'गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब।' तही बातक झगड़ा भेल।"

दीदीक गपसँ बुझि पड़ल जे सभ बातक भाँज नइ लगत। तहूमे जँ पुछि दैथ जे एकर की हेबा चाही, तखन तँ तेहेन गरगट ने गरगोटिया देत जे आरो बेसी पहपैट हएत। तइसँ नीक जे ऐठामसँ आगू ससैर ओतइ चलि जाइ। मनमे ईहो उठल जे भने भोरे-भोर दादीक दर्शनो हएत आ कौल्हुका भोरक भेँटक असीरवाद सेहो माँगि लेब। कहलयैन- "दीदी, अहूँ अँगना-घरक काज देखियौ आ हमहूँ कनी आगू बढ़ि देखै छिऐ।"

दीदी मानि तँ गेली मुदा मानितो-मानितो बजली- "एहेन होइ जे एकटा

नव-नौतारि कनियाँ गामक सीरे चाटए? कियो अपना बौहकेँ सम्हारि किए ने रखैए!"

दीदीकेँ तरङैत देखि निकैले जाएब नीक बुझलौं। विदा होइत कहलयैन-

"घुमि कऽ अबै छी तखन सब गप फरिछा कऽ करब।"

हमर गप झबड़ियो दीदीकेँ नीक लगलैन। बजली- "ओम्हरसँ एला पछाइत हमरो सब बात कहिहह।"

प्रश्नसँ बुझि पड़ल जे भैरसक दीदीक मन जेना भीतरे-भीतर जरि रहल छैन । कहलयैन- "चाहक ओरियान कऽ कऽ राखब। अपना गामपर जाइसँ पहिने अहाँक भेँट कऽ लेब।"

सकुनी दादी बीस बर्खक अवस्थामे निरोग कनियाँक रूपमे अपना गाम एली। शरीरेसँ निरोग नहि, लुइर-बुइधसँ सेहो। निरोगक एक अर्थ होइए डॉक्टरी जाँच-परख केलाक पछातिक निरोग आ दोसर होइए रोगसँ लड़ैक उर्जवान निरोग। ऐठाम दोसर तरहक निरोग दादी सभ दिन रहली। गाम अबिते गामक समाज कियो पुतोहु, कियो काकी आ कियो भौजी मानि अपना-अपनीकेँ सभ हथिया लेलकैन।

ओना सकुनी दादीक पिताक परिवार आ ससुरक कहियौ आकि पतिक परिवारमे एक जाति रहितो स्पष्ट दूरी बनल छेलैन, अर्थक नजरिये। मुदा दुनूक दूरी मेटा गेल, जातिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैमे। बेटा-बेटीक बिआह तँ लोक जातियेमे करैए।

श्रमशील परिवारसँ निकैल दादी निम्नवर्गीय किसान परिवारमे आबि गेली। नैहरमे अपन खेत-पथार नइ रहने सकुनी दादी अनका खेतमे चौदहमे बर्खक अवस्थासँ माता-पिताक संग काज करैत आबि रहल छेली। जइसँ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखि नेने छेली। अगहन-पूसक धानक लड़ती-चड़ती, माने धान काटब, तैयार करब, नार-पात समटब इत्यादि, निमाहला पछाइत धानक कुट्टी सेहो अपना ढेकीमे करै छेली, जेकर निर्धारित बोइन तँ भेटते रहैन जे तैसंग गुड़ो-खुद्दी सोल्होअना भेट जाइ छेलैन। ओही महिक्का गुड़ाकेँ खुद्दीक चिक्कसमे मिला रोटी बनबै छेली जे अपनो आ परिवारोक लोक खाइ छेलैन।

सकुनी दादीक सासुरक परिवार निम्न वर्गक किसान परिवार। ओहन

परिवार जे रूढ़िवादी सोचसँ जकैड़ अपन बाड़ी-झाड़ीसँ लऽ कऽ चर-चास धरि बटाइ लगा, परश्रमावलंबी बनि चुकल छल। अपन मूल पूजीमे ह्रास हएब सोभाविके छै। मूल पूजीक माने भेल अपन श्रमक संग अपन अर्थो। जँ से नइ तँ ओ मूल पूजीसँ इतर भेल। ओना महाजनो आ बैंकोसँ लोक कर्ज लऽ पूजी निरबैत अछि, मुदा ओ अलग भेल।

सासुर परिवारमे अबिते सकुनी दादीक अपन लूरि चीज देखि मनमे औढ़ मारऽ लगलैन। औढ़ ई जे अपने सभ पुरुख-पात्र बैस गप-सप्पमे दिवस गूदस कऽ रहला अछि मुदा जिनगीक ठेकाने ने छैन। अपने दरबज्जापर पाहुन-परक जकाँ पुरुखकेँ बैसैक आदत आ महिलाकेँ अँगनाक भीतर बान्हि कऽ राखब। अधिकांश काजकेँ निषेध कहि निषेध केने छैथ। आँगनसँ बाड़ी घुमै-देखैक विचार ससुरक सोझ सकुनी दादी रखलैन। विचारेटा नइ रखलैन ईहो कहि देलखिन जे ऐ घरमे हमरो साझी अछि तँए अपना घरकेँ अपना लूरिये-बुधिये चलाएब। पाछू हटैत ससुर निर्णय देलखिन- “जेहने बास तेहने अगवास, किए ने घुमब-फिरब। कोनो कि अनकर छिऐ अपन छी, अपने नइ देखब तँ आनक आशा केतेकाल।”

तीन बर्ख धरि बाड़ी-चौमास घुमि-फिरि सकुनी दादी देखैत रहली। मने-मन समयानुकूल विचारैत रहली। मन कड़कैत रहलैन, तरसैत रहलैन, दहलैत रहलैन...।

..चौमास सन खेत जइमे फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक धनमण्डल लगबैक शक्ति अछि ओ कुरथी-तेबखा, भाँग-धथूरक बोन-झाड़ बनि घरक अगवास बनल अछि!

तीन बर्खक पछाइत सकुनी दादी आँगनसँ छलांग लगा बाड़ीमे कुदली। अखन धरि जे परिवार अपना हाथे भूमि छेदनकेँ वर्जित केने छल ओइमे झमार पड़ल।

सकुनी दादीकेँ खेतमे पदार्पण भेने परिवारमे भूचाल उठल। भाँग-बथुआ उपजैबला खेत फल-फलहरीसँ भरि गेल। मुदा से विचारोक क्षेत्रमे परिवारमे उठबे कएल। श्रमहीन आ श्रमशीलक परीक्षा आँखिक सोझ हुअ लगल। सकुनी दादीक बगावत परिवारमे आगि पजारि देलक। अन्तो-अन्त ससुर अपन निर्णय सुनबैत सकुनी दादीकेँ कहलखिन- “कनियाँ, हम चौथापनमे आबि गेल छी, ऐगला जिनगीक कोनो ठेकान नइ अछि, मुदा तँए अहाँक विचारक कदर नइ करब सेहो

नीक नहि, तहूमे अहाँ अपन बाँहि-बलक परिचय दऽ देने छी।”

कहि ससुर चुप भऽ गेलखिन, मुदा सकुनी दादी खरिआरि कऽ पुछलखिन- “इतिहास बुझू आकि वंश ओ एक क्रम अछि, चलैत रहत, मुदा समयानुकूल विचारो आ काजो तँ बदलबे करत। तइले काज केनिहारो ने चाही।”

सकुनी दादीक विचार सुनि ससुरक मन वौआ गेलैन। मनमे रंग-रंगक विचार उठऽ लगलैन। अपन सबहक सात्विक जिनगीमे जबरदस धक्का लगल। वैचारिक क्षेत्रमे सात्विक्ता बनल रहल मुदा बेवहारिक क्षेत्रमे, माने कर्मक क्षेत्रमे ओकर ह्रास भेल। जइसँ जिनगीक दूरी बनैत गेल। ओ बनैत-बनैत एते दूर भऽ गेल जे एक दिस सात पर्दाक संग नारीक बासभूमि बनल तँ दोसर दिस विभत्सता बढ़ल। खेत-पथारक बीच किसान-जमीनदारक बीच झीका-झीकी चलैत रहल खेतक उपज-सम्पैत नष्ट होइत रहल, गरीबी बढ़ैत रहल, पेट पोसैले, माने पेटक पोस खातिर लोक, पड़ाइत रहला। अन्तो अन्त निर्णयपर पहुँच ससुर कहलखिन-

“जाबे धिया-पुता बाल-बोध छल ताबे सेवा करैत परिवारक गाड़ीकेँ चलबैत रहलौं, मुदा आबक परिवारक गाड़ी तँ अहीं सभपर ने चलत।”

पिताक विचारक प्रभाव बेटोपर आ पुतोहुओपर पड़लैन। दुनूकेँ जिनगीक महान संगी बनैक अवसर भेटलैन।

पचास बर्खक अवस्थामे सकुनी दादीक पति मरि गेलखिन। सासु-ससुर पहिनहि मरि गेल रहैन। पाँच सन्तान- चारि बेटी एक बेटा-क संग सकुनी दादी परिवारक रंगमंचपर आबि गेली। पतिक बेमारीक इलाजमे परिवार खिलैच गेलैन, तैपर पतिक मृत्यु सकुनी दादीक आँखिक सोझमे, माने जिनगीक सोझमे अमवसियाक अन्हार जकाँ दुनियाँ अन्हार भऽ पसैर गेलैन। एक दिस पतिक मृत्युक पछाइत विधवाक कलंक देखैथ जे देखौआ, चोरौआ दुनू होइए, आ दोसर दिस छअ आदमीक ओहन परिवार अछि जइमे चारि बेटीक बिआह-दानक संग पाँचम अपन बेटाक परिवार ठाढ़ करब अछि।

पाँचो बेटा-बेटीक परिवार बसबैत दादी तेसर पीढ़ीक परिवारमे पहुँच गेली। अपना संग अपन पुतोहु, पीठपोहू भेलैन। पीठपोहुओ केना ने होनि, जे काज एक नारी कऽ सकैए ओ दोसरो तँ काइए सकैए। तेतबे किए जे समयक संग बहुत आगूओ कऽ सकैए।

तीन सीढ़ीक निच्चाँ परिवारक जे अचार-विचार रहलैन ओ एकपुरखियाह

रहलैन। एकपुरखियाह भेनौं आगू ससैरते रहलैन। ससरबो केना ने करितैन, सभ घरमे ओते काज तँ ऐछे जेते लोक अछि। अपन-अपन खाड़ी बनल काज, सभ अपन-अपन जिनगी ओइमे रमौने रहल...।

आइ चारिम पीढ़ीमे चारिटा पोता सकुनी दादीकेँ छैन, जे तीन भाँइ अपन-अपन परिवारक संग एक भाँइ गौहाटी, दोसर बंगलौर, तेसर दिल्लीमे रहै छैन। एक भाँइ, माने जेठका बेटा अपन टेक धेने छैन। टेक ई जे चारि पीढ़ीक बीचक परिवार अछि, माए-बाबू, दादी, तैपर सँ सकुनी दादी। वंशक जेठ सन्तान हमहीं छिऐ तँए नइ सेवा केने सभसँ बेसी पाप हमरे लागत। मुदा एकसंग जँ सभ मिलि रहब नीक-अधलामे संगे रहब, तखने ने ओइ पापसँ मुक्ति पाबि सकै छी।

सकुनी दादी ऐठाम पहुँचते देखलौं जे दादी टहैल रहली अछि। मुदा बिनु पएर छूने असीरवादो केना माँगब? तइ बीचक जे रस्ताक दूरी अछि तइमे मुहोँ केना चुप रहत। ई बात बुझल अछि जे दादी सभ दिन जहिना काजमे टनाटन रहली तहिना बोलो टनाटन रहलैन, मुदा आब तँ अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, केना बोलीमे टनटनी औतैन। आ जँ से टनटनी नइ औतैन तँ केना बुझब जे असली चानी छैथ आकि नकली? तँए झटहा फेकैत बजलौं-

“दादी, आबो अहाँकेँ कठीए लाड़ैन नीक लगैए?”

‘कठिया लाड़नि’ केते रंगक होइए, ऐ फरिछबैमे दादीकेँ ओते देरी लगलैन, जाबे हम लगमे पहुँच पएर छुबि नेने छेलिऐन। पएर छुबि संकल्प करबैत पुछलयैन- “दादी, काल्हियो अहिना गप-सप्प करब किने?”

केना हमर मन दादी तोड़ितैथ तँए जोड़ैत बजली- “हँ-हँ काल्हिये किए परसुओ गप-सप्प करब।”

ओना दादी अँगनेमे घुमैत-फिरैत रहैथ, मुदा हुनक घुमब-फिरब देखि अपने मनमे भेल जे रोगाएल-बुढ़ाएलक तँ थरमे-मीटर छी चलब-फिरब, से किए ने दादियोक बोखार अही थरमा-मीटरसँ नापि ली। चुप देखि दादीकेँ चुपी नीक नइ लगलैन, बजली- “बौआ गोबर गणेश, आब कखनो-के अपनो मन कहैए जे बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।”

मनमे भेल जे जँ दादियो अपन परिवारक धारी आ अपना जन्मक बर्ख मन रखने हेती तँ अपनो बुझिए पड़ैत हेतैन जे हम केतए छी। मुदा लगले मनमे भेल जे छौड़ा-माड़रि हम सभ छी तखन एते गपक खोंट-खाँट करै छी आ जोजन

भरि देखनिहारि ओहिना थोड़े बाजल हेती?

विचारैमे देरी भऽ गेल। दोहरबैत दादी बजली- "बौआ, किछ बजलह नहि?"

मने-मन किछु निर्णय काइए ने पेने रही। भाय जखन बुझले अछि, जहिना इन्टरभ्यूमे प्रश्नोत्तरी नइ होइए, मात्र प्रश्न-उत्तरक बीचक गतिक दूरीक जाँच होइए तहिना तगेदा सुनि हमहूँ ओही सूदिया जकाँ महाजनक आगू अपनाकेँ उपस्थित करैत कहलयैन- "दादी, जे बात अहाँ बजै छी, से अपना सन भेल?"

हमर बात सुनिते दादीक मन जेना नीचाँ उतरलैन। बजली- "से की, बौआ?"

कहलयैन- "दादी, अखन अहाँक एक जिनगी पछुआएले अछि आ कहै छिऐ बड़ बुढ़ भऽ गेलौं?"

चौंकैत दादी बजली- "से की बौआ?"

दादीक चौंकब देखि मन नाचि उठल। बिजलोका खसैकाल जहिना चमकी अबैए तँ कियो चौंक जाइए आ कियो चौक मारि लइए। मुदा दादीक चौंकब से नइ छी, फेर मन भेल जे जँ चुप रहब तँ चौंकल दादी फेर तगेदा करती। तइसँ नीक जे जहिना ओ बजली तहिना कहिऐन, कहलयैन- "दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़क आड़ियोपर ने पहुँचलौं हेन आ कहै छी बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।"

एकटा पछुएलहा जिनगी दादीकेँ ओइ नोकरिहारा जकाँ धएल भेटलैन जिनका कोनो हेरेलहा-पछुएलहा एरियर एक-ने-एक दिन भेट जाइए। लपकि कऽ दादी बजली- "बौआ, जखैन बजबे करै छह तँ मुँह झाड़िकऽ किए ने बजै छह, हम कोनो आन छिअह जे तूँ हमर अधला करबह।"

जिनगीक सिनेह दादीक देखि कहलयैन- "दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़ कहाँ भेलौं हेन?"

विस्मित होइत दादी बजली- "झुनकुट बुढ़ केकरा कहै छै?"

आश भरल दादीक जिनगी देखि आस भरैत कहलयैन-

"दादी, जेना धानक सीस पूर्ण जिनगी पाबि रेहे-रेहे टुटि-टुटि, टूर बनि-बनि धरतीपर खसैए, से तँ अखन पछुआएले अछि।"

दादी बजली- "से तूँ केना बुझै छहक?"

कहलयैन- “अखनो देखै छी जे बोलीमे टनकी अछिए। चानी छी कि रंगा से बुझैले हाथक औंठामे टनटनी रखनहि छी।”

मनमे भेल जे जँ कहीं दादीक जिनगीक धारमे बोहिया गेलौं तखन तँ अपन काज तरे पड़ि जाएत...।

गाममे झगड़ा बझि गेल अछि...।

मुदा से भेल। ‘हाथक औंठामे रखनहि छी’ सुनि दादी एते मगन भऽ गेली जे बोल्तीए बन्न भऽ गेलैन। गाछी-बिरछी जकाँ सौंसे रस्ते बुझि पड़ल।

कहलयैन- “दादी, जइ काजे आएल छेलौं से तँ बिसरिये गेल रही।”

चौंकैत दादी बजली- “बिसरैबला गपकेँ पहिने बाजि लएह, तखन जे बिसैरो जेबह ते बिसैर जइहह।”

कहलयैन- “दादी, गुड़ा-खुद्दीक रोटी केना बनै छै?”

चारि पीढ़ीक जिनगीक ऊपर ससरैत-छलकैत दादीक नजैर अपन नैहरक बीसम बर्खमे पहुँच गेलैन। बजली- “बौआ, ओही गुड़ा-खुद्दीक पोस खा सासुर एलौं। मुदा आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा हीक ओही सीकपर टाँगल अछि।”

दादीक बात सुनि मनमे उठल- आब ते लोक पंजबिया छाँटल अरबा चाउर खाइए तैठाम दादीक गुड़ाक ओरियान केना हेतैन?

मुदा फेर भेल जे गछि लइ छिऐन, दस बीस बर्खे कोटो-कचहरीक गप फरिआइए, हम तँ सहजे ओइसँ बाहर छी।

कहलयैन- “अहीले अहाँक हीक लटकल अछि। अखन जाइ छी, जोगाड़ केने आएब।” ❑

⌛ गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 2015 ⌛

उजगी

हाइ स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी रमाकान्त अछि, एकर माने ई नइ बुझब जे मेडिकल कौलेजक प्रोडक्ट- 'डॉक्टर' छी आकि लॉ कौलेजक प्रोडक्ट- 'ओकील' आकि एग्रीकल्चर कौलेजक प्रोक्टक-'एग्रीकल्चरियन' छी, हँ! एते छी जे दुनू गोरे संगे सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलौं आ कौलेजमे सेहो संगे नाओं लिखा ऐगला पीढ़ी-ले सर्टिफिकेट बना लेलौं जे कौलेज तक पढ़ने छी। लोको किए ने बुझत जे कौलेजक सभ पढ़ुआक सिंग-माँग एके रंग होइए, किए ओ बुझत जे मेडिकलक माने शरीर विज्ञान भेल, आ एग्रीकल्चरक माने खेती विज्ञान भेल आ राज-काजक संग सुचारू जिनगी चलैले निअम-कायदाक विज्ञान लॉ भेल।

ओना तीनू विषयक ई फुटान कियो हड़सट्ठे बुझबो केना करत, जहिना मोटगर-मोटगर किताव मेडिकलक तहिना ने एग्रीकल्चरो आ कानूनोक अछि, तँए किए बुझत जे कियो केकरोसँ कम अछि। जेते पन्ना, पन्नाक माने पेड़-पौधाक नइ, पन्नाक माने कितावक पन्ना, सभ जब एक्के रंग पढ़ने अछि तखन अनेरे केकरो कम-बेसी कहब, केकरो पक्ष लेब भेल, सेहो किए करब। 'गाम महराजकेँ आ बाँट करए बखो..?'

ओना दुनू गोरे ऐ लीलसासँ कौलेज नइ छोड़लौं जे विद्वान शिक्षक सभकेँ नमस्कार-प्रणाम करैत घुमि जाएब, छोड़ैक कारण भेल जे ने एकोटा शिक्षक कौलेजमे आ ने एको दिन पढ़ाइ। बिनु शिक्षकक शिक्षार्थीक संख्या, मुदा से तँ वएह बुझि सकै छैथ जे माल्थस-थियोरी बुझने होथि। मुदा से तँ अर्थशास्त्रीए-विचार ओ वएह कहता। प्रोडक्ट केहेन अछि ओ तँ ट्रेड-मार्क देखिते ने कियो बुझि सकैए। घर-घरक संग बेकती-बेकतीक जिनगी बोझिल बनल जा रहल अछि आ सभ ऐ ताकमे छी जे परिवारो आ बेकतियोक द्रुतगामी विकास भऽ रहल अछि।

रमाकान्तक माए जे वैधव्य जिनगीक बीच चलि रहली अछि, वैधव्यक माने ओहन वैधव्य नइ जे संगी बिनु तरसए, ओहन वैधव्य जे चारिमपनमे अपन समृद्धशाली परिवारक जिम्मेदारिनी बुझि अपन जिम्मेदारी निमाहैत होथि, दरबज्जापर एली। अबिते व्यग्र मनसँ बेथित अखड़े चौकीपर ओंघरा रहली।

अपने दरबज्जापर नइ रही बाड़ीमे रही, तँए अबैमे पाँच-सात मिनट समय लगल। तैबीच हुनकर मन सेहो थीर भेलैन।

अबिते देखलौं जे चाची जेना जिनगीसँ हारि चीत होइक सम्भावनासँ ग्रसित भऽ रहल छैथ। आँखि बन्न केने, दुनू बाँहि मोड़ि आँखिपर सिरमा जकाँ नेने...। ओना नीनसँ सुतल आँखि बन्न नइ रहैन मुदा सोचक बोनमे अन्हराएल जरूर रहैथ...।

बजलौं- "एना धरना देने आन्दोलन किए केने छी?"

हमर बात कानमे पड़िते चाची आँखि खोलैत उठि कऽ बैसली। आँचरसँ आँखि पोछए लगली। आँखिक बदलैत रंग देखि मन कलैप गेल। कलैप ई गेल जे चाचीक आँखिसँ संगीक संग छोड़ब- माने रमाकान्तकेँ छोड़ब- झलैक रहल छैन। बजली- "बेटा, हमरा-ले जहिना रमाकान्त तहिना तूँ आ जहिना रमाकान्तो-ले छिऐ तहिना तँ तोरो छेबे करियह।"

चाचीक व्यग्र रूप देखि अपनो मन व्यग्र भऽ गेल जइसँ ई नइ बुझि पेब रहल छेलौं जे की केने केहेन हएत। बजलौं- "एकरा के काटत!"

जहिना बीस बर्ख पूर्व, जखन रमाकान्त हाइ स्कूलक संगी छल आ संगे-संग चाची दुनू गोरेकेँ जे खुअबै छेली, तेही रूपमे मातृत्व जगि गेल। जइसँ मनमे उमकी उठि बजा गेल- "माए, अहाँले हम तन-मन-धनसँ तैयार छी, खाली अहाँक आदेशक...।"

चाची बजली- "बेटा, रमाकान्त रोगा रहल अछि से कनी डॉक्टर ऐठाम चलह।"

दिन-दिनक धंधा डॉक्टर ऐठाम, ब्लौक ऑफिस आएब-जाएब तँ लगले रहैए, तखन तँ कनी काज बढ़ि गेल सएह ने। तँए भारीए किए लगत जे आना-कानी करैत कान्ह छीपतौं।

कहलयैन- "चाची, खाइ बेर छइ, जखन डॉक्टरे ऐठामक काज छी तखन

केते-काले हएत तेकर ठेकान नइ तँए एक टुकड़ी हमहूँ खा लइ छी आ अहूँक सिरचढ़ काज अछि, अखन चैन छी, एक टुकड़ी अहूँ मुँहमे लऽ लिअ।”

चाचीक मनमे खुशी एलैन। रोग-शोकक परिवारमे पारिवारिक रूप पकैड़ ओहुना भारी भइये जाइए। माने ई जे मानि लिअ जेना- सात गोरेक परिवार अछि, एक गोरे ओहन रोगसँ ग्रसित भऽ गेल छैथ, जिनका उठबै-बैसबैसँ लऽ कऽ अतिरिक्त ऊपरका सभ क्रिया अछि, की सातमे बाँकी छबो जनक व्यग्रता नइ बढ़त, बढ़बे करत। मुदा ईहो तँ देखए पड़त जे पोखैरसँ एक लोटा पानि निकैलते जहिना चारू दिसक पानि आबि समतल बना लइए तहिना ने परिवारोकेँ समतल बनबैमे छबो-जनकेँ लागए पड़त। मुदा दोसर पक्ष अछि ऐसँ क्षति। ओना रमाकान्त बीस बर्ख पूर्वक संगी छी, माने विद्यार्थी जिनगीक। अखनो विद्यार्थी धरिक जिनगी ओते नइ करिखाएल अछि, मुदा पछाइतक जे पारिवारिक वा सामाजिक जिनगी चलैए, तइमे दुनू गोरेक बीच बहुत दूरी बनि गेल अछि। खएर...।

चाचीकेँ कहलयैन- “चाची, अहूँ जँ डॉक्टर ऐठाम संगे चलब तँ ओ बेसी नीक हएत।”

हमर बात सुनि चाची सहमली। किए सहमली से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल- डॉक्टर ऐठाम जाइसँ हिचकिचा रहली अछि। अनुभव नहि रहने हिचकिचाइ छैथ आकि पारिवारिक परदाक विचारसँ, से बुझिये ने पेलौं।

मुदा अखन तँ अपना ऐठाम छी। ऐठामसँ चाची ऐठाम पहुँचब तखन ने डॉक्टरक विचार करब। चाचीक संग विदा भेलौं...।

रमाकान्त किछु ने बाजल। जइसँ बुझि पड़ल जे ओहो जाइले तैयारे अछि।

अपना मनमे उठल- डॉक्टर ऐठाम तँ पुरुख-समांग बनि हमहीं जाइ छी, डॉक्टर साहैब तँ हमरेसँ पुछता। अखन तक ने चाची खोलि कऽ किछ बजली आ ने ऐसँ पहिने अपनो गप-सप्प भेल...। चाचीकेँ पुछलयैन- “चाची, की सभ संगीकेँ होइ छैन, से ते सभ गप अखने ने मिला लेब। ओइठाँ अहाँ किछ कहिऐ, हम किछ कहबै आ रमाकान्त किछ बाजत, से नीक नइ ने हएत।”

चाचीकेँ हमर बात जँचलैन। जँचिते मनमे धसलैन, धँसिते बजली- “मास दिनसँ एकर नीन उड़ैत गेल। उड़ैत-उड़ैत तीन दिनसँ साफे उड़ि गेल। ने दिन-के सुतैए आ ने राति-के, भरि दिन बड़बड़ाइत रहैए।”

ओना अखन तँ प्रश्न पुछैक समय नइ अछि, बात बुझैक समय अछि तँए नीन नइ हएब, रोग तँ भेबे कएल।

रोगक संग रोगीकेँ डॉक्टर लग पहुँचाएबे ने अपन काज भेल। आगू तँ जनता डॉक्टर साहैब। तीनू गोरे टेम्पूसँ डॉक्टर ऐठाम पहुँचलौं। लोकक करमान लगल। के रोगी के निरोग से परखब कठिन।

ओना मनमे ईहो भेल जे जखने दसटा रोगी आ दसटा रोगीक गारजन एकठाम हेता तखने ओइ जगहक गरिमा बढ़ि जाइ छइ। मुदा से दोसर रूपमे।

कम्पाउण्डर लग पहुँच कहलयैन- “हम कोनो औगताएल नइ छी, खा-पी कऽ आएल छी तँए हमरा बेसी समय जाँचमे चाही, भलेँ अहाँ सभसँ पाछूए-कालक नम्मर किए ने दी।”

सहए भेल।

रोगी देखैत-देखैत डॉक्टर साहैबक मन सेहो, छूत रोग जकाँ रोगाइये गेल रहैन, मुदा काजसँ जेना निसचिन्ती एलैन से रूखिसँ बुझि पड़ल।

पानि-चाह पीब डॉक्टर साहैब पान खेलैन। कम्पाण्डर सभ सेहो दोकान-दौरी दिस चलि गेल। चारू गोरे एकठाम भेलौं। डॉक्टर साहैब बजला- “रोगीकेँ की सभ शिकाइत छैन।”

हम चुपे रहलौं, मुदा चाची बजली- “उजगी भऽ गेलैए।”

चाचीक बात डॉक्टर साहैब बुझि गेला। बुझि एते गेला जे कारनीकेँ किछु पुछैक खगते ने रहलैन। बजला- “ऐ रोगकेँ दैहिक आ दैविक माने मानसिक, दुनू कारण अछि, दैहिक-के इलाज तँ दवाइसँ हएत मुदा दैविक लेल जिनगीक रूटिंग बदलए पड़त, से ते हम कहबे करब, करए तँ अपने पड़त।”

डॉक्टर साहैबक विचार जँचल, कहलयैन- “हँ तँ ऐसँ बेसी अपनेक हाथे की अछि।” ❑

⌛ शुभचिन्तक, 2016 ⌛

बेटीक कुभेला

नीनसँ सुतले रही मुदा भोर भऽ गेल रहइ। चिड़ैयो सभ अपन हाजरी दऽ दऽ पेटक जोगारमे लगि गेल छल। जिनगी-ले तँ पहिने पेटे-पूजाक ओरियान ने करए पड़ै छै, तँए चिड़ैयो सभ अपन पेट-पूजाक जोगारमे लागि गेल छल। ओना अपने सेबेरे उठै छी मुदा काल्हि देहक धौजैन तेते ने भेल जे रातिमे सुतैकाल नीने ने अबै छल, मुदा जेना-जेना ओछाइनपर कर लगैत गेल तेना-तेना नीनक आगमन हुअ लगल। नीक जकाँ नीन कखन पड़लौं से मन नइ अछि किए तँ घड़ी देखि नीन नइ पड़ल रही। मुदा भोरमे करीब डेढ़ घन्टा बेसी नीन रहल से तँ घड़ीसँ थाह लगिये गेल।

नीन टुटिते अँगनोमे आ पछुआर दिस–रस्तापर सेहो लोकक गलगुल सुनि पड़ल। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल अनुमान लगबए लगलौं जे केतौ किछु भेल अछि। आरो कान पाथि सुनए लगलौं जे कनी नीक जकाँ बुझिऐ। मुदा से भेल नहि, दुखिया कक्काक नामटा नीक जकाँ बुझलौं, बाँकी बात बाँकीए रहि गेल।

ओना पत्नियोँ ई सोचि नहि उठबैथ जे काल्हि भरि दिन मेहनतिया काजमे लगल रहला, तँए जँ कनी बेसी अराम भऽ जेतैन तँ देह बेसी फुहराम भऽ जेतैन जइसँ मनो फुहराम भइये जेतैन। आइ कोनो तेहेन काजो अखन नहियेँ अछि जे कोनो नोकसान हेतैन। ओना पत्नी अपना विचारे बुझली मुदा से अछि नहि, जिनगीक तँ एक-एक क्षण एक-एक पल जीवन क्रियासँ जुड़ल अछि तँए नोकसान नहि हएत, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

समाचार बुझैक खियालसँ ओछाइन छोड़लौं। ओना आन दिनक ओछाइन छोड़ब माने ओछाइनपर सँ उठब आ औझुकामे किछु अन्तर भइये गेल छल। अन्तर ई जे आन दिन अपन दैनंदिनक काजकेँ नजैरमे रखि उठै छेलौं से आइ नइ भेल। अपन काज विचारक तर पड़ि गेल आ समाजक काज अगुआ गेल जइसँ

अपन नित्य-क्रिया दिससँ मने बहैट गेल।

ओछाइनपर सँ उठिते मनमे भेल जे धाँइ-दे केबाड़ खोलि केकरोसँ पुछैसँ बेसी नीक हएत जे ओरिया कऽ केबाड़क एकटा पट्टा घुसका पत्नीकेँ इशारासँ बजा हुनके पुछि लिऐन। मुदा से गरे कुगर छल। कुगर ई छल जे पत्नी विपरीत दिसामे घुमल छेली आ आन-आन लोक, दोसर आँगनक स्त्रीगण, सोझमे पड़ै छेली।

ओना अपनो पत्नी कखनोकाल बजैमे तिलकेँ ताड़ बनबै छैथ आ ताड़केँ तिल, मुदा भाँज बुझल अछि, तँए कोनो विचार वा बातकेँ नीक जकाँ बुझि जाइ छी।

केबाड़ खोलि ओसारपर ठाढ़ भऽ हिया कऽ देखलौं तँ एक गोरे भौजी-तुल्य आ दू गोरे भावो-तुल्य छैथ, अखन गप-सप्पक क्रममे एकबट्ट छैथ तँए नजैर पड़िते ओहो सभ साकांछ भऽ जेती। मुदा से भेल नहि। होइतो अहिना छै जे सम-तुल्य समयक बात-विचार वा लाज-विचार आ बेर-बिपैतिक समयक लाज-धाकमे कनी अन्तर आबिए जाइ छै। बिनु मुँह झँपने भावो गप बजैले–माने समाचार सुनबै-ले–उताहुल रहबे करैथ, मुदा एते होशियारी सभ करबे केलैन जे भौजी-तुल्य जे रहैथ हुनके समर्थनमे सभ मुँह उघारने ठाढ़ रहली। भौजी बजली-

“बौआ, बड़ अनर्थ भेल!”

‘बड़ अनर्थ भेल’ से तँ भौजीक मुहेँ सुनलौं मुदा की अनर्थ भेल बुझबे ने केलौं। दोहरा कऽ आँखि उठा भौजीपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे अस्सी मनक भार जेना हुनका मनपर पड़ल होइन। मनमे उठल जे नीक ई हएत जे किए ने अपने मात्र खोंरनी चलाबी आ भौजीए मुहेँ सभ बात सुनी। काटि-छाँटि अपन विचारकेँ रखैत बजलौं-

“से की?”

विह्वल होइत भौजी बजली-

“दुखिया कक्काक परिवारमे बज्र खसि पड़लैन।”

ओना तैयो भौजी सोझ-साझ नइ बजली, मुदा अपन मन मानि लेलक जे दुखिया कक्काक परिवारक किछु अंग-भंग जरूर भेलैन अछि।

आगूक बात भौजीसँ नहि पुछि पत्नीकेँ इशारा दैत बजलौं-

“कनी एमहर सुनू।”

बजैत-बजैत मन जेना क्षीण हुअ लगल, देहमे कोनो लज्जतिये ने बुझि पड़ए। हुअए जे खसि पड़ब। मुदा कहुना कऽ हाथ-पएर बँचबैत ओछाइनपर आबि चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेलौं।

लगमे आबि पत्नी बजली-

“बुधनी काकी मरि गेली।”

पत्नियोँक बातपर जेते बिसवास हेबा चाही से नइ भेल, मुदा लगले मन गवाही दैत कहलक- घटना-घटनाक अपन-अपन मोल होइ छइ। एहेन घटनाक चर्च करैमे जेते इमनदारी लोकमे रहै छै तेते आन घटनामे थोड़े रहै छइ। इमनदारी रहबो केना करत। घटनो-घटनोमे अन्तर अछि किने, कोनो इज्जत-आबरूसँ जुड़ल रहैए तँ कोनो शासन-सत्तासँ, तहिना कोनो धन-सम्पैतसँ तँ कोनो अपन चालिसँ सेहो जुड़ल रहैए। मुदा किछु हौउ, एते तँ इमानदारी लोकमे ऐछे जे केकरो घरमे आगि लगौ कि कियो गाछपर सँ खसि पड़ैए आकि केकरो साँपे-छुछुनैर काटि लइ छै, तँ एहेन बात बजैमे लोक इमानदार अछिए।

पत्नीक बात सुनि भादवक ओइ अन्हार जकाँ मन अन्हरा गेल जइमे तरतर अन्हार करैत तरतर मेघ तरतराइत ठनको खसबैए आ तरतराइत बरखो होइए, मुदा उपाय?

एकाएक मनमे नव उत्साह जगल। उत्साह जगिते शक्तिक संचार भेल। संचार होइते मनमे उठल- एहेन अन्याय दुखिये काकाकेँ भेलैन से तँ नइ अछि, एहेन-एहेन अन्याय बहुतोक संग भेल अछि आ आगूओ हएत...।

मुँह-कानमे बिना पानि नेनहि दुखिया काका-ऐठाम विदा भेलौं। पहुँचते देखलौं जे कक्काक आँखिसँ नोर टघैर रहल छैन, मुदा तैयो मुइल पत्नीकेँ जरबैक ओरियानमे लागल छैथ।

दुखिया कक्काक दशा देखि अपनो मनक ओहने दशा भेल। दशा होइते दुनियाँ मनमे नाचल। यएह छी दुनियाँ जे जइ बुधनी काकीक संग दुखिया काका जिनगी-ले खेत-पथारक काज संगे करै छला, जारैन-काठी गाछी-बिरछीसँ संगे अनै छला, से आब केकरा संगे करता? मुदा दुखिया कक्काक मनक विचार हमरा विचारसँ बिलकुल भिन्न छेलैन। हुनकर जे क्रिया-कलाप छेलैन तइसँ बुझि पड़ै

छल जे होइ छैन केते जल्दी लहाश अँगनासँ निकैल आगिमे जरि जाइक। जेना सिनेह नामक कोनो विचार मनमे छैन्हे नहि। ओना, मृत्युक पछाइतो सिनेह रहिते अछि, मुदा ओ कम-बेसी। किएक तँ जैठाम असगरूआ जिनगी अछि तैठाम मृत्युक पछातिक जे क्रिया-कर्म अछि ओ सिनेहकेँ धकेल अपना दिस खिंच लइए मुदा जैठाम भरल-पूरल परिवार अछि तैठाम तँ एहेन घटना भेलापर सिनेही पतिकेँ घरक केबाड़ बन्न कऽ रखले जाइए। ओना ओहूठाम दू रंगक हिसाब होइए। पहिल होइए जे जैठाम पति-पत्नीक बीच आत्मीय प्रेम रहल से आ दोसर भेल जैठाम जिनगीक विचारधारा एते दूरी बना दइए जे एक-दोसरकेँ देखैये ने चाहैए।

दुखिया कक्काक काज देखि मनमे उठल- जँ किछु मृत्युक विषयमे पुछबैन से समय तँ निकैल गेल अछि। माने ई जे मरैक कारण नीक रहल होनि कि अधला, ई तँ मृत्युक पूर्वक क्रियाक विचारक समय छी। ऐठाम तँ बुधनी काकी मरि चुकल छैथ। अखन तँ मृत्युक पछातिक जे उपचार अछि सएह ने कएल जा सकैए।

ओना, मृत्युक पछातिक सूत्र–माने कि सभ कएल जाइत अछि–देखलो पछाइत बिसैर गेल रही तँए पुछब तँ जरूरी अछिए। ओना सूत्रधार–आँगनसँ असमसान तकक काज केनिहार–दुखिया कक्काक पितियौत जेठ भाय रहैथ, मुदा मनमे उठल- काज तँ दुखिया कक्काक परिवारक छी, तँए पुछबो अनुचित नहियेँ हएत, तैसंग ईहो तँ भइये सकैए जे अपन उपस्थितिक मोजर भऽ जाएत आ जँ कहीं दुखक धारमे दुखिया काका बहि गेला तँ मृत्युक कारणोक भाँज लगि जाएत। यएह सोचि पुछैक विचार भेल।

मुदा लगले आँखि माए लग–बुधनी काकी लग–बैसल पाँच बर्खक बेटी सबुरियापर पड़ल। दुनू आँखिसँ बेटीकेँ नोरक टघारो चलैत रहै आ चिचिया-चिचिया कनबो करै छल, मुदा तैयो माइक मुँह लग बैसल माछियो दहिना हाथसँ रोमैत रहै आ कियो जँ देखए चाहैथ तँ वस्त्रसँ झाँपल माइयक मुँह उघारि देखा कऽ पुन: झाँपि सेहो दइ छल।

सबुरियाकेँ किछु कहैक साहस नहि भेल। साहस ऐ दुआरे नहि भेल जे जहिना दुखिया काका ऐगला ओरियानमे लगल छैथ तहिना सबुरिया सेहो लगले अछि तैठाम बीचमे अनेरे किछु बाजि बाधा उपस्थित करी से नीक नहि बुझि पड़ए

तँए बजैक साहस नहि हुअए। ओना, समाजक बहुतो जिज्ञासु जिज्ञासा करए आएल छैथ, कियो बाँस काटए गेल छैथ, तँ कियो हाँइ-हाँइ जौड़ बाँटि रहला अछि। तैसंग किछु गोरे एहनो तँ छथिये जे बैस कऽ किछु स्मरण कऽ रहला अछि। हमहूँ ओही पाँतिमे बैस गेलौं।

ओना, दुखिया कक्काक ऐगला-पैछला गप-सप्प चलि रहल छल, माने ई जे दुखिया कक्काक की परिवार छल आ आगू की हएत से दुनू गप-सप्प चलि रहल छल।

बुधनी काकीक मृत्युक चारि दिनक पछाइत ऐगला क्रियाक जिज्ञासा करए दुखिया काका ऐठाम गेलौं। काल्हि छौरझँप्पी छल। बुधनी काकीक सारा बनि तुलसी गाछ रोपा गेल छेलैन।

हमरा जाइसँ पहिने जीवन काका आ सिंहेश्वर भाय सेहो पहुँच चुकल छला। तीनू गोरे ऐगला क्रिया-कर्मक चर्च कऽ रहल छला। ओना, अपना मनमे एकटा विचार नाचि रहल छल, ओ विचार छल जे दुखिया काका अपने जे पत्नीकेँ आगि देलैन से ओते नीक नहि भेल जेते बेटी–सबुरिया–केँ देने होइत।

ओना आन बात धियानमे नहि छल मुदा ई तँ रहबे करए जे असगरूआ दुखिया काका जे गरदैनमे उतरी लेलैन तइसँ ई तँ भेबे केलैन जे ऐगला काज करैसँ घेरा गेला। किएक तँ कर्ताकेँ–जे आगि देने रहल हुनका–अपन विहीतोक काज आ सोगो-पीड़ा रहिते अछि जइसँ ऐगला काज बाधित होइत अछि...।

..अपन मनमे कोनो जवाब उठबे ने करए जे मन असथिर होइत। बजा गेल-

“जीवन काका, अपने तँ उमरदार भेने अनुभवी सेहो छीहे, दुखिया काकासँ नीक होएत जे सबुरिया आगि दइतैन।”

ओना हम ऊपरे-ऊपर हल्के-फुलके ढंगसँ सराध-कर्मक काजकेँ नजैरमे रखि बाजल रही। परम्परा की अछि, बेवहार की अछि, से सभ मनमे नइ छल। मुदा जीवन काका गंभीरतासँ प्रश्नकेँ लैत किछु समय मने-मन तर्क-वितर्क करैत बजला-

“नीक जरूर होएत, मुदा लोकोक विचार मानब तँ जरूरी भइये जाइए।”

जीवन कक्काक सह पेब आरो मनमे अपन विचारपर बिसवास जगल,

जइसँ बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल, बजलौं-

"से की काका?"

जीवन काका बजला-

"पोथी-पतराक बात तँ नइ बुझल अछि मुदा समाजमे दुनू विचारधारा तँ बहिये रहल अछि। किछु गोरे एहनो छैथ जे पक्षमे छैथ आ किछु गोरे विपक्षमे सेहो छथिये। एक तँ ओहिना सराध-कर्म सीमित दिनक भीतरक काज छी, तैसंग समाजसँ जुड़ल सेहो अछिए। तैबीच जँ समाजमे विचारक विवाद उठत तँ काज ढंस होइक संभावना बनियेँ जाएत।"

जीवन कक्काक विचार मनमे जँचल मुदा लगले दोसर प्रश्न उठि गेल। उठि ई गेल जे समाजे छी, सदिकाल एहेन-एहेन क्रिया अबिते रहत, तखन किए ने समाज एकरा एकठाम बैस विचार करैए.?

बजलौं-

"काका, एहेन काजकेँ समाज पछुआ कऽ किए रखने अछि?"

जेना जीवन काकाकेँ एहेन घटनासँ भेँट भऽ चुकल होनि तहिना मनमे खुशी एलैन।

मुस्की दैत बजला-

"जे नि:सन्तान छैथ हुनकर उपाय की अछि?"

जहिना बाढ़ि एलापर माने पानिक धारमे खढ़ो-पात प्रवाहित होइए तहिना अपनो मनमे भेल। बजलौं-

"काका, जिनका ने धिया-पुता छैन आ ने पति, तिनकर उपाय की हेतैन?"

ओना जीवन काका ठमकला मुदा हमरा सन-सन लोक-ले हुनका लग घटना-घुटनी आकि खिस्सा-पिहानीक कमी थोड़े छैन जे जवाब नइ दइतैथ। मुदा बीचमे सँ दुखिया काका उठि कऽ अँगना कोनो काजे गेला। हम तीनियेँ गोरे दरबज्जाक बिछानपर बैसल रहि गेलौं।

गर पेब सिंहेश्वर भाय बजला-

"दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी हेतैन, अखन बेटी भानस-भात करै-जोकर

नइ भेलैन अछि, अपने हर जोति दुपहरमे औता तखन भानस-भात करता!”

हमरा गर भेटल, बजलौं-

“तेतबे नहि ने अपने समरथ हड्डी छैन तँ कनी बरदासो कऽ लेता मुदा पाँच बर्खक सबुरिया भूखे छटपटाएत की नहि?”

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनमे गड़लैन तहिना मुँहक विसविसीसँ बुझि पड़ल। मुदा देखल-सुनल विचारक काज जेना मनमे नाचि उठलैन तहिना बजला-

“ई स्थान अखन एहेन गप्पक नहि अछि, तँए अखन मुँह बन्ने राखह।”

बजा गेल- “से किए काका?”

जीवन काका-

“तूँ जे बाजऽ चाहै छह से मृत्युक साल भरि बरजित अछि तँए साल भरि मुँह बन्ने राखह।”

सिंहेश्वर भाय बजला-

“सालक सीमा किए अछि ओ तँ भरि जीवनोक भऽ सकैए?”

साल भरिक सीमा सोझमे अबिते जीवन कक्काक मनमे साल भरिक क्रिया-कर्म उपैक गेलैन। बजला-

“आइ चारिम दिन छी माने बुधनी काकीककेँ जरौला, नअ दिनमे सराध कर्म सम्पन्न हएत, तेकर पछाइत बारहो मास मासे-मासे छाया हएत जे साल लगलापर पूरत, तेकर पछाइत बरखी हएत, जे साले-साल होइत रहत, तैबीचमे मातृनवमी सेहो होइत चलैत रहत।”

जीवन कक्काक बात सुनि सिंहेश्वर भाय टोकलकैन-

“जखन साले-साल बरखी आ मातृनवमी चलिते रहत तखन बीचमे दुखिया काकाकेँ दोसर बिआह करैक समय कहिया भेटतैन?”

तैबीच दुखिया काका आँगनसँ दरबज्जापर चलि एला। हुनका देखिते तीनू गोरे अपन-अपन मुँह बन्न कऽ लेलौं।

लगमे अबिते दुखिया काका बजला-

“अपने लोकैन समाज भेलिऐ, केना गरदैनसँ उतरी हेट हएत से तँ अपने

लोकैन ने विचार करबै।”

दुखिया कक्काक बात सुनि जीवन काका बजला-

“केकरा गरदैनमे उतरी लटकल रहल अछि जे अहाँक नहि उतरत। तखन तँ रंग-बिरंगक चलैन उतरी उतरैक ऐछे तइमे जे सकरता हएत तइ हिसाबसँ उतरी उतारि लेब।”

अपना जनैत जीवन काका दुखिया काकाकेँ जवाब दऽ देलखिन, मुदा की कहलखिन से अपने बुझबे ने केलौं। बिनु बुझने किछु बाजबो नीक नहियेँ बुझि पड़ए। मुदा दुखिया काका जखन समाज बना समस्या रखलैन तखन चुप्पो रहब केहेन हएत? फेर हुअए जे कहि दिऐन जे बड़बढ़ियाँ विचार जीवन कक्काक छैन। मुदा लगले ईहो हुअए जे बड़बढ़ियाँ आकि बड़खराप से तँ बुझला पछाइत ने बुझब, बिनु बुझने नीक की अधला की से केना बेराएब?

अगदिगमे मोन पड़ि गेल। कोनो गरे ने देखिऐ जे दुखिया काकाकेँ की जवाब दिऐन। फेर मनमे भेल जे जीवने काकासँ किए ने पुछिऐन। बजलौं- “की कहलिऐ काका जे रंग-बिरंगक चलैन अछि?”

जीवन काका बजला-

“अपना समाजमे रंग-रंगक चलैन अछि। पहिल भेल बिरखौ, दोसर भेल पंचदान आ तेसर भेल कुरसी।”

जेना नव चीज सुनने होइ तहिना मनमे भेल, जइसँ आरो बुझैक जिज्ञासा जगल। बजलौं-

“कनी तीनूकेँ फुटका कऽ कहियौ।”

हमर बात सुनिते जीवन काका हमरा निहारए लगला। मनमे की भेलैन से तँ ओ जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मने-मन विचारि रहला अछि जे केहेन ढहलेल जकाँ बाजल। ओना जीवन काका किछु अधला बात मुहसँ नहि निकालि असथिरसँ बजला-

“बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह तँए समाजक तरी-घटी नइ बुझै छहक। हमरा तँ देखैत-देखैत केश-दाढ़ी पकि गेल।”

किछु बुझब छल तँए ललचाइत मने कहलयैन-

“काका, एकरा के काटत। खेलहा-पीलहा देह अछि तँए ने, नहि तँ मरि

गेल रहितौं। अहीं कहू जे अहाँ उमेरक केते गोरे समाजमे छैथ।”

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनकेँ भरलकैन तहिना बुझि पड़ल। बजला- “बौआ, पहिल जे बिरखौ अछि ओइमे लोक हाथी-घोड़ा, गाए-बरद, गहना-जेबरक संग जर-जबारमे भोजो करैए आ सभ किछु दान सेहो करैए।”

बिच्चेमे बजा गेल- “हाथीबला ने हाथी दान करता आ जिनका से नइ छैन ओ की करता?”

हमर बात जेना जीवन काकाकेँ कठाइन लगलैन तहिना मुँहक रूपसँ बुझि पड़ल। बजला-

“एते धड़फड़ेने समाजक पेनी पौबह। पहिल ने कहलियह आ दोसर रंगक अछि पंचदान, जइमे लोक कमसँ कम एगारह गोरेकेँ खाइयो-ले दइए आ जे विभव रहलै तइ हिसाबे दानो करैए।”

जीवन कक्काक बात सुनि मन कनी थितगर भेल। तइ बिच्चेमे सिंहेश्वर भाय पुछलकैन-

“कुरसी की भेल?”

जीवन काका बजला-

“जेना बिरखौ आ पंचदान नमगर-चौड़गर अछि तेना कुरसी नइ अछि। ‘कुरसी’मे जएह भेल सएह दानो केलौं आ खाइयो-ले देलिऐ।”

दुखिया काका सेहो सभ बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। तैबीच एकभुक्तक समय सेहो लगिचा गेल छल। तँए आँगन दिस विदा होइत दुखिया काका बजला-

“ओना, अखन सराध दिनगर अछि। जेना जे अपने लोकैन कहब, तेना से करैले हाजिर तँ छीहे।”

सभ कियो उठि कऽ विदा भेलौं।

साल भरिक पछाइत पहिल बरखी भऽ गेल। बरखी भेलाक तीन दिनक पछाइत दुखिया काका ऐठाम गेलौं। दुखिया कक्काक रंग-रूप बहुत बदलल बुझि पड़ल। जेना पत्नीक सभ सोग-पीड़ा बिसैर नव जिनगीक परिवार बना नेने होथि तहिना। सबुरिया सेहो छह बर्खक भऽ गेल। दुनू बाप-बेटी भानसक काजमे लगल रहैथ। डेढ़ियापर पहुँचते सोर पाड़लयैन- “काका यौ?”

अँगनेसँ दुखिया काका बजला-

"हँ, अँगनेमे छी। एम्हरे आबह।"

अँगनेमे पीढ़िया बैसैले देलैन आ दुखिया काका-अपने भुँइयेमे चुक्कीमाली बैसला। गामेपर सँ विचार केने गेल रही जे दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी पत्नीक अभावमे होइ छैन। से नइ तँ दोसर बिआह कऽ लैथ।

मनमे अगुआएल विचार छल तँए बजैक उत्सुकता तँ छेलएहे। मुदा बिना कुशल-समाचार बुझने बजबो केना करितौं तँए कुशले-समाचारसँ गप शुरू करैत पुछलयैन-

"काका, जिनगी अहाँकेँ बड़ परीछा लऽ रहल अछि।"

हमर प्रश्नक उत्तर जेना दुखिया काकाकेँ ठोरेपर रहैन तहिना धाँइ-दे बजला-

"जिनगीमे जे जेते परीछा देत, वएह ने ओते जिनगीकेँ चिन्हबो करत।"

दुखिया कक्काक जवाबसँ बुझि पड़ल जे गप-सप्प करैक मूड बनल छैन। बजलौं- "काका, बिआह कऽ लिअ। सबुरियो चेष्टगर भेल, बिआह-दान हेतइ सासुर जाएत। अहाँ आरो परेशानीमे पड़ि जाएब। असगर रही कि दस गोरेक परिवारमे रही, जिनगी तँ जिनगी छी ओकर तँ सभ काज पुरबै पड़त।"

बजला-

"से तँ अछिए, मुदा समस्यो तँ अपने-अपनेटाक ने अछि।"

बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए, मुदा पारिवारिक जिनगीक अपन महत छइ किने।"

हमर बात सुनिते दुखिया काकाकेँ पहिल पत्नी मोन पड़लैन। केना हथियाक झाँटमे प्रसव पीड़ा भेलैन आ लाख परियास केलो पछाइत बँचा नइ पौलिऐन। पछाइत दोसरो बिआह केलौं सेहो मरि गेली, साल भरि पहिने सराधसँ उरीन भेलौं। बर्ख दिन भऽ गेल। केना बर्ख दिन बीतल सेहो कहाँ बुझि पेलौं। अपन जिनगीमे जहिना रमैत एलौं तहिना रमैत आगूओक जिनगी काटि लेब। तइले एक नइ दू-दूटा सन्ताप भोगि रहल छी। सबुरिया भानसो-भात आ अँगनो-घरक काजमे सम्हारिये रहल अछि। बजला- "परिवार केतौ हेराएल अछि, दू बाप-बेटीक परिवार अखनो अछि। यएह ने हएत जे बिआहक पछाइत बेटी सासुर

जाएत। जँ ओकर मन हेतइ तँ हमहूँ ओतै चलि जाएब नइ जँ बेटियेक मन हेतै तँ ओहो सभ एतै रहत।”

ओना दुखिया कक्काक उत्तर मनोनुकूल नइ भेल, मुदा उत्तरकेँ काटबो तँ असान नहियेँ अछि। आँखिक सोझमे एहेन अनेको जिनगी अछिए। बजलौं-

“काका, बेटाक वंश आ बेटीक वंशक अन्तर तँ भइये जाइत अछि किने?”

दुखिया काका बजला-

“हँ, लोको तँ सएह बुझैए, मुदा मूल प्रश्न जिनगीकेँ चैनसँ जीब अछि। जखने दोसर बिआह करब तखने अपन पत्नी रहितो सबुरियाक तँ सतमाइये हेतै किने। जेकरा वंशक फूल बुझि सेवा करै छी ओकरा आगू एहेन बगुरक गाछ रोपि दिऐ, ई अपन मन नइ कहैए। किछु भेल तँ सतमाइये भेल। ओकरा कुभेला करबे करतै।”

बजलौं-

“की कुभेला?”

काका बजला-

“सभ रंगक कुभेला। ओ अपन बेटी सबुरियाकेँ बुझबे ने करत। मुदा हमर तँ बेटी छी, हम केना अपना सोझामे कुभेला होइत देखब। तइसँ नीक ने जे ओहन गाछे ने रोपब जेकर काँट बाल-बच्चाकेँ गड़त।” ❑

⧖ बेटीक पैरुख, 2017 ⧖

मानसरोवरक यात्रा

परिवारक सात भाँइक भैयारीमे वैज्ञानिक भाय–माने जीतनलाल भाय–जेठ छैथ, जे दिसम्बरमे सेवा निवृत्ति भऽ भाभा शोध संस्थानसँ गाम आबि गेला। बच्चेसँ प्रखर बुधिक रहने जीतनलाल भाय गामक स्कूलसँ एम.एस-सी.तक प्रथम स्थान पबैत रहला। ओना, शुरूमे माने हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि मनमे यएह विचार रोपने छला जे एम.एस-सी.क पछाइत कौलेजमे नोकरी करब, प्रोफेसर बनब। मुदा एम.एस-सी.क रिजल्ट निकैलते भाभा शोध संस्थानमे भेकेन्सी भेल, जीतनलाल भाय अप्लाइ केलैन आ सलेक्ट भऽ गेला।

अड़तीस बर्खक सेवाक पछाइत वैज्ञानिकजी 5 दिसम्बरकेँ संस्थानसँ सेवा निवृत्ति भेला। जुलाइ मासक पहिल सप्ताह, आद्रा नक्षत्र काल्हिये समाप्त भेल। सालक अखन तकक जे मौसम रहल माने बरसातक, ओ अनिश्चित रहल। अनिश्चित भेल जे ऐगला समय माने बरसातक केहेन हएत तेकर अनुमान ठीक-ठीक नइ लागब। जहिना भिनसुरका सुर्ज देखलासँ लोक अनुमान तँ कइये लइ छैथ जे औझुका दिन केहेन हएत। तहिना सालक तीनू मौसमक सेहो अछि। तीन मौसम भेल जाड़, गरमी आ बरसात। कोनो मौसमक, पूर्व पक्ष माने चारि मासक मौसममे शुरूक जे एक-सवा मास होइए, ओकर सीख-लीख पकैड़ लोक अनुमान लगा लइ छैथ जे मौसमक ऐगला रूप केहेन हएत, से नइ भेल। किए तँ अखन तक जे समय बीतल छल ओ ने रौदियाहेक आभास दइ छल आ ने तेहेन विकराल बरसातेक। शुरू जेठमे एकटा नमहर बरखा भेल जइसँ किसान सभ अपन गरमाधानक बीआसँ लऽ कऽ अगहनी-धानक बीआ तक पाड़ि लेलैन। ओना, बीआ पाड़ला पछाइत केते गोरेक मुहसँ निकलल छेलैन जे ऐबेरक समय सवारी हएत जइसँ मौसमो आ समयो नीक रहत। जखन मौसम नीक रहत तखन उपजावारी सेहो नीक हेबे करत। संजोगवश जेठ मासक बीच-बीचमे दूटा हाली बरखा भेबो कएल, जइसँ धानक बीआक उपज नीक रहल। शुरू अखाढ़मे माने

आद्रा नक्षत्रक पहिल दिन नीक बरखा भेल, जइसँ तीन-चारि दिन धुरझार धनरोपनी चलल, एक चौथाइसँ बेसी खेत अबाद भऽ गेल। मुदा पोखैर-झाँखैर नहि भरल तइसँ केते गोरेक अनुमान ईहो हुअ लगल छेलैन जे जँ आद्रामे भूमि भरल नहि तखन रौदियाहे समय मानल जाएत। ओना, ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआएले अछि, तँए पानिसँ भूमि भरैक सम्भावना समाप्ते भऽ गेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। आद्रा नक्षत्रक उतारमे सेहो एकटा बरखा भेल जइसँ दू दिन रोपनी चलल, मुदा पोखैर-झाँखैर खालीक-खालिये रहि गेल। आद्राक शुरूक बरखामे जेतेक पानि पोखैरमे बेसियाएल छल ओ तेरह दिनक जेठुआ रौदमे सुखि कऽ कमियाइये गेल। ओना, आम-जामुनक सुभर पैदावार भेबे कएल अछि।

रेडियोओ-अखबारो सभसँ मान सरोवरक महात्मक भरपूर प्रचार शुरू भेल। गाम-घरक लोक तँ कम्मो मुदा महनथानो सबहक आ शहरो-बजारक लोक सभ आकर्षित भेबे केलाह। मानसरोवर जेबा-ले सभ तरहक सुविधो भइये गेल अछि। ओना, हवाई जहाजसँ लऽ कऽ हेलीकेप्टर आकि चरिचकिया गाड़ी सबहक रस्ताक बाबजूदो पएरे सेहो चलइ पड़ैए। मुदा से लोकक मनसँ घसैक गेल अछि। घसकबो केना ने करत, जैठामक विचारमे माघ सन जाड़क समयकेँ एक दिन बीतने लोकक मनमे बिसवास जगिते अछि जे 'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी', तैठाम जँ आधासँ बेसी रस्ताक सवारीक सुविधा मानसरोवरक लेल भइये गेल अछि। तँए, धापे-धाप पहुँचब आसान भइये गेल अछि...।

जीतनलाल भाय मनमे रोपि लेलैन जे ऐबेर मान सरोबरक यात्रा करबे करब। दूरक यात्रा अछि तँए जँ एकटा संगी भऽ जाएत तँ ओ नीक रहत।

सातो भाँइक भैयारीमे जीतनलाल भाय लगा पाँच भाँइ बाहरे-बाहर नोकरी करै छैथ, खाली हम दुनू भाँइ माने हम आ जीवनलाल भाय गाममे रहै छी। हमर कोनो हिसाबे ने अछि, सातो भाँइमे सभसँ छोट रहने छबो पढ़ल-लिखल भाइयो आ वृद्ध पिताजी सेहो पढ़बै-लिखबैपर धियान नै देलैन, अनठा देलैन, जइसँ नामो-गाम आ किताबो पढ़ब तँ सीख लेलौं, मुदा गीता-भागवत पढ़ैक लूरि नहि भेल। ओना, धरमागती पुछी तँ हुनका सबहक दोख नहियेँ छैन। किए तँ अधबेसूए अवस्थामे माइयो मरि गेली आ पिताजी सेहो बिमारीक फेड़मे पड़ि गेला जइसँ हमरा पढ़ै-लिखैपर धियान नहि दऽ सकला। ओना, जेठ भाए सभ सक्षम छला जइसँ पढ़ा-लिखा सकिते छला मुदा ओ सभ कान-बात ऐ दुआरे

नइ देलैन जे जखन सभ भाँइ नोकरी करिते छी, नीक कमाइ अछिए तखन घरक ओगरवाहियो-ले आ मातो-पिताक टहल-टिकोरा-ले तँ आदमी चाहबे करी, तइले भने भैयारीमे सातम भाय- सेवालाल अछिए। जखन नोकरी-चाकरी नहियेँ करैक छै तखन अनेरे किए पनरह-बीस बरख तक स्कूल-कौलेज धाँगत...। तँए हम बौक-बकलेल रहिये गेलौं। ओना, हमरा सन ढेरो लोक गामोमे अछि आ देशोमे अछिए। दुनियाँक तँ कोनो हिसाबे नहि। ओना, जँ बुधिमान आ बौक-बकलेलक जनगणना ठीकसँ हुअए तँ एकोअना लोक बुधिमानक श्रेणीमे नइ औत, पनरहअनासँ बेसीए हमरे सन-सन लोकक अछि।

परसू वैज्ञानिक भाय मानसरोवरक यात्रापर निकलता। दूरक यात्रा, तँए एकटा संगीक खगता छैन्हे। ओना, अखन तक बहुतो यात्रा वैज्ञानिक भाय कऽ चुकल छैथ आ से देशक संग दुनियोँक, मुदा तइ सभ यात्रामे पत्नी संग दइ छेलैन। मुदा ऐ यात्रामे जीतनलाल भाय पत्नीकेँ संग नहि लऽ जाए चाहै छैथ। नइ लऽ जाइक विचारक पाछू कारण छैन जे एक तँ उमेरोक हिसाबसँ, दोसर अपन तँ फुहराम शरीरो छैन आ सभ दिन जे लोहा-लक्कड़क बीच काज केलैन तइसँ देहमे ताकतो छैन्हे। मुदा भौजी तँ भरि दिन डेरामे रहि खेबो-पीबो खूब करै छेली आ टी.बी., कम्प्यूटरक खेल देखैत-देखैत अथबलो भइये गेल छैथ, माने केतेको बिमारी सेहो पोसि नेने छैथ तँए वैज्ञानिक भाइक मनमे शंका छैन जे जँ पत्नीकेँ संग करब तँ अपन मदत कि हएत जे अपने भरि दिन हिनकर टहल-टिकारो करए पड़त, तँए नहियेँ लऽ जाएब नीक। हमरा, ओना हमर नाओंए सेवालाल छी मुदा आब ओते ऊहिये ने रहल जे मानसरोवर सन रस्ताकेँ पार करब। ओहन-ओहन रस्ताक ठेकाने रहत, आकि दिशांसे नइ लागत सेहो ठीक अछि। तँए, जाइने कऽ वैज्ञानिक भाय हमरा नहि कहलैन। हँ, मैझला भाय– जीवनलाल भाय जे गामेमे रहि विद्यालयमे नोकरी करै छैथ। माने गामसँ कोस भरिपर विद्यालय छैन। तहूमे संस्कृत महाविद्यालय, जेकर की स्थिति अछि से केकरोसँ छीपलो नहियेँ अछि। विद्यार्थीसँ बेसी शिक्षके छैथ। जीवनलाल भाय अपन उपस्थिति बना, एक-आध घन्टा संगी सभसँ गप-सप्प करै छैथ आ घुमि कऽ अबै छैथ। यएह हुनकर सभदिना रूटिंग छैन। प्रोफेसरक दरमाहा सेहो पबिते छैथ जइसँ परिवारोक भरण-पोषण नीक जकाँ होइते छैन। तँए, जीवनलाल भाय बेसी उपयुक्त रहतैन। वैज्ञानिक भायकेँ सेहो जीवनलाल उपयुक्त संगी बुझि पड़लैन। जीवनलालकेँ लगमे बजा वैज्ञानिक जीतनलाल भाय कहलखिन-

“बौआ, मानसरोवर जाइक विचार मनमे बहुत दिनसँ अछि मुदा समय नइ पबै छेलौं, तँए नहि गेल भेल। ऐबेर समय पेलौं हेन, जेबाक विचार भऽ गेल। दूरक यात्रा छी तँए जँ दुनू भाँइ संगे चलब तँ नीक रहत।”

मानसरोवरक जे आध्यात्मिक परिचय अछि ओ जीवनलाल भाय जनै छैथ, तँए जेबाक कोनो तेहेन जिज्ञासा मनमे नहि जगलैन। ओना, नवकबरिये उमेरमे माने तीसे-बत्तीस बर्खक अवस्थामे जीवनलाल भाय मानसरोवरक यात्रासँ भऽ आएल छैथ जइसँ रस्ताक दुर्गमता अखनो ओहिना मनमे नचै छैन। मुदा वैज्ञानिक भाइक मनमे किए एहेन विचार ऐ उमेरमे एलैन ओ मने-मन जीवनलाल भाय विचारए लगला। मानसरोवरक एहेन रस्ता अछि जैठाम जेबा-ले केतबो गाड़ी-सवारीक सुविधा किए ने भेल मुदा पएरे तँ ओहन रस्ता चलै पड़त जइमे माघो मासक शीतलहरीक जाड़सँ बेसी जाड़ अछि। तेतबे नहि, रस्तो तेहेन उभर-खाभर अछि जे केतए पिछैड़ कऽ खसब आकि ठेँस लागत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। ओहन जगहपर जँ जीतनलाल भायकेँ जेबाके छेलैन तँ ओइ उमेरमे जइतैथ जइ उमेरमे सभ किछु बरदास करैक शक्ति देहमे छेलैन। आब जखन बुढ़ भेला हेन, साठि बर्खक उमेर भेलैन हेन तखन मानसरोवर जाइले तैयार भेला हेन। एकरा नेनमैत कहब की नहि? मरै बेरमे जँ बुधिक बखारीए माथमे घोंसिया जेतैन तँ ओकरा लइये कऽ की करता? जाबे नियार-भास करता तइ बिच्चेमे जँ बखारी टुटि कऽ खसि पड़तैन तखन? तहूमे रस्तेमे जँ केतौ मरि-हरि गेला तखन तँ सेहो ने पेब सकता जे पबैक विचार मनमे जोर मारने छैन! मुदा जेठ भाय होइक नाते की बाजब से तँ विचार जीवनलाल भाइक मनमे उठिये गेल छेलैन। ओना, मन निर्णित छेलैन जे कोनो हालतमे जेबाक नहि अछि। मुदा जेठ भाय तँ पिता तुल्य होइ छैथ, आदेशो नइ मानब सेहो केहेन हएत। तँए मुँह बन्न केने जीवनलाल भाय मने-मन विचारैत वैज्ञानिक भाइक आगूमे ठाढ़ छला।

जीवनलाल भायकेँ गुम-सुम ठाढ़ भेल देखि वैज्ञानिक भाय दोहरबैत बजला-

“बौआ, किछु हँ-हूँ नहि बजलह?”

ओना वैज्ञानिको भायकेँ जीवनलालक गुम्मीक माने लगिते छेलैन, मुदा नइ बजैक माने नहियेँ भेल सेहो केना मानल जाए। तहिना जीवनो भाइक मनमे छेलैन्हे जे नइ जाएब कि जाएब से तँ किछु ने बजलौं हेन। ओना, जीवन भाय

मने-मन ईहो सोचि रहल छला जे एहेन-एहेन लोहा-लक्कड़क बीच रहैबलाकेँ झूठ बाजि ठकलो जा सकैए, मुदा छैथ तँ जेठ भाय, जँ बुझि जेता तखन अनेरे चान जकाँ मनमे पहाड़क करिया धब्बा बैस जेतैन। से नहि तँ पहिने गैंची माछ जकाँ थालमे नुकाइक कोशिश करी, जँ सुतैर गेल तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ दोसर रस्ता धड़ब...। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब! अखाढ़ मास चलि रहल अछि, गुरु पूर्णिमा आगूमे अछि, केते प्रेम आ मेहनतसँ आमक कलम लगौने छी से तँ बुझले अछि। देखिते छिऐ जे जहिना राइर, तहिना फैजली, तहिना मोहर ठाकुर अछि आ तहिना अम्रपाली सेहो बोनाएल अवस्थामे तरतर करैए, एकरा सभकेँ छोड़ि जाएब नीक हएत।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय जेना बहि गेला तहिना बोहियाइत बजला- "मानसरोवर जाइमे बर बेसी तँ पनरह दिन लागत, तैबीच की सभ आम सठिये जाएत जे मन छह-पाँच करै छह?"

ओना, जीवनलाल भाइक मनमे उठि चुकल छेलैन जे वैज्ञानिक भाय भौतिक विज्ञान जनै छैथ, मुदा जीवन विज्ञान हमरा जकाँ थोड़े जनै छैथ जे हमर बात बुझता। भावातुर भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, प्रश्न जँ आमे खाएबक रहैत तखन अहाँक विचार सोल्होअना मानै-जोकर छल। किए तँ अखन गाछेमे आम लागल अछि। जँ आठ दिनक पछाइत तोड़लो जाएत तैयो पनरह दिन आरो रहबे करत। मुदा से बात तँ अछि नहि।"

अपन विचारकेँ खण्डित होइत देखि वैज्ञानिक भाय पुछलकैन- "तखन की अछि?"

जीवनलाल भाइक मन मानि लेलकैन जे प्रश्नक ने उत्तर देब अछि। जेठ भाय रहितो तँ प्रश्नकर्त्ते ने भेला। आह्लादित भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, जहिना वृन्दावनमे कृष्णक परोछ भेने राधिका सभ विरहाए लगै छेली, तइसँ की कम प्रेम हमर आमो आ आमक गाछोक प्रति अछि।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय वौआ गेला। पुन: प्रश्न केलैन-

"से की?"

सोलहन्नी गोटी लाल होइत देखि जीवनलाल भाय बजला- "जहियासँ

आमक पीपही रोपलौं तहियेसँ सिनेहक संग प्रेमो आमो आ आमक गाछियो संग बनि गेल अछि। गाछक संग जुआन हारि गेल छी जे जाबे अपने जीबैत रहब ताबे तोरो जीबैत रखबौ! अपने मानसरोवर जाएब, जइमे कमसँ कम पनरह दिन लागत आ तइ बिच्चेमे जँ चोरे-चहार चोरा कऽ आम तोड़ि लिअए तखन ओकर रक्षा कऽ सकलिऐ? जखन चीजे विरहा जाएत तखन ओकरा संग जे प्रेमक वादा केने छिऐ से रहत?"

भौतिक जुगक भौतिकवादी वैज्ञानिक भाय- जिनक ज्ञान सेवा निवृत्तिक पछाइत जखन विज्ञानक रूपमे लतड़लैन तखन सज्ञानक बाट हुनका मनमे उठलैन। सेवा निवृत्तिक माने काजसँ मुक्त, अर्थात् हाथसँ काज चलि गेल वा छीना गेल। काजुल लोककेँ जखन हाथक काज छीना जाइए तखन अबैबला जिनगी मृतप्राय बनि जाइए। तँए, ओ अपना-जोकर काजक पाछू वौआए लगिते अछि। सएह वैज्ञानिक भायकेँ भेलैन। एक दिस ज्ञान एते प्रखर भऽ गेलैन जे दुनियाँक खोजी बनि गेला। दोसर दिस अपन ज्ञानकेँ विज्ञानक दिशामे बढ़ौलैन आ तेसर दिस विज्ञान, समाज आ शास्त्रक बीचक खाधिमे तेना पड़ला जे मन बबलाकऽ मानसरोवरक यात्राक लहैरमे हेलए चाहि रहल छैन। गणितक गणना करैबला वैज्ञानिक भाय जीवन, समाज आ दुनियाँक जखन गणना करए लगै छैथ तँ हिसाबे गड़बड़ा जाइ छैन। जइसँ कोन हिसाबकेँ सही मानी आ कोन हिसाबकेँ गलत, अही गलत-सहीक बीच मन फँसि गेल छैन। अन्तत: जेकर एकेटा उपाय सुझि रहल छैन जे अपन आँखिक देखलकेँ सही मानब। तँए मानसरोवरक यात्रा मनमे गहींर तक धँसि गेल छैन...। वैज्ञानिक भाय बजला- "बौआ जीवन, जेते आम नोकसान हेतह ततेक दाम हम दए देबह।"

वैज्ञानिक भाइक विचार सुनि जीवनलाल भायकेँ अपन विचारक रस्ता कटैत बुझि पड़लैन। मने-मन गर अँटबए लगला जे आब की करब। मुदा लगले एकटा जुक्ति फुरलैन। फुरलैन ई जे वैज्ञानिक भाय कि मानसरोवरकेँ शीतल, कोमल, पवित्र हृदय रूपी सरोवर थोड़े बुझि रहला अछि ओ तँ एकटा भौगौलिक स्थान बुझि रहला अछि। ओकरा देखबकेँ काज बुझि रहला अछि। काजकेँ तँ काजेसँ रोकल जा सकैए। से नहि तँ ओहने जब्बर काज जँ आगूमे दिऐन तँ जरूर मन मानि जेतैन आ अपन छुट्टी भऽ जाएत। जखने अपन छुट्टी हएत तखने ने दुनू गोरे छुट्टा भऽ जाएब आ अपना-अपना मने अपन काज सम्हारब, पछाइत अपन

विचारता जे केना करब...। जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, अहाँ जखन गाम आएलो ने रही तहियेक काज आगूमे सिरचढ़ भऽ गेल अछि, की ओकरा छोड़ि देब उचित हएत?”

वैज्ञानिक भाइक मन कनी ठमकलैन। बजला- “ओ तँ काज-काजपर निर्भर अछि। काजोक तँ अपन माप-तौल अछि। नमहर काजक आगू छोट काजकेँ कम वजन भेल।”

जीवनलाल भाइक मनमे खुशी उपैक गेलैन। ओ मने-मन बुझि गेला जे जहिना सत् बात लत्ती जकाँ लतड़ल रहैए तहिना बहानाक लेल झूठोक लत्ती तँ अछिए। मुदा ठाँहि-पठाँहि झूठोक लत्तीकेँ लताड़बसँ नीक जे सामनजस करैत लताड़ी। जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, अपनेक संग पूरैमे कनी असोकर्ज भऽ रहल अछि। ने तँ एक संग दू-दूटा महतपूर्ण कर्तव्य अछि तेकरासँ मुँह मोड़ब आकि मुँह घोकचाएब नीक थोड़े भेल?”

नीकक संग अधलो तँ लगले रहैए, वैज्ञानिक भाय सेहो जिनगी भरि यएह ने तर्क करैत सिद्धान्त मनमे रोपने छैथ जे कोनो वस्तुक साक्षेप-निरपेक्ष दुनू होइए। यएह विचार मनमे जगि गेलैन। बजला-

“एकरा के नीक कहत?”

‘एकरा के नीक कहत’ सुनिते बाढ़िक पानिक पाहिपर चढ़ल रोहु माछ जकाँ जीवनलालकेँ बुझि पड़लैन। मुस्की दैत बजला-

“भाय साहैब, जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे केते दिन सेवा करैक मौका भेटत। तखन तँ भेल जे जखने सेवा करैक गर लागए कि ओकरा करैत चली, निमाहैत चली मुदा तइमे अपना थोड़ेक खाँच भऽ रहल अछि।”

वैज्ञानिक भाय बजला- “बौआ, की खाँच भऽ रहलह हेन?”

मनकेँ मसोसैत मुहकेँ चिकुरियबैत जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, छह मास पहिलुके बात छी, एके दिसम्बरकेँ अपना सारिकेँ ऑपरेशन करबए डाक्टर ऐठाम गेल रही। पेटक भीतरक ऑपरेशन रहइ। बिमारीक नाओं बिसैर गेल छी। तेते भीड़ ओइ डाक्टर ऐठाम देखलिऐ, जे की कहूँ। छह-छह मासक नम्बर लगैए। हिनकर नम्बर चारिम दिनक छैन, आब अहीं

जे कहब से करब।”

वैज्ञानिक भाइक मन मानि गेलैन जे अपने ने घर-दुआर, गाम-समाज छोड़ि बाहर रहलौं, मुदा जीवनलाल तँ सभ दिन गामेमे रहि आर्थिको उपारजन केलक आ समाजक सेवो केलक। तँए, ओकरो अपन जीवनो छै आ जीवनक गतिविधियो तँ छइहे। वैज्ञानिक भाइक मनमे धाँइ-दे खसलैन- केकरो जीवनमे बाधा उत्पन्न करब सभसँ पैघ अपराध छी। तहूमे जँ ऐ सालक (माने जनवरीक पछातिक) काज रहैत तँ ओकरो आगूओ बढ़ाएल जा सकै छल, जेना लोक सराधक (श्राधक) भोजो आ किरियो-कर्म बरखी दिन-ले रखि लइए। मुदा ई तँ जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अछि। ओना, जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अनेको प्रश्न जुड़ल अछि। मुदा जीवनक प्रति लोकोक तँ अपन-अपन नजैर अछिए। जहिना करोड़ो-अरबो लोक अछि तहिना करोड़ो-अरबो नजैर सेहो अछिए। कियो पानिसँ हल्लुक हवाकेँ आ कियो माटिसँ हल्लुक पानिकेँ तँ कियो पाथरसँ हल्लुक माटिकेँ बुझैए। मुदा अपन-अपन जगहपर सभ भारियो अछि हल्लुको अछिए। पानिक जँ समुद्र छी, माने पानियेँ समुद्र छी तहिना पाथरेक पहाड़ो छी, माने पहाड़े पाथरो छीहे। तही बीच ने झंझटो अछि आ मिलान सेहो अछिए। अफ्रीकाक जंगल कहियौ कि सहाराक मरूभूमि कहियौ आकि रामवन कहियौ कि वृन्दावनक कृष्णवन, सबहक बीच तँ जीवन चलिये रहल अछि..! वैज्ञानिक भाय अपन विचारक अस्तित्वकेँ असथिर कइये ने पेब रहल छैथ। मनक ओजकेँ शरीरक ओजसँ मेल-मिलाप भइये ने रहल छैन। असोथकित होइत वैज्ञानिक भाय बजला-

“बौआ, मनमे जखन रोपि नेने छी जे मानसरोवर जेबे करब तखन तँ भेल जे एकटा संगी रहने कने नीक होइ छइ।”

वैज्ञानिक भाइक सहमैत विचार देखि जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, व्यक्तिगत हमर खगता नइ ने अछि, संगी चाही, तइले अहाँ चिन्ता जुनि करू। अखने हम गाम दिस जाइ छी, मानसरोवर चलैक हरविर्ड़ो कऽ देबइ। पुरुख-पातर जँ संगी नहियोँ हेता तैयो दसटा जनीजाति संगी हेबे करती।”

ओना, जीवनलाल भाइक विचार सुनि वैज्ञानिक भाइक मन जुड़ेलैन, मुदा शंका ईहो भेलैन जे जँ दसटा जनीजाति संगी भऽ जाएत तखन दसोक हिसाब-बारी लगबैमे दस गुणा काज बढ़िये जाएत...।

सामंजस करैत वैज्ञानिक भाय बजला- “जँ दसटा भऽ जाथि तखन तँ सर्वोत्तम भेल। नहि तँ एकोटा जँ भऽ जाथि तैयो एक मानसरोवर कि जे सइयो मानसरोवर जाएब आसान भऽ जाएत किने।”

जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, हम ते असगरे गेल रही, कहाँ केतौ भियौन लागल?”

‘भियौन’ सुनि वैज्ञानिक भाइक मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मनमे उठलैन- नारदजीकेँ कोन संगी छेलैन जे चौदहो भुवन आ तीनू लोक घुमै छला..? नारदजीक घुमब मनमे अबिते वैज्ञानिक जीतन भाइक चेहरापर स्वीकारोक्तिक भाव झलकए लगलैन। जेकरा देखिते जीवनलाल भाय बजला- “अहाँ अपन तैयारी ठीक राखू संगी भेटबे करत। जखन चोरोकेँ संगी भेटै छै, झूठो बजनिहारकेँ संगी भेटै छै तखन सौध (शुद्ध) केँ किए ने संगी भेटत।” ❑

⧖ गपक पियाहुल लोक, 2018 ⧖

बुढ़ापा

बुढ़ापा जिनगीक एक अवस्था छी। जन्म लेल बच्चा समैयक संग बढ़ैत, बालपन-सँ-ढेरपन आ ढेरपर-सँ-चेष्टगर होइत वृद्धावस्था प्राप्त करैत दुनियाँसँ विदा होइ छैथ। एहेन गति-विधि सिर्फ मनुखेटा-क नहि दुनियाँक सभ जीवो-जन्तु आ चर-अचर वस्तुक संग सेहो होइते अछि। तँए जन्म आ मृत्युकेँ लोक अकाट् बुझै छैथ। जेकर उदय होइए ओकर अस्तो होइते अछि। अकाट् बुझैक माने ई नहि जे सिर्फ मानि लेलौं, मानी वा नइ मानी मुदा कालचक्रक क्रममे से हेबे करत। जँ सत्यकेँ मानि ली तँ ओ ज्ञान रूपी सोनाक सुगन्ध भेल आ जँ नहि मानी तँ ओ विचारक दुगन्ध विचरण भेल। ई तँ भेल जिनगी, मुदा ऐ जिनगीक बीच जीवनक अनेको अवस्था अछि।

जीवनक माने सिर्फ देहेटा नहि, देहक भीतर देहीसँ लऽ कऽ महिकक मेही धरिक चक्र सेहो अछि। अही चक्रकेँ कियो कृष्ण जकाँ सुदर्शन धारण करैत महाभारत रचै छैथ तँ कियो जम-जमराजक चक्रमे पड़ि जमलोक रचै छैथ।

खाएर जे जे रचै छैथ मुदा दुनियाँ तँ दुनियाँ छी जे सभ कथुसँ भरल-पुरल अछिए, तखन तँ जे जेहेन बिछनिहार से तेहेन फल-पात लोढ़ि जीवन अर्पणक संग तर्पण करनिहार सेहो छथिए। अही दुनियाँमे हमरो गाम अछि। जेकर नाओं ‘उचितपुर’ छी। उचितपुरमे उचितलाल बाबा सन वृद्ध लोक सेहो छथिए।

अस्सी बर्ख टपल उचितलाल बाबाक देहक चाम सभ ढील भऽ केतौ-केतौ समटलो छैन आ केतौ-केतौ लटैकियो गेलैन अछि, मुदा मनक जे कामनाक प्रवाह छैन ओ अखनो ओहने छैन जे अपन चढ़ैत जिनगीमे अर्जन केने छला।

असलमे उचितलाल बाबा अपन चढ़ैत जिनगीमे ओहन कामनाक धार अपन बाबाक धारमे प्रवाहित होइत अपना जीवनकेँ भक्ति रूपेँ पालन करैत पिताक धारमे प्रवाहित होइत रहला जइसँ समैयक प्रभाव ओतेक नहि झिकझोर

कऽ सकलैन जेते अनका देखमे अबैए।

अपन दैनंदिनक जिनगीक कालक्रमे उचितलाल बाबा समैपर गामक नाच-गान देखैले दरबज्जापर बैसले छला कि विलास बाबाक अड़ाहैट सुनलैन। ओना, चोट-चाटसँ थकुचाएल आकि साँप-छुछुनरिक छुअल लोक जेना अड़ाहैट मारैए तइसँ भिन्न विलास बाबाक अड़ाहैट बुझि पड़लैन मुदा उचितलाल बाबा स्पष्ट नहि बुझि पेला जे विलास भाय किए रस्तापर आबि अड़ाहैट मारि रहल छैथ?

स्पष्ट करैले उचितलाल बाबा कखनो कान ठाढ़ करै छला तँ कखनो कानक पाछू हाथक बान्ह बान्हि सुनए चाहै छला। की बात छिऐ जे दिनक अखन पहिलुके पहर–माने भिनसुरके पहर–छी तखन एना किए विलास भाय अड़ाहैट मारि रहला अछि.?

अपना जनैत उचितलाल बाबा केतबो सुनैक परियास केलैन मुदा विलास बाबाक मुँहक बात बाहरे रहलैन माने अकाने रहलैन। तैबीच विलास बाबा डेगे-डेग ससरैत उचितलाल बाबा दिस बढ़ैत आबि रहल छला। उचितलाल बाबाक दरबज्जासँ कनी फरिक्के रहैथ, मुदा पहिलुका अपेक्षा विलास बाबा लगमे आबि तड़कैत बजला-

“चालि लोक अपने बिगाड़ि लेलक अछि आ दोखी बनबैए घरक बुढ़-पुरानकेँ.!”

विलास बाबाक सभ बात उचितलाल बाबा सुनलैन। किछु बात नीको बुझि पड़लैन आ किछु अधलो बुझि पड़लैन।

परिवारमे जहिना उचितलाल बाबा रहै छैथ तहिना विलासो बाबा रहै छैथ। जहिना तीन पीढ़ीक परिवार उचितलाल बाबाक छैन तहिना तीन पीढ़ीक परिवार विलासो बाबाक छैन्हे। उचितलाल बाबा अपना ढंगक सम्बन्ध परिवारक जन-जनसँ जोड़ि नेने छैथ, जखन कि विलास बाबाकेँ से नहि छैन, जन-जनक मन-मनमे खाधि बनल छैन। अपन-अपन विचारक बीच सभ छैन, जइसँ पारिवारिक कोनो विचारधारा परिवारक छैन्हे नहि।

तैबीच विलास बाबा उचितलाल बाबाक सोझहामे पहुँच गेल छला। उचितलाल बाबाकेँ सोझमे देखिते विलास बाबा ओहिना झपैट कऽ बजला जेना सभ दोख उचितेलाल बाबाक होइन- “उचित भाय! घरक सभ कहैए जे जहिना

मुरही पेट बिगाड़ैए तहिना घरक बुड़हा-बुड़ही घर बिगाड़ि रहल छैथ, से एहेन कहब होइ?”

विलास बाबाक बात सुनि जनिजाति जकाँ टप-दे उचितलाल बाबा नइ बजला। जनिजाति जकाँक माने भेल जे कोनो बात सुनी वा नइ सुनी, बुझी वा नइ बुझी मुदा एक लाड़ैन चालि देबे करब। एकटा बात सुनि नेने ओइ विचार वा ओइ काजक सर्वांग रूपकेँ थोड़े बुझि पाएब जे धॅांइ-दे आगूक कड़ी जोड़ि देब। यएह विचार उचितलाल बाबाक मुँहकेँ रोकने रहैन तँए तारतम करैत मुँह बन्ने रखने छला।

एक तोड़ बाजि विलास बाबा अपन कान ठाढ़ केने रहला जे उचित भाय की कहै छैथ। किछु बजता तखन ने कोनो तोड़-जोड़ लेल पूरक वा अनपूरक प्रश्न दोहराएब...। मुदा से तँ उचितलाल बाबाकेँ चुप रहने विलास बाबाकेँ भेटिये ने रहल छेलैन। जइसँ देह-हाथ तँ थरथराइत रहैन मुदा मुहसँ किछु बाजि नइ रहल छला। तही काल, ओही रस्ते अपने कमरसाइर हँसुआ-खुरपी ठीक करबए जाइत रही।

ओना, एक उमेरिया रहने उचितलाल बाबा आ विलास बाबाक बीच बेसी काल एकठाम बैसारो रहै छैन, गपो-सप्प होइते रहै छैन। कहियो-काल पोखरिक पानिमे टपब जकाँ असथिरेसँ दुनू गोरे बीचक टपान टपि जाइ छैथ आ कहियो-काल रक्का-टोकीक संग कहा-कही सेहो होइते रहै छैन, जे अपनो बुझल अछि आ ओहो दुनू गोरे अपन-अपन बुझिते छैथ। खाएर, जे जे बुझैत होथि वा अपना-अपना मने करैत होथि से अपन-अपन जनता। जहिना हुनकर सबहक माने उचितलाल बाबा आ विलास बाबाक पारिवारिक जिनगी छैन, माने तीन पीढ़ीक परिवार छैन, तहिना ने अपनो चाहै छी जे हमरो एहने झमटगर परिवार हुअए जइमे सबहक मुँहमे हजार नाम बनल रहत। माने कियो भैया, कियो बौआ, कियो बाबू तँ कियो बेटा इत्यादि जे पारिवारिक सम्बोधन अछि तइसँ सम्बोधित होइत रहब।

हाथमे हँसुआ-खुरपी नेने कमरसाइरिक रस्तामे रही, तइ बीचमे उचितलाल बाबाक घर पड़ै छैन आ ओहीठाम विलास बाबा सेहो रहैथ। ओना, विलास बाबाक देहक कँपकँपी कमैत-कमैत थीर भऽ गेल रहैन मुदा परशुराम जकाँ मनमे आगि धधैकिये रहल छेलैन। जे चेहराक लक्षणसँ अपनो बुझि पड़ल।

मन भेल जे कनी-काल अँटैक कऽ दुनूक सूरपता लगा ली जे दुनू गोरेक बीचक कोनो बात छी आकि आन-तेसरक। मुदा लगले मन बदैल गेल।

बदैल ई गेल जे दुनू गोरे एकबतरिया छैथ, सभ दिन कोनो-ने-कोनो काजे वा विचारे बाता-बाती करिते रहै छैथ, तइमे ओझराएब नीक नहि। अनेरे अप्पन काज पछुआ जाएत।

कहब जे जाबे लोकक मुहेँ गप-सप्प नइ सुनब ताबे गाम-घरक हाले-समाचारे केना बुझब? आ जँ सएह नहि बुझब तँ अनेरे मनुख बनि दुनियाँक जगहे किए छेकने छिऐ.!

मुदा लगले उचितलाल बाबा आ विलास बाबाक मुँहक पैछला गप-सप्प मोन पड़ि-पड़ि जाए। कहू जे जखन दुनू गोरे एकठाम बैस गप-सप्प करता जे अपना सभ अट्ठाइस कौरसँ बत्तीस कौर खाइ छी, तखन मनक संग पेटक तृप्ति सेहो ने हेबा चाही। तहिना शौचक समय वा मुहेँ-कान धोइकाल केते पानिक उपयोग करी, तइ पाछू दिनक-दिन आ महिनाक महिना दुनू गोरे रग्गरघस करैत मेहीसँ मेहियबैत रहै छैथ। तइसँ नीक ने अपने भेलौं जे कौरे-कौर गनबसँ नीक कोनो काजकेँ रोकि खाइले एलौं आ खेला पछाइत पुन: ओइ काजमे लागि आगू बढ़बैत चलबकेँ समतुल्य मानै छी। अनेरे कौरे-कौर आ किलोक-किलोकेँ जोड़ैक पाछू समय किए लगाएब। जखन शौचालय जाइ छी वा मुहेँ-कान धोइ छी तखन शौचक स्थान पवित्र भऽ जाए सएह ने भेल उचित, तइले मगक वा लोटाक नप्पा-नप्पीक कोन खगता.! मुदा से भेल नहि। उचितलाल बाबा शोर पाड़ि बजला-

"खुशीलाल, कनी एम्हरे अबिहह।"

ओना, उचितलाल बाबाक शोर पाड़ब सुनि मनमे भेल- जखन अपन दरबज्जेपर उचितलाल बाबा बैसल छैथ तखन जँ कोनो काजे खगलैन तँ अपन परिवारक लोककेँ ने शोर पाड़ितैथ, हमरा किए शोर पाड़लैन?

फेर भेल जे भरिसक आगूमे–रस्तापर–देखलैन तँए शोर पाड़लैथ। मुदा लगले फेर ईहो भेल जे उचितलाल बाबा अपन परिवारकेँ एक बुझि अपन एक हिसाब केलैन आ दोसर विलास बाबाकेँ बुझलैन। तँए दुनू गोरेक बीचक बात सुनैले तेहाला बुझि जनु शोर पाड़लैन अछि।

एक तँ ओहुना उचितलाल बाबाकेँ आदरक दृष्टिये देखिये रहल छिऐन तखन जँ कोनो बेगरते शोर पाड़लैन आ नइ जा आनाकानी करब सेहो नीक नहियेँ

हएत। ससरल आगू बढ़ैत लगमे पहुँच बजलौं-

"कमरसाइरिक रस्तामे छी, किए शोर पाड़लौं?"

हाथक इशारासँ सेहो आ मुहोँसँ उचितलाल बाबा बजला- "बौआ, देखिते छहक जे जेहने बुढ़ विलास भाय छैथ तेहने अपनो छी, दुनू गोरे पाकले आम भेलौं, कखन छी आ कखन टन-दे चलि जाएब.! तूँ नवतुरिया छह, अखन बहुत दिन जीबह। जँ कहियो दुनू गोरेक बीचक–माने हमरा आ विलास भाइक बीचक–गप उठत तेकर साक्षी-गवाह तोहीं ने हेबह।"

उचितलाल बाबाक बात सुनि मनमे भेल जे कहिऐन- 'तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे केकरो गवाह आकि जमानतदार बनब जानकेँ जोखिममे देब भऽ जाइए।' मुदा जँ कियो केकरो गवाही वा जमानतदार नहि बनत तखन दुनियाँ केना चलत! आकि दुनियाँक गतिविधिये केना चलतै? मुदा से सभ नहि, सभ कथुक अपन-अपन जगहो होइए आ स्थानो तँ होइते अछि। जहियेसँ ज्ञान-प्राण भेल तहियेसँ उचितलाल बाबाकेँ जनै छिऐन। जखन पिताक अमलदारीमे छला तखन अप्पन जन्मो ने भेल छल, मुदा जखन अपने पिता भेला तहियासँ तँ जनिते छिऐन, जे कोन रूप अप्पन परिवारकेँ–ऐठाम परिवारक माने लोकक संग परिवारक क्रिया-कलापसँ सेहो अछि–खत्ती दऽ दऽ उचितलाल बाबा ठाढ़ केने छैथ। जइसँ परिवारक काजो–परिवारक गति-विधिसँ–आ परिवारजनक बीच केते सुन्दर सम्बन्ध बनि जीवित छैन। मुदा से तँ विलास बाबाकेँ छैन नहि। दुनू गौआँ छिआ, दुनूकेँ जनै छिऐन। तइ बीचक बात छी, तँए कनी जबदाह तँ हेबे करत। ओना, मन निच्चाँ मुहेँ सेहो ससैर रहल छल मुदा जहिना गीतमे लोक गबै छै- 'जीवन नया मिलेगा अन्तिम चितामे जल के', तहिना केतौसँ हूबा आएल। हूबा अबिते हुबियाइत बजलौं-

"बाबा! अहाँ सभसँ हम कि कोनो बाहर छी जे संग नइ पूरब?"

हमरा बातसँ उचितलाल बाबाकेँ केतेक हूबा भेलैन आकि विलासे बाबाकेँ केहेन हूबा जगलैन से तँ ओ दुनू गोरे अप्पन-अप्पन मने अपने-अपने जनता, मुदा बातकेँ आगू बढ़बैत उचितलाल बाबा बिच्चेमे बजला-

"विलास भाय, तामस-पीतमे जे एतेकाल बजलौं, तेकरा आब छोड़ि दियौ। असल बात की छी से बाजू। ऐ उमेरमे एना आगि-अङ्गोरा हएब, सेहो तँ नीक नहियेँ ने हएत।"

उचितलाल बाबाक शान्त्वनासँ आकि परिवारमे अप्पन फुलहर रूप देखि एकाएक विलास बाबा शान्त भेला आकि किए शान्त भेला से तँ वएह जनता। मुदा ऊपरसँ केतबो मनकेँ बुझा शान्ति केलैन तैयो बजैक क्रममे बजा गेलैन-

“उचित भाय, की कहब! घरक लोक तेहेन चालि चलैन पकैड़ अगराही लगबैत रहैए जे एको क्षण एकठाम रहैक मन नइ होइए। मुदा फेर सोचै छी जे अप्पन सौंसे जिनगीक बनौल परिवार छी, तखन जँ अपने छोड़ि दी, सेहो केहेन हएत।”

ओना, उचितलाल बाबा संगी बुझि आकि एक उमेरिया बुझि हूँहकारी भरिते रहलखिन, मुदा अप्पन मन कछमछाए लगल। भाय! जे कोनो परिवारक ओझरौठकेँ सोझरौठमे बदलब ओतेक असान अछि जे लगले किछु बाजि कऽ पूरा देब। जहिना हेमोपैथिक इलाजमे बेकतीक वर्त्तमानक संग ओकर वंशक इतिहासपर सेहो नजैर देल जाइए तहिना ने परिवारोमे बेकतीगत-सामाजिक ओझरी सभ अछि। बजलौं-

“बाबा, अहाँ पहिने अप्पन सभ बात बाजि जाउ तखन जँ समय बँचत तँ लगले विचार कऽ लेब आ जँ नइ बँचत तँ समय बना रखि लेब। ने उचितेलाल बाबा केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने अहीं केतौ जा रहल छी। हम्मर मोजरे की अछि, एक हाक देब कि दौड़ले चलि आएब।”

ओना, विलास बाबाक मनकेँ बुझबैत बाजल छेलौं मुदा परिवारमे किछु एहेन बात कहि कऽ निकलल छला आकि परिवारे-लोक किछु कहि देने छेलैन से तँ वएह जनता मुदा समैयक नाओं सुनि भड़कैत बजला-

“एहेन परिवारमे दोहरा कऽ थूको फेकए नइ जाएब।”

हमरा हरल-ने-फुरल लगले स्वरे बजलौं-

“अप्पन परिवार जखन थूको फेकै-जोकर नइ रहल तइमे दोख केकर तकै छिऐ?”

हमर बातक चोट जेना विलास बाबाकेँ लगलैन तहिना ठमकला। विलास बाबाकेँ ठमैकते उचितलाल बाबा चरियबैत कहलखिन-

“भाय, की बजै छेलौं जे लोक?”

उचितलाल बाबाक बात सुनि विलास बाबा चोटे पाछू मुहेँ ससैर बजला-

“परिवारक लोक अपन चालि अपने बिगाड़ि लेलक अछि आ जखन कोनो अवघात होइ छै तँ हमर दोख लगबैत अपने निरदोख भऽ जाइए। कहू ई उचित भेल?”

विलास बाबाक बात सुनि उचितलाल बाबा ‘हँ-हूँ’ किछु ने बाजि रहल छला, मुदा अपना भेल जे जखन विचारक उत्तर-प्रत्युत्तर नहि हएत तखन विचारक अन्त केना हएत? बजलौं-

“विलास बाबा! लोहाक सिक्कैड़ हुअ कि फुलक माला, जहिना एक एकक जोड़ भेल रहैए तहिना परिवारोक बीच ने अछि।”

हमर बात सुनि विलास बाबाक मन जेना निच्चाँ मुहेँ हहरलैन तहिना बजला- “खुशीलाल, तोहर बात नीक जकाँ नहि बुझि सकलौं, कनी दोहरा कऽ कहक।”

विलास बाबाक मुँहक बात ‘दोहरा कऽ कहक’ सुनिते मनमे जवाबक जड़ि भेटए लगल। बजलौं-

“बाबा, एकटा बात अपने मुहेँ बाजू जे कोनो काज वा कोनो विचारक बीच जखन परिवारक किनकोसँ तल-वितल होइए, तखन अपने एक वृद्ध शब्दक प्रयोग, माने श्रेष्ठजनक रूपमे दोसराक बात वा काजक लूरिकेँ महत् दइ छिऐ आकि अपन जे टेढ़ो-टूढ़ विचार रहल तहीपर अडिग भऽ जाइ छिऐ?”

हमर बात सुनि विलास बाबा थकमका गेला, मुदा उचितलाल बाबा जेना बुझि गेला तहिना मुस्की दिअ लगला। ओना, विलास बाबाक इच्छा रहैन जे उचितलाल भाय पक्षमे बाजैथ, जइसँ अपन बँचाउ हएत। मुदा उचितलाल बाबाक मनमे रहैन जे जाबे अप्पन जवाबदेहीक बात लोक अपने मुहेँ नहि बाजत ताबे मुहाँ-मुहीं दोख केना बुझत?

ओना, परिवारमे कोनो बच्चा एहेन मुँहसच्च भऽ जाए जे माए-बाप वा परिवारक कोनो आने जन लग बजबे कम करैए, ओकर परिणाम केहेन भेटैए? जखन कि गप-सप्पक क्रममे ओकरा सज्जनोमे महा-सज्जन बुझल जाइ छै मुदा परिणाम विपरीत होइक सम्भावना की नइ बनल रहै छै.?

एकाएक मनमे बिहाड़ि जकाँ हूहूआ कऽ विचार आएल। विचार आएल जे जखन दुनू गोरे चलनपियारे छैथ तखन बीचमे अपने ओहन घटिया छी जे घटि

जाएब। जहिना दुनू गोरे मुँह बन्न रखने छैथ तहिना अपनो किए ने राखी। सएह केलौं। चुप्पा-चुप्पी पसैर गेल।

थोड़ेकालक पछाइत, अपन चुप्पी तोड़ैत उचितलाल बाबा बजला- “विलास भाय, आब अपना सबहक औरुदे केतेक अछि जे अनेरे मरैयो बेर जस-अजस लेब। छोड़ू तामस-पीड़ाकेँ। केतौ आनठाम जाएब जे कोनो तरहक लाज-शरम हएत। अप्पन घर छी अप्पन परिवार छी, जखन सभ अपने छी तखन अनेरे मान-रोख मनमे कथी-ले राखब। हँ! एते भऽ सकैए जे अखन तामसे मन पीड़ाएल अछि, अखन घरक अन्न-तीमनमे सुआद नइ पाएब, जइसँ भुखले रहि जाएब। से नहि तँ अखन एतै रहि जाउ, साँझ दबा कऽ अपना ऐठाम चलि जाएब।”

उचितलाल बाबाक विचार अपनो नीक लागल, लगले हाथ विलास बाबाकेँ हमहूँ कहलयैन- “बाबा! साँझू पहर हमहूँ आएब, चलब अहाँकेँ घरपर पहुँचा देब।” ❑

⌛ पसेनाक मोल, 2019 ⌛

परिपक्व निरलज

सूर्यास्तक समय भऽ गेल रहै मुदा सूर्य डुमल नहि छल। अपनौं बाड़ीसँ काज कए नित्यकर्म दिस जेबाक विचार कइये रहल छेलौं कि मनसुख आएल आ बाजल-

"रजनी कान्त भाय, बुधियार भाय जहलसँ एला अछि से चलू कने जिज्ञासा कऽ लिऐन।"

बुधियारक नाओं सुनिते देह जेना सिहैर उठल। सौंसे देहक रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेल। ओना, अपनो बुझल छल जे परसू साँझमे बुधियार जहलसँ आएल, मुदा मनमे तेते घृणा ओकरा प्रति अछि जे मन भिन-भिना गेल। केकर जिज्ञासा करए जाएब। ओना, जिज्ञासा करब अधला विचार नहियेँ छी मुदा जिज्ञासोक तँ अपन महत छइहे। आइ जँ कियो जनसेवा वा अपने कोनो एहेन वृत्ति केलाक पछाइत जहल गेल रहैत जइसँ अपने वा जनमानसेक भलाइक विचार निहित रहैत तँ ओइ जिज्ञासाक अपन महत होइत, मुदा जे से नहि भऽ लुचपन्नीक कारणे जहलसँ आएल अछि, तेकर जँ जिज्ञासा करए जाएब तँ तेकर स्पष्ट माने होइए जे अपनो ओहने-ओहने लुचपन्नीक समर्थक छी। जे अपन विचारक ठीक विपरीत बात भेल। बजलौं-

"मनसुख, तूँ जखन बुधियारक जिज्ञासा करए विदा भेल छह ते जाह, मुदा हम नइ जेबह।"

मनसुख समाजक ओहन लोक, जेकरा अपन कोनो वैचारिक दिशा नहि। की नीक आ की अधला तेकर विचार करैक ने जरूरते छै आ ने से बुझबे करैए। समाजक देखा-देखीक अनुकूल अपनो चलैए आ ओही विचारानुसार हमरो आबि कहलक। अपन तँ विचारो अछि आ विचारक अनुकूल चलैक दिशा सेहो अछि, तँए ओहन-ओहन काजकेँ अधला बुझि परहेज केनहि छी।

समाजमे बुधियारक परिवार सम्पन्न परिवार मानलो जाइए आ अछियो। सम्पन्न ऐ खियालसँ जे जेकरा पचास बीघासँ ऊपर अखनो जमीन छै। चारि भाँइक भैयारीमे भिनौज भेला पछातियो सोमनाथक अमलदारीमे, माने बुधियारक पिता सोमनाथकेँ चारि साए बीघासँ ऊपर जमीन छेलैन। ओना, जमीन्दारी नहि छेलैन, जमीन्दारीक माने भेल रैयतसँ जमीनक मालगुजारी लेब। सोमनाथकेँ से नहि रहैन मुदा रुपैयोक आ धानो-चाउरक महाजनी तँ छेलैन्हे। अन्नक डेढ़िया चलै छेलैन। एक मनसँ डेढ़ मन सूदि-सवाइ चलै छेलैन। जइसँ केते लोकक जमीन कर्जा तरे सोमनाथकेँ भेल छेलैन। अपना मुइला पछाति सोमनाथक चारू बेटामे भिन-भिनौज भऽ गेल। ओना, किछु जमीन एक-दोसर भैयारीमे बेइमानियो भेलैन आ अपना भैयारीमे मुकदमावाजी सेहो भेलैन। जइसँ बहुत जमीन बिकबो केलैन। खाएर जे भेलैन मुदा पचास-पचास बीघा अखनो भैयारीक माथपर जमीन छैन्हे।

बुधियार चालू-पुरजा लोक। सभ पार्टी माने राजनीतिक पार्टीसँ साँठ-गाँठ रखनहि अछि। जखन जेहेन हवा बहल तखन तइ पार्टीक संग भऽ गेलौं आ अपना उल्लू सीधा करैत रहलौं, यएह चरित्र बुधियारक रहल। महाजनी सोल्होअना, माने सूदि-सवाइ समाप्त भऽ गेलैन।

सरकारी योजनानुसार, बैंक राष्ट्रीयकरण भेला पछाइत माने जखन इन्दिराजी प्रधानमंत्री छेली तखन जे बैंक सभ राष्ट्रीयकरण भेल, तेकर पछाइत आमजनकेँ सेहो बैंकक सुविधा प्राप्त भेल। ओना, शत-प्रतिशत लोककेँ सुविधा नहि भेटलैन। तेकर कारण बैंकक अपन आर्थिक स्थिति सेहो छेलै मुदा किछु लोककेँ सुविधा भेटबे केलैन। ओही सुविधानुसार बुधियार पाँच गोरेकेँ अगुआ माने पाँचटा साधारण किसानकेँ अगुआ बैंकसँ लोन दियौलैन। आ पाँचो अनपढ़ लोक जइसँ अपने लिखै-पढ़ैक लूरि नहि छेलैन। अँगुठाक निशानेसँ काज करै छला। बैंकक मैनेजरसँ साँठ-गाँठ करैत पाँचो गोटेकेँ लोन मंजूरी करौलैन। मुदा लोन लोनीकेँ माने कर्ज नेनिहारकेँ प्राप्त नहि भेलैन। ओ रुपैआ बुधियार अपने उठा लेलैन। साल भरिक पछाइत जखन बैंकक कर्जक तगेदा पाँचोकेँ भेलैन, तखन चारि गोरेकेँ जे मुँह दुब्बर छला, हुनका उनटा-सीधा बुझा बुधियार चुप केने रहला मुदा सिंहेश्वर चकित भेल।

सिंहेश्वरक बहनोइ सेहो चालू-पुरजा लोक। हुनका जा कऽ सिंहेश्वर सभ

बात कहलैन जे महींस पोसैक नामपर तीस हजार रुपैआ बैंकसँ लोनक लेल दरखास्त देलिऐ। केते दौड़-बरहा केलाक पछातियो लोन नहि भेटल। जे साल भरि पहिलुका बात छी। ऐ साल माने एक सालक बाद तीस हजार मूर आ ओकर सूद लगा पैंतीस हजार रुपैआ कर्जक तगेदाक नोटिश भेल अछि।

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर पुछलखिन-

"अपने बैंकसँ रुपैआ उठेने छेलौं आकि कियो दोसराइतिक हाथे कारोबार केने छेलौं?"

तैपर सिंहेश्वर कहलखिन-

"बुधियारक हथौटी कारोबार केने छेलौं। आइ-काल्हि, आइ-काल्हि करैत जखन तीन मास बीत गेल। ताबे खेतीक समय सेहो आबि गेल छल, हारि-थाकि कऽ छोड़ि देलिऐ।"

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर बुझि गेला जे एहेन-एहेन विचौलिया सभ एहेन-धन्धा करिते अछि। रघुवीर सिंहेश्वरकेँ संग केने बैंकपर गेला। बैंकक मैनेजरकेँ नोटिश देखबैत कहलखिन जे सिंहेश्वर भैंसक लोन लेल दरखास्त जरूर केने छला मुदा अन्तो-अन्त हुनका लोन प्राप्त नहि भेलैन।

बैंकक मैनेजर सभ कागजात मिलबैत कहलखिन-

"हम किछु नहि कए सकै छी। तहूमे तीनिये मास एना भेल अछि, नीक जकाँ सभ किछु बुझलो ने अछि।"

रघुवीर पुछलखिन-

"तखन की उपाय हएत?"

मैनेजर रस्ता बतबैत कहलखिन-

"शिकायतिक एकटा दरखास्त बैंकोमे दऽ दियौ। जइसँ हम तत्काल तकेदा करब रोकि देब आ अहाँ आगू बढ़ि जिलाक जे बैंक अछि, जिनका अधीन ऐ सभ बैंकक कारोबार अछि, एकटा दरखास्त हुनका लग दियौ। जँ कोनो तेहेन जानकार लोक होथि तँ हुनका संग कऽ लेब।"

बैंकक मैनेजरक विचारानुसार रघुवीर सएह करैत कहलखिन-

"ठीक छै सर, हम अपने सक्षम छी, किनको जरूरत हमरा नहि अछि।"

कहि रघुवीर घरपर आबि विचारलैन जे अनेरे तेसर-चारिमक भाँजमे की पड़ब। अगर बैंकक जिला ऑफिस जँ नहि किछु करत तँ सोझे न्यायालयमे केस करब। यएह विचारि रघुवीर जिलाक बैंक पहुँचला। बैंकक मैनेजर पंजाबी छला। रघुवीर अपन सभ बात सरदारजीकेँ कहलखिन। सरदारजी, तेसर दिनक समय बना ग्रामीण बैंकक शाखामे पहुँचला। रजिष्टर देखि बुझि गेला जे बैंकक मैनेजर आ विचौलियाक साँठ-गाँठसँ एहेन घटना भेल अछि। बैंकक मैनेजर तँ अपन कागजी मिलानी एहेन हिसाबसँ केने जे पकड़मे नहि आबि रहल छला मुदा बुधियार तँ पकड़मे आबि गेल। ओही कारबाइमे बुधियार जहल गेल छल। जइमे लोनक आधा माने पनरह हजार रुपैआ जमा करौलाक पछाइत न्यायालयसँ, दस दिन जहलमे रहला पछाइत जमानत भेल छल।

हमर बात सुनि मनसुख बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ नहि जाएब तँ नहि जाउ, मुदा समाजक हैसियतसँ हम जाइ छी।"

बजलौं-

"तोरा जेबासँ थोड़े मनाही करै छिअ।"

अदहा घन्टाक पछाइत मनसुख पुन: आएल। अबिते बाजल-

"रजनीकान्त भाय, पहुँचते बुधियार भाय अहींक चर्च उठौलैन।"

बजलौं-

"पहिने ई कहह जे बुधियारक मन केहेन बुझि पड़लह।"

मनसुख बाजल-

"मिसियो भरि मन मलिन नहि बुझि पड़ल।"

बजलौं-

"जखन ओइठाम, बुधियारक ऐठाम गेलह तखन आरो के सभ छला?"

मनसुख बाजल-

"आर कियो ने छला। जाइते बुधियारकेँ पुछलयैन जे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। कहलैन- हौ, जिनगीमे अहिना होइ छै। जखन पुरुख बनि धरतीपर जनम नेने छी तखन केस-फौदारी आकि जहल-हिरासतक डर करब। जँ से करब तखन

एको दिन जीब सकै छी।”

मनसुख मुँहक बात सुनि मनमे उठल जे कहिऐ, ऐ धरतीपर निरलजोक की कमी अछि..! मुदा फेर अपने मन कहलक जे वेचारा मनसुख मुँह दुब्बर लोक अछि, एकरा कहिये कऽ की हएत। आइ जँ बुधियार सोझामे रहैत तँ किछु कहबो करितिऐ। बजलौं-

“हमरा विषयमे बुधियार की सभ कहलखुन?”

मनसुख बाजल-

“ओ बजला जे गामक सभ जिज्ञासा करए आएल मुदा रजनीकान्त अखन तक नहि आएल अछि।”

बुधियारक विचार सुनि मन तामसे शृंग चढ़ि गेल। एक दिस हुअए जे पहिने दसटा गारि दिऐ, दोसर दिस ईहो हुअए जे गारिये पढ़ब मुदा सुनत तँ नहि। तँए अनेरे गारिये पढ़ि कऽ की हएत। फेर मनमे भेल जे जखन बुधियार मनसुखक सोझामे हमर चर्च केलक से बड़बढ़ियाँ आ हम जँ मनसुखक सोझामे दसटा बात कहबै से बड़ अधला। मनमे अबिते पुन: क्रोधक दोसर तोर मनमे उठि गेल। जेना-जेना तामस उग्र होइत गेल तेना-तेना देहमे थरथरी सेहो तेज हुअ लगल। बजलौं-

“मनसुख, बुधियार हमर के, तीन मे कि तेरह मे। धनीक बापक बेटा छी तँ रहह, तइसँ हमरा कोन मतलब अछि। आइ तक कहियो एक सेर कि एक टका मांगए गेलिऐ।”

बिच्चेमे मनसुख बाजल- “भाय साहैब, एना जे उक्टा-पैंची करब तँ अनेरे झंझट हएत। जइ झंझटसँ लाभ किछु ने आ नोकसान ढेरी हएत।”

मनसुखक बात सुनि मियाद आरो गरमा गेल। बजलौं-

“झगड़ा-झंझटक डर करब तखन मुँह उठौल हएत। मुँह उठबैले सभ किछु करए पड़ै छै। तोरा बुझल हेतह कि नइ बुझल हेतह। भऽ सकैए जे सुननो हेबह तँ बिसैर गेल हेबह।”

बिच्चेमे मनसुख बाजल- “कनी मोन पाड़ि दिअ। जखने मोन पाड़ि देब तखने मोन पड़ि जाएत।”

बजलौं- “पाँच साल पहिलुका घटना मोन पाड़ह। सुनने रहक ने जे माइनर एरीगेशनमे नोकरीक बहाली ले दस-बाहर गोरेसँ बीस-बीस हजार रुपैआ बुधियार

नेने रहइ। ने केकरो नोकरी भेलै आ ने केकरो रुपैये घुमबैले तैयार भेल।”

मनसुख बाजल- “हँ, अदहा-छिदहा तँ मोनो अछि मुदा अदहा-छिदहा बिसरियो गेलौं। ओही रुपैआ ले ने रूपलाल आ गौरीशंकर बुधियारकेँ चौराहापर पकैड़ कऽ कहने रहै जे जँ तोरा बुते नोकरी नइ दियौल भेलह तँ हमर रुपैआ सूदि लगा कऽ लाबह। नहि तँ एको डेग आगू ससरऽ नहि देबह।”

बजलौं- “हँ!”

मनसुख बाजल- “हँ! हँ! आब मोन पड़ल। सौंसे गामक लोक जे बैस कऽ पनचैती केने रहैथ।”

बजलौं- “हँ। देखने रहक ने जे गाममे कियो बुधियारक जमानतदार होइले तैयार नहि भेला। तेहने निरलज-पतीत बुधियरबा अछि। ई तँ रच्छ रहल जे दीनानाथ काका अपना सिर सभ दोख उठबैत जान बँचौलखिन। नहि तँ ओही दिन तेहेन मरम्मत दुनू गोरे कऽ दइतैन जे पुस्त-पुस्ताइन धरि बुधियारकेँ नीक जकाँ मोन रहितैन।”

दुनू गोरेक माने हमरा आ मनसुखक बीच गप-सप्प होइते छल कि गिरिधारी लाल पहुँचल। गिरिधारी लालकेँ पहुँचते बजलौं- “की हाल-चाल गिरिधारी?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, अहींसँ एकटा विचार पुछए एलौं हेन।”

बजलौं- “केहेन विचार?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, काल्हिसँ केते गोरे कहलैन हेन जे बुधियार जहलसँ एला हेन तँए जिज्ञासा कऽ लहुन।”

बजलौं- “ऐ मे हम कि विचार देबह। अपन जे मन हुअ से करह।”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, अपना सभ एक विचारक लोक छी, जखन कोनो विचार करैक होइए तखन अहींसँ ने पुछि लइ छी। जँ अपना मने करैक रहैत तँ केने रहितौं किने।”

गिरिधारी लालक विचार सुनि मने-मन विचार केलौं जे पहिने गिरिधारीए लालक मनक विचार किए ने बुझि ली। बजलौं- “अपन की विचार होइ छह?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, जँ अपना संग नीक बेवहार

बुधियारक रहैत तँ कनी सोचबो-विचारबो करितौं मुदा मन अछि कि नहि जे स्कूल लगहक जे पँचकठबा खेत अछि, ओइ खेतक बेचनामा दाम-दीगर हमरासँ केने रहए। अदहा रुपैआ सेहो दऽ देलिऐ आ पछाइत डाकपर चढ़ा ओइ खेतकेँ दोबर दाममे जागेसरक हाथे बेच लेलक। अपने जे रुपैआ देने रहिऐ ओ छह मास तक घिसियौर कटा कऽ देलक।"

ओना, ई बात अपनो बुझलो छल आ मोनो छल, मुदा दुनूक बीच बीचक सम्बन्ध दुआरे बजलौं- "कनी-कनी मनो अछि मुदा नीक जकाँ मोन नहि पड़ि रहल अछि।"

गिरिधारी लाल बाजल- "आठ-दस बरख तँ भइये गेल अछि, भरिसक तेँ बिसैर रहल छी।"

बातकेँ आरो मटियबैत बजलौं- "हौ गिरिधारी भाय, देखिते छहक जे केते धनचक्करमे सदिकाल पड़ल रहै छी, तँए भरिसक मनसँ उतैर गेल।"

गिरिधारी लाल बाजल- "भाय साहैब, बुधियारक बेटीक दुरागमन रहइ। हाथमे पाइ-कौड़ी नइ रहै जे काज सम्हारैत। हमरा कहलक जे गिरिधर भाय, स्कूल लगहक खेत बेचब। तोरा खेतक आड़ियेमे अछि, लऽ लएह। आठ हजार रुपैये कट्ठाक हिसाबसँ चालीस हजार दाम भेल। कहलिऐ जे काल्हिये रजिष्ट्री ऑफिस चलह, ओतइ सभ रुपैओ दऽ देबह आ तोहूँ रजिष्ट्री कऽ दिहह।"

बजलौं- "आब कनी-कनी बात मोन पड़ल जाइए।"

गिरिधारी लाल बाजल- "तइ पर ओ कहलक जे पाँचमे दिन बेटीक दुरागमन छी। बुझिते छहक जे बेटीक दुरागमनमे केतेक जोगार करए पड़ै छै। तँए अखन रजिष्ट्री ऑफिस जेबाक पलखैत नहि अछि। तहूमे बीचक दू दिन ऑफिस बन्नो रहइ। अपनो मनमे भेल जे बेटी-जाति तँ समाजक होइए, तँए बीस हजार रुपैआ लगले दऽ देलिऐ। बेटीक दुरागमन भेला पछाइत जखन रजिष्ट्री करैले बुधियारकेँ कहलिऐ तखन तीन-तेरह देखबए लगल। जमीनकेँ डाकपर चढ़ा देलक। सहए छी ओ बुधियरबा।"

बजलौं- "जमीनक की भेल?"

गिरिधारी लाल बाजल- "की हएत। डाकक भीर नहि गेलौं। जमीनक डाकक माने जमीने मात्रक डाक नइ ने होइए। समाजमे दुश्मनियो बढ़ै छै किने।"

जेते बात गिरिधारी लाल बाजल ओ तँ अपनो बुझले रहए, मुदा सात-आठ बरख पहिलुका बात रहै तँए अनठा कऽ बाजल छेलौं। बजलौं-

“खाएर, जे जहिया भेल से तहिया भेल। औझुका की विचार छह से बाजह?”

जहिना बरखा भेलापर कोनो सुखल धारमे खेत-पथारक पानि एने धारा बनि बहए लगैए आ पाछूसँ पहाड़क पानिक संग गाम-घरक खेत-पथारक पानि मिलि पाछूसँ आबि धारक धाराकेँ प्रवल बना दइए जइसँ धारक पेट उफानपर उठि जाइए तहिना गिरिधारी लालक विचारमे उफान उठि गेल। बाजल-

“भाय साहैब, अपना समाजमे यएह सभसँ पैघ कमजोरी अछि जे लगले लोक कोनो बातकेँ बिसैर जाइए। जइसँ समाजक गति-विधि कमजोर होइत-होइत एते कमजोर बनि गेल अछि जे अपन कोनो चीन्हि-पहचिन्ह रहिये नहि गेल छइ।”

गिरिधारी लालक विचारमे सह दैत बजलौं- “तखन की करैक विचार छह?”

गिरिधारी लाल बाजल- “अपन विचार अछि जे जिज्ञासा करए नहि जाएब।”

अपन जान बँचबैत बजलौं- “जखन अपन विचार नइ जेबाक छह तखन नइ जाह। गाममे केकरो कोइ मालिक छी जे नइ जेबह ते कियो गामसँ उजारि देतह।”

गिरिधारी लालकेँ जेना सह भेटलै तहिना बाजल- “भाय साहैब, जइ मनुक्खकेँ आइन नहि आ जइ बरदकेँ पाइन नहि ओहो कोनो मनुक्खे भेल आकि बरदे भेल।”

गिरिधारी लालक विचार सुनि हँसी लगि गेल। मुदा हँसीकेँ दाबि बजलौं-

“गिरिधारी भाय, अपना समाजक सभसँ पैघ दुर्बलता यएह छी जे जइ समाजक पेटमे एते प्रवल शक्ति अछि जइसँ किछु कए सकैए, ओ समाज ओहन मरल पड़ल अछि जे जेकरा कोनो गति गुद्दा नहि छइ।”

ओना, गिरिधारी लालक मनमे बुधियारक प्रति आगि धधैक रहल छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओ छल नहि जे ओइ आगिकेँ आरो धधकबैत। तैयो अपन मनक

आक्रोशकेँ आक्रोशित करैत गिरिधारी लाल बाजल- "भाय साहैब, जँ समाजमे एकरूपता रहैत तँ ओहन-ओहन निरलज-पतीतकेँ बीच चौराहापर ठाढ़ कए समाज मुँहपर थुकैत। मुदा समाजो तँ तेहेन बनि गेल अछि जे के केकरा थुकत।"

बजलौं- "गिरिधर भाय, देखिते छहक जे समाजो बिनु डोराडोरिक मनुक्ख जकाँ बनि गेल अछि। तखन तँ अपन इज्जत-आबरू बँचबैत मनुक्ख बनि जीब ली यएह सभसँ पैघ उपलब्धि भेल।"

हमर बात जेना गिरिधारी लालकेँ जँचल तहिना बाजल- "ठीके कहलौं, भाय सहाएब।"

बजलौं- "आब की करबह?"

गिरिधारी लाल बाजल-

"कियो अपन जीवनक अपने मालिक छी। ओना, समाजमे रंग-बिरंगक दुष्ट सेहो अछि, मुदा ओइ दुष्टक बीच अपन विचार आ बेवहारकेँ जहाँ धरि सम्भव हुए तहाँ धरि रक्षा करैत जीवन जीब ली, यएह ने भेल मनुक्खक सभसँ पैघ मनुक्खपना।"

बजलौं-

"हँ, से तँ भेबे कएल।"

गिरिधारी लाल बाजल-

"ऐ भागक सुर्ज ओइ भाग किए ने उगै, मुदा अपन विचारकेँ कोनो हालतमे बदैल नहि सकै छी। नइ जाएब बुधियरबाक जिज्ञासा करए, जाइ छी अपन घर।"

बजलौं-

"जाह।" ❑

⌛ रहै जोकर परिवार, 2020 ⌛

केकरो भरोस

परसू कछुआ हाटपर सनतन भाय भेटला। बहुत दिनसँ माने जहियासँ पानि-बुन्नीक झड़ी लधलक तहियेसँ, माने ई जे पैछला तीन माससँ सनतन भाय भेँट नहि भेल छला।

अपना सभक, माने अपना गाम सभक, कछुआ हाट प्रमुख हाट रहल अछि। सपताहमे दू दिन हाट लगैए जे मासमे आठ-नअ दिन भेल, तइमे एहेन कोनो दिनक हाट शेष नहि बँचै छल जइमे पचीस-तीसटा वेपारी आ सइयो हटवाह, हटवाह भेला हाटमे चीज-वौस कीनिनिहार, जे अपन लेन-देन नहि करै छला। समय आगू बढ़ने कछुआ हाटक मुहौँ-कान आ कारोबार सेहो अगुएबे कएल अछि मुदा अपना गामक सम्बन्ध कमिकऽ शून्योसँ निच्चाँ उतैर गेल अछि। ओना, हाटक लेनो-देन आ लोकक आवाजाही सेहो बढ़बे कएल अछि। जहिना कहियो कछुआ हाट गामक प्रमुख हाट बुझल जाइ छल तहिना अखन अपना गामक झंझारपुर हाट बुझल जाइए। ओना, झंझारपुर हाटकेँ कछुआ हाटक अपेक्षा आरो बेसी सुविधा छै, जइसँ बढ़ब सोभाविके अछि। कछुआ हाटक चौवगली गाममे तीमन-तरकारीक खेती भेने हाट चलैए जखन कि झंझारपुरक हाट बाट आ बाजार रहने अछि।

कछुआ हाट जेबाक इच्छा ऐ दुआरे भेल जे जहियासँ छोटी लाइन क गाड़ी बन्न भेल, तहियासँ ने तमुरिया गेल छेलौं आ ने कछुआ हाट। दूर सफर करैबला छीहे नहि, माने कोनो काजे ने होइए, मुदा निर्मली-सँ-झंझारपुर धरिक खगता तँ बेसीकाल होइते अछि, तँए एतबे दूर सफर करै छेलौं, सेहो बन्ने भऽ गेल। जहिया छोटी लाइनक जगह बड़ी लाइनक गाड़ी चलत तेकर जे उद्घाटन भेल ओ आइसँ बीस बरख पहिने भेल, तहिया अपन उमेर आइसँ बीस बरख पहिलुका छल, तँए मनमे तुष्टिक आशा जगने सन्तुष्टि भेबे कएल छल, मुदा बीस बर्खक पछाइत आइ

जखन अपन शरीर गाड़ी सफर करै-जोकर नहि रहल, तखन तमुरिया स्टेशनक द्वार खुजैक सम्भावना बनि रहल अछि। एकाएक मन बीस साल पाछू घुसैक ओइ समयक जिनगीपर गेल जखन तमुरिया स्टेशन प्रतिदिन बेरू-पहरमे टहलैले जाइ छेलौं, ओ बीरान भऽ गेल, केकरो भरोस केते समय लोक कऽ सकैए। सनतन भायकेँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे केतौ दूरसँ अबै छैथ किए तँ दूरक यात्रीक लक्षण दोसरे रंगक भऽ जाइए। सनतन भाय लग जा बजलौं-

"भाय, हाटक काज भऽ गेल कि पछुआएल अछि।"

किए कहितिऐन जे अहाँ कोनो धाम वा आन गामसँ अबै छी तँए पहिने परसादी दिअ आकि सनेस खुआउ। हाटक काज सनतन भायकेँ तखन रहितैन जखन गामपर सँ, माने घरपर सँ, नियारिकऽ हाट करैले गेल रहितैथ। से तँ छेलैन नहि। बाहरसँ अबै छला, संयोगसँ हाटक दिन छल, हाट लगल छल। सनतन भाय बजला- "भेले सन बुझह।"

बजलौं-

"अपना गाम सभमे ते तीमन-तरकारीमे आगि लगि गेल अछि। महगो जँ भेटए तखन ने, से तँ भेटबे ने करैए। अल्लू खाइत-खाइत मोटैनी सेहो पकैड़ लेलक आ मन सेहो अकछा गेल अछि। तँए हरियर तरकारी ले एलौं हेन। ऐ इलाकामे तीमन-तरकारीक खेती बेसी होइते छइ। लगले हमहूँ कीनि लइ छी आ दुनू भाँइ गप-सप्प करैत संगे चलब।"

सनतन भाय सेहो तीन दिनक सफरमे असगरे गौंआँ छला तँए गप-सप्प करैक मन बनल छेलैन्हे। अनगौंआँक संग लोक जी-जाँतिये कऽ ने गप-सप्प करै छैथ मुदा गौंआँ-घरूआक संग तँ से नहि होइए। ओ तँ जीह खोलि कऽ गप-सप्प करैबला होइते छैथ। सनतन भाय बजला-

"ताबे हमहूँ तमाकुल चुनबै छी, तोरो सिदहा लगा दइ छिअ।"

ओना सनतन भाय ई कहलैन जे 'जल्दी काज निपटाबह' आकि 'पाँच मिनटसँ बेसी नहि रूकबह।' ओ काजक घड़ीक हिसाब बैसा बाजल छला। समय नपैक एकटा घड़ी काजो छीहे। सनतन भाइक विचार सुनि अपन मन अपन काजकेँ पाँच मिनटमे बान्हि देलक। ऐठाम ई नहि कहि रहलौं हेन जे अपन जीवनक लीलाक संकल्पक संग निश्चित अवधियोकेँ संकल्पित कऽ ली। तँए ईहो नहि बुझब जे कोनो संकल्प कऽ लेलौं, सरकारी काज जकाँ उद्घाटन कऽ लेलौं,

मुदा काजमे हाथे ने लगल..! तखन ओ हएत केना।

काजो बेसी नहियेँ छल, बगलेमे जे तरकारीक दोकानदार छल ओकरे लग जा दू किलो रामझिमनी आ तीन किलो घेड़ा दइले कहलिऐ। कारबारी लोक छेलए-हे, अन्दाजेसँ तेना तराजूपर चढ़ौलक जे एक्के तौलमे तरकारी तौला गेल। कनडेरिये आँखिये सनतन भाय सेहो देखिते छला। झोरामे तरकारीकेँ सेरियबैत देखि सनतन भाय तमाकुलमे थोपड़ी देलैन। अपनो दोकानदारकेँ पाइ दऽ जुमि गेलौं। लगमे अबिते सनतन भाय बजला- "आरो कोनो काज छह आकि भऽ गेलह।"

बजलौं- "भेले सन बुझू।"

हमर बात सुनि सनतन भाइक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइक कारण भेलैन जे एकटा मन कहैन जे 'भेले सन'क माने सोल्होअना नइ भेल। दोसर मन कहैन तखन 'भेल सन' किए बाजल.? मन तेना ओझरा गेलैन जे अन्तो-अन्त सनतन भाय निर्णय नहियेँ कऽ सकला जे 'हँ' भेल कि 'नहि' भेल। अज्ञानी जकाँ सनतन भाय बजला- "से की?"

बजलौं- "भाय, जँ अहाँ तमाकुलक चर्च नहि करितौं तँ अपन विचार छल जे तरकारी कीनि पान खा हाटपर सँ घुमितौं, माने विदा होइतौं। मुदा जखन अहाँ तमाकुल चुना लेलौं तखन पान नहि खाएब।"

'पान'क नाओं सुनि सनतन भाइक मन अपनो चटपटेलैन मुदा पान रखनिहार छैथ नहि, दोसर, रस्तामे पाइ तेना सठि गेल छेलैन जे पानो-जोकरक जेबीमे नहि रहलैन तँए तमाकुलेसँ काज चला रहल छला। जहिना कोनो काजकेँ अज्ञान सज्ञान दुनू भाँइ मिलिकऽ करैए तहिना सनतनो भाय अपन पार-घाट लगा लेलैन। मुदा काजो तँ काज छी, हाटपर पार-घाट ने लगि गेल मुदा आगू तँ तमुरिया स्टेशन बीचमे अछिए। सनतन भाय बजला-

"तमाकुलो कि कोनो अमले छी, मुँहमे दियौ आ थुकैर कऽ फेक दियौ। रघुनाथक दोकानक पान खेना बहुत दिन भऽ गेल, ओतइ पान खाएब।"

'रघुनाथक पानक दोकान' सुनि अपन मन बीस बरख पाछू गुड़ैक गेल। मोन पड़ल रघुनाथक पिता- सुकदेवक लगौल पान। घर-घर, परिवार-परिवार तँ पान लगौलो जाइए आ खेबालो छथिए, मुदा पान लगबैक सूत्र सभकेँ थोड़े बुझल छैन जे पानक पात केहेन होइ, ओइमे केते चुन आ केते खाएरक संग सुपारियो

आ मसल्लो पड़त। से तँ करै नहि छैथ, करै छैथ ओहिना जहिना कुरता कटि गोलगला बनल आ गोलगला कटि फत्ती बनल। जँ पानक पात नहि हुअए तँ पानक डंटीएमे चुन लगा खा लिअ। जँ खाएर नइ रहए तँ चूने-सुपारीसँ काज चला लिअ आ जँ सुपारियो नइ रहए तँ चुने-खाएरसँ काज चला लिअ। ..रघुनाथक पिता सुकदेव पहिले-पहिल पानक दोकान तमुरिया स्टेशनपर शुरू केलैन। अपने बरेब करै छला, दोकान करैसँ पहिने वेपारी हाथे पान बेचै छला, पानक अपन दोकान करैक विचार मनमे जगलैन आ दोकान शुरू केलाह। सुकदेव भूमिहीन लोक छला। मुदा एहेन जातिमे जन्म नेने छला जे जाति पानक खेतीसँ जुड़ल अछि। अपना खेत नहि रहने सुकदेव पोखरिक कातमे दू कट्ठा खेत मनखप लऽ पानक खेती शुरू केलैन। पानक खेतीकेँ बरहबरखा खेती कहले जाइए। एक बेर रोपू, बारह बरख धरि ओही रोपल जड़िसँ काज चलैत रहत। ई दीगर भेल जे किनको खेती दुइये-तीन बर्खमे उपैट जाइ छैन आ किनको बीस-बीस बरख चलै छैन।

पाँच कोरवासक पचीस आँतर बरेब सुकदेवकेँ छेलैन, जइमे सालो भरि एक दुपहरिया, माने भिनसरसँ दुपहर धरि, काज अपन ठाढ़ भेल छेलैन। बरेबक आमदनियोँ ओहन छेलैन्हे जइसँ परिवार चलै छेलैन। बेरूका समयकेँ खाली देखि सुकदेव तमुरिया स्टेशनपर, कठघरा बैसा पानक दोकान शुरू केलैन, जइसँ परिवार चलबैत बाल-बच्चाकेँ गामक स्कूल धरि, तमुरियामे हाइ स्कूल तक अछि, पढ़ेबो-लिखेबो केलैन आ बिआहो-दान कइये लेलैन। सुकदेव मरि गेला हुनकर बेटा रघुनाथ अखन दोकान चलबै छैथ।

कछुआ हाटपर सँ विदा भेलौं। हाटक गल-गुल जखन कानमे कम आबए लगल तखन बजलौं- “सनतन भाय, केतौ बाहरसँ अबै छी?”

सनतन भाय बजला- “हँ।”

बजलौं- “केतएसँ अबै छी?”

सनतन भाय बजला- “जहिना काठमांडू गेलापर पशुपतिनाथक दर्शनो आ सुखठीक वणिजो भऽ जाइए तहिना हमरो भेल।”

की भेलैन सनतन भायकेँ, आनक तँ बजला मुदा अपन बजबे ने केलाह। बजलौं- “दोहरी लाभ भेल भाय आ खुलिकऽ बजलौं अदहो नहि।”

सनतन भाय पारखी लोक छथिए। जहिना पारख करैक लूरि खेती-

पथारीक छैन तहिना लोकक पारखी सेहो छथिए। सनतन भाय बजला-

"महपुर गेल छेलौं।"

'महपुर' सहरसा जिलामे कारू खिरहरिक स्थानक नाओंसँ जानल जाइए। बजलौं- "भाय, कहलिऐ काठमांडू जकाँ दोहरी लाभ भेल?"

ओना, जी-जाँतिये कऽ बाजल छेलौं। बजैक कारणो अछि। सनतन भाय अपने ओहन लोक छैथ जे जे बजैबला बात वा विचार अछि ओ अपने फुरने बजै छैथ, तैठाम पुछैक प्रश्ने की अछि। दोसर, हमहींटा नहि, गामक सभ हुनका आदरक दृष्टिसँ देखै छैन तँए मुँह दाबिये कऽ सोझामे बजै छैथ। सनतन भाय बजला- "अपन दरभंगा जिलाक पूब-दच्छिनक कोणमे कुशेश्वर स्थान अछि, आ तइसँ थोड़बे आगू सहरसा जिलाक पच्छिम-दच्छिन कोणमे कारू बाबाक स्थान सेहो छैन। कमलाक पूबरिया छहर पकैड़ गेल छेलौं, जइसँ कुशेश्वर होइत महपुरा गेलौं। ओही बीचमे कमलो आ कोसियो दुनू बहिन एकठाम भेल छैथ।"

बजलौं- "भदबरिया मास जे गेल छेलौं से शिवरातिमे किए ने गेलौं जे सुखारक समय रहने रस्तो घाट नीक भेटैत।"

अपन इमानकेँ बँचबैत सनतन भाय बजला- "मनोहर, साले-साल जहिना कोसीक बान्ह आ कमलाक छहर टुटै छल, से ऐबेर नहि टुटल, तँए रस्तो नीक अछिए।"

बजलौं- "सनतन भाय, सरकारकेँ अहाँ चावस्सी दइ छिऐन?"

सनतन भाय बजला- "पहिने ई कहि देबैन जे, सभ मानि रहलौं हेन जे एहेन बरखा 1971 इस्वीमे भेल छल, तेते बरखा भेल, पाइनिक भरमार भेल, जखन कि ऐसँ कम पाइनिक आमदनीमे आन साल बान्ह-छहर राँइ-बाँइ भऽ टुटि जाइ छल, तइसँ स्पष्ट भइये जाइए ने जे जेहेन काज हेबाक चाहै छल, से नहि होइ छल। मुदा ओ बीतल दिनक बात भेल, ऐबेर चावस्सीक पात्र तँ सरकार भेबे कएल।"

अपन कएल काजसँ जहिना मनमे भरपुर खुशीक आनन्द जगैए तहिना सनतन भायकेँ सेहो जगलैन। जइसँ एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे सनतन भाइक मनमे ओहन इलाकाक भदवारिक यात्रासँ खुशी उपकल होइन। माने ई जे सौन-भादोमे तीर्थ-यात्री पहाड़ी रस्ता पकैड़ बाबाधाम जाइ छैथ, तैठाम

सनतन भाय ओहन बाढ़ि-पानिक क्षेत्रमे एक जिलाक कोन बात जे दू जिलाक भ्रमण करि कऽ आएल छला। ..बजलौं- “भाय, एना धड़फड़ा कऽ गेलौं, से जँ हमरो कहितौं तँ हमहूँ ने संग दइतौं।”

सनतन भाय बजला- “बौआ, नियारैत-नियारैत आ संगीक भाँज तकैत-तकैत तँ जिनगी अपन सीमापर पहुँच गेल। चालीस बर्खसँ नियारैत आबि रहल छेलौं। आ आबो संगीए आ भजैतियेक भाँजमे रहितौं, तँ जहिना कोलकातामे जिनगी भरि रहनिहार शान्ति निकेतन नहि देखि पबै छैथ। शान्ति निकेतन माने विश्व भारती, जैठाम रवि बाबू सन कबिरिया साधकक स्थापित कएल विचारधारा अछि। तहिना ने महपुराक कारू खिरहरिक स्थान नहि देखि पेबितौं। ओहन क्षेत्र जैठाम कोसी-कमलाक संगी अनेको छोट-मोट धारक क्षेत्र छी, तैठाम खिरहरि बाबा हजारसँ ऊपर गाए पोसने छला।”

बिनु देखल क्षेत्र अछिए, तँए मन बेसीकाल नहि अँटकल। पुछलयैन-

“भाय, हमरा तँ घरसँ निकैलते तेहेन थाल-पानि टपए पड़ैए जे घरसँ निकलैत डर होइए। तँए दरबज्जेपर सँ बैस सीता-राम, सीता-राम करैत रहै छी।”

सनतन भाय अपन मनक धुनिमे छला, तँए हमर बात सुनबे ने केलैन आकि धियाने ने देलैन, से तँ ओ जानैथ मुदा अपना धुनिमे बजला- “मनोहर, धन्यवाद ओइ इलाकाक लोककेँ दिऐन जे एहेन कष्टकर जीवन अङेजने छैथ। हुनके सभकेँ की कहबैन जे सौंसे उत्तर बिहारेक यएह स्थिति अछि।”

पान खा तमुरिया स्टेशनसँ दुनू गोरे विदा भेलौं कि सनतन भाय तमुरिया स्टेशनकेँ गोड़ लागि बजला- “मनोहर, एकटा समय छल, माने 1970 इस्वीसँ पूर्वक, जखन इलाकामे हाइ स्कूल कम छल, नेपाल तकक विद्यार्थी तमुरिया हाइ स्कूल पढ़ैले अबै छला, मुदा आजुक परिवेशमे शिक्षण संस्थाक क्षेत्रमे तमुरिया केते उठल से तँ तमुरियेक लोक ने अपना मनमे अँकता।”

ओना, सनतन भाइक विचारमे हूँहकारी भरैत रहलौं मुदा नीक जकाँ बुझि नहि पेब रहल छेलौं जे सनतन भाय की बाजि रहला अछि। अबैत-अबैत अपन गामक सीमामे जखन एलौं कि सनतन भाय बजला- “मनोहर खेती-बाड़ीक की स्थिति छह?”

बजलौं- “खेतीमे अधिया गेलौं आ बाड़ी तँ सहजे बिलैटिये गेल।”

सनतन भाय बजला- "तखन तँ बाड़ीक आशा अखन नहियेँ हेतह?"

बजलौं- "केना कहब भाय, एकक नीक दोसराक अधला सेहो होइते अछि। देखिते छी जे हथिया नक्षत्रमे नीक बरखा भेने धानक किसान हँसैत कहबे करै छैथ जे 'हथिया बरिसे, चित्त मर्ड़ाए' मुदा बाड़ीकेँ तँ महामारी आबिये जाइए। अवादैमे केते पाछू धकेलत तेकर कोनो ठीक थोड़े रहैए।"

सनतन भाय जहिना उपजाक मर्म बुझै छैथ तहिना जमीनो आ माटियो पानिक मर्म बुझिते छैथ, नीक जकाँ बुझै छैथ जे खेतमे सभ किछु उपजैए, तैसंग गुण-अवगुणक हिसाबसँ उपज-उपजमे अन्तर नीक जकाँ बुझिते छैथ। तेतबे नहि, जमीनक आकारो, ऐठाम आकारक माने ऊँच-नीचसँ अछि, आ माटियो-पानिक गुण सेहो बुझिते छैथ। नीक जकाँ बुझै छैथ जे पाखैर-पिच्चैर सेहो धाने छी आ वासमती-तुलसीफुल सेहो धाने छी मुदा दुनूक बीच केते अन्तर अछि। तहिना जमीनक आकारक अछि, एक आकार ओहन अछि जैठाम बाढ़ि-पानिक चढ़ाइ नइ होइए, दोसर एहेन अछि जे बाढ़िक नामे सुनि लोक घरसँ सभकिछु निकालि घर छोड़िकऽ पड़ाइए। तहिना माटि-पानिक सेहो अछिए। एकटा माटि ओहन होइए जे सोना उपजबैए आ दोसर एहनो तँ होइते अछि जे सोनाक कोन बात जे टलहो उपजबैक शक्ति नइ रखैए। तहिना ने मनुक्ख-मनुक्खमे सेहो अछिए।

बाड़ीक निआश सुनि सनतन भाय बजला- "मनोहर, जबरदस उघरा-भाँड़ अपना गामक किसानकेँ खेतक भऽ गेलैन। गामक अधिकांश जमीन, जेकर उपज बेसी होइ छल जे बाड़ी-घराड़ी छल ओ आब धान-धनहरक खेत भऽ गेल।"

ओना, सनतन भाइक विचार जेना-जेना कानमे, माने श्रवणेन्द्रियमे पड़ै छल तेना-तेना ज्ञानेन्द्रिय खुजि कर्मेन्द्रिय दिस बढ़ि रहल छल, मुदा पानिमे डुमल देखि हारल नटुआ जकाँ मन विचलित भऽ रहल छल। बजलौं- "सनतन भाय, जीब कठिन भऽ गेल अछि।"

अपना जनैत अपन परेशानीक हिसाबसँ बाजल छेलौं, मुदा समयक हिसाब पकैड़ सनतन भाय बजला- "मनोहर, जीब कठिन नहि असान भऽ गेल अछि।"

सनतन भाइक विचार सुनि मन पृथ्वीक उत्तरी ध्रुवसँ लऽ कऽ दच्छिनी ध्रुवक बीच लटैक गेल। की नीक की अधला से मनमे उठिये ने रहल छल। निराश मने बजलौं- "भाय, अहीं सभक मुँह देखि अखनो ठाढ़ छी, नहि तँ कहिया ने

बाढ़िमे भँसिया कऽ मरि गेल रहितौं।”

पूर्ण बिसवासक संग सनतन भाय बजला- “मनोहर, केकरो मुँह देखि कियो अनेरे जीबैए, अपन मुँह देखि लोककेँ अपने जीबा चाही। केकरो भरोसे नहि अपना भरोसे, तखन तँ..?”

सनतन भाइक विचार सुनि मनमे गुदगुदी लागए लगल, मुदा ओ गुदगुदी जीतक छल कि हारक से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। बजलौं- “की तखन तँ, भाय?”

सनतन भाय बजला- “मनोहर, जहिया बरखा शुरू भेल आ दोहरा-तेहरा गेल तहिये मन मानि गेल जे समय बेदरंग हएत। आब जँ धानक बीआकेँ सुखजोत जोइत माटिमे देब, से असम्भव जकाँ भेल जा रहल अछि, तँए बाड़ीए मे थालेकेँ सेरिया-सुरिया बीआ माटिमे दऽ देलिऐ। नीक उमझल। समयपर रोपि लेलौं। अखन तेहेन धान अछि जे केतबो पानि होइ छै, ओकरा पाबै नहि दइए। तँए बत्तीसोअना उपजाक आशा बनले अछि। जखने मनुक्खकेँ धरतीक आशा, माने जीवनक आधार भेट जाइए तखने ने ओ आशान्वित भऽ जीवन-यापन करए लगैए।” ❑

⌛ नीक ठकान ठकेलौं, 2021 ⌛

बुलन्दी

जहिना दिन-राति संग मिलि बारहो घन्टा संग रहि चौबीसो घन्टाक बारहो मौसमक बीच बसन्त गीत गबैत अछि तहिना अस्सी बर्खक रूपचन काका रूपौली गाममे, जे मध्य मिथिलाक बीचक गाम छी दिन-रातिक समय बितबै छैथ। बाढ़ि-रौदी, सुखार-दुखार आइये नहि, सभ दिनसँ अजन्मा सन आने गाम जकाँ रूपौलीमे सेहो रहबे कएल अछि। भुमकम, ठनका ई तँ कहियोकाल होइए, तँए बिसरबो नीक नहियेँ हएत मुदा अनिवार्य रूपमे नहियोँ मानल जा सकैए। 1934 इस्वीक जनवरी मासक तिलासकराँइतसँ एक दिन पूर्व, ओइ समयमे तँ भुमकमक नाप-नूप नहि छल, मुदा नोकसानक पैमाना तँ कएले जा सकैए। नेपालक काठमाण्डू, जे पहाड़क ऊपर बसल शहर छी, तेकरो छाती हिलेबे नइ तोड़बो केलक। तैसंग नेपालक तराईसँ लऽ कऽ बिहारक मुंगेर जिला तकक धरतीकेँ सेहो तेना हिलेलक जे घर-दुआर, गाछ-बिरीछ, जीव-जन्तु सभक अवघात भेल। ओहिना दोसर बेर भुमकम भेल 1988 इस्वीमे। ताधैर भुमकमक नाप-जोख आबि गेल छल। मुदा जहिना चौंतीस इस्वीक भुमकम तहिना अट्ठासी इस्वीक भुमकम जँ मानि लइ छी तँ औसतन पचास बर्खपर ओहन भुमकम हएब मानि लिअ। से मानि लिअ बितलाहा, माने भेलहामे, ऐगलाक कोनो गारंटी बेपारीक खलिया डिब्बा जकाँ नहियेँ देल जा सकैए। ई तँ भेल एक नम्बर भुमकक, तइसँ निच्चाँ नअ नम्बरक संख्या अछि। एक नम्बरसँ दोसर नम्बरक आक्रमण तीस हजार गुनाक अछि। खाएर, ओना ई भेल अपना ऐठामक भुमकमक घटना। एहेन-एहेन आफद-आसमानीकेँ मैथिल आ मैथिलानी मोजर कहिया देलैन जे अखनो देता कि देती।

अपना गतिये जहिना प्रकृति चलैए तहिना रूपौली गामो चलैए आ रूपौली गामक रूपचन काका सेहो चलिते छैथ। बाढ़िक इलाका छीहे। कहब जे धारे-धार

बाढ़ि अबैए आ चलि जाइए से नहि, मिथिलांचलकेँ पहियाकऽ उत्तरसँ शुरू करैए आ दच्छिनमे गंगामे जा ठेका दइए। वएह गंगा ने जीवनक वैतरणी सेहो पार करै छैथ। बुझले बात अछि जे सतासीक बाढ़िमे गंगासँ उत्तर झंझारपुर तकक पानिक एक लेभेल भऽ गेल रहइ। माने एकरंग जलो-दीप छल। ई तँ भेल बाढ़िक गति, मुदा तैसंग झाँट-बिहाड़ि सेहो अछिए। मौसमक हिसाबसँ भरि गरमी माने मार्चसँ नवम्बर तक दू रूपमे झाँट-बिहाड़ि अबैए। सुखारक समयमे सेहो आ बरसातक समयमे सेहो अबिते अछि। अप्पन रूपक ठेकान एकरो ने अछि, माने केते विराट रूपमे औत आकि साधारण रूपमे।

तँए कहब जे मैथिल ऐ सभसँ डेरा जेता से बात नहि अछि। मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलांचल मनुक्खेक उपजा टाक भूमि छी। मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग जीवन-निर्माणक भूमि सेहो छीहे। बुझल बात अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

खाएर जे अछि, अपना ऐठाम झाँट-बिहाड़ि मात्र समुद्रेटा सँ नहि, धरतीसँ सेहो पैदा लइए। चैत-बैशाखक सूर्जक तापसँ तपित भऽ धरती बिर्ड़ो-बिहाड़िक सृजन सेहो करैए। जेकर फलाफल मिथिलांचलकेँ ई भेटैत रहल जे गामक-गाम चैत-बैशाख आ जेठक आगिमे स्वाहा भऽ जाइ छल आ लोक गाछ-बिरीछक संग-रौद-तापमे मासो-मास जीवन-यापन करै छला। तहिना वरसातक समयमे सेहो झाँट-बिहाड़िक प्रकोप होइए, तइले सभकेँ बुझले अछि जे हथियाक झाँट केहेन होइत आबि रहल अछि, गाम-गामक घर-दुआर खसि पड़ै छल आ लोक झाँट-बिहाड़िमे खुलल असमानक बीच मासो-मास दिन गुदस करै छला, अखनो करै छैथ। यएह छी मिथिलाक साधना भूमि जे दुनियाँमे केतौ ने अछि। ने मिथिलांचल जकाँ उपजाऊ भूमि अछि आ ने मौसम। अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक जे बढ़वारि मिथिलांचलमे अछि ओ आनठाम नइ अछि। अपना ऐठाम जहिना अन्नक खेती बारहो मास होइए, तहिना तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो अछि। बरहमसिया जहिना फल अछि तहिना फूल सेहो अछिए।

प्रकृति जहिना रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ चर-अचर निरमबैए तहिना मनुक्ख बुधिसँ लऽ कऽ बेवहार सेहो निरमैबते अछि। अही प्रक्रियाक बीच रूपौली

गामक रूपचन काका छैथ। कौलेज छोड़ला पछाइत रूपचन कक्काक मन विचारसँ एते भरि गेलैन जे गामक बीच एकलव्य जकाँ अपन साधना भूमि निर्धारित केलैन। ओना, कौलेज तक रूपचन कक्काक जीवनमे कोनो नबपन नइ आएल छेलैन मुदा कौलेज-जीवनक पछाइत अपना जीवनकेँ तीन दिशामे विभाजित केलैन। पहिल अपन बेकतीगत जीवन केना पारिवारिक बनत आ पारिवारिक जीवन केना सामाजिक जीवन बनि पथ-प्रदर्शन करत।

मध्यम श्रेणीक किसान परिवारमे रूपचन कक्काक जन्म भेल छैन। शुरूमे पिताक बेवहार माने रूपचन कक्काक पिताक, ओते नीक नहि छेलैन, जेतेकक जरूरत परिवार-समाजमे अछि। मुदा बेटाकेँ माने रूपचन काकाकेँ, जखन कौलेजमे नाम लिखा देलखिन तखन विचारक संग बेवहारोमे बदलाव अनलैन। बदलाव अनैक परिस्थिति ई बनलैन जे बेटाकेँ घरसँ बाहर पढ़ैले पठाएब, एक समाजसँ दोसर समाजमे जाएत, केना मेल-मिलानसँ रहत इत्यादि। ओना, तैबीच जे संघर्ष रूपचन काकाकेँ भेलैन ओ नीक जकाँ एकपीढ़ीए-लोक बुझलकैन। जेना, मध्यवर्गीय किसान परिवारमे कौलेजक शिक्षा केतेक भारी छल, ओ पछिले पीढ़ीक लोक ने देख-बुझिकऽ वा भोगनिहारे ने नीक जकाँ जानि रहला अछि।

रूपचन काका अप्पन जीवनक शुरूआत किसानी कार्यसँ कए किसानक रूपमे जीवन स्थापित केलैन। दुनियाँ दिस ताकब छोड़ि अपना दिस नजैर निखारलैन। ओना, कौलेजक जीवनमे रूपचन काका एते सुनिकऽ सीख नेने छला जे भूत-सँ-भविष्य धरि केना मन दौड़ैए। मुदा अनुकूल स्थान नहि भेटने विचारकेँ विचारेक पौतीमे सैंतिकऽ रखने रहला।

जहिना कोनो घटना स्थलपर देखल घटना, महिनो-सालो बाद धक-दे मोन पड़ि जाइए तहिना रूपचन काकाकेँ अपन जीवनक दिशा धक-दे मोन पड़लैन। किसानियोँक तँ विराट रूप अछिए। तइमे अपने बसि ब्रजवासी जकाँ केना जीब, यएह मूल प्रश्न छी।

हथिया नक्षत्र चलि रहल अछि। उत्तरवारि टोल कोबी बिआ आनए गेल रही। टोपर बान्हि मेघ लटकल छल, मुदा गामेक काज तँए किए परहेज करितौं। मेघे छी, बरैसियो सकैए आ नहियोँ बरैस सकैए। मुदा से भेल नहि, रूपचन कक्काक घर लग जखन गेलौं कि बरसाक बून तेज भेल। दौड़कऽ रूपचन कक्काक दरबज्जापर पहुँचलौं।

रूपचन काका दरबज्जापर बैसल एकटा बाल्टीन आगूमे रखने रहैथ। जइ बाल्टीनमे दरबज्जाक चुबाठ-पानि टप-टप छतसँ खसैत रहइ। दरबज्जापर पहुँचते रूपचन काका बजला-

"तूँ सभ ते नबका लोक भेलह। देहपर गमछा रखिते ने छह।"

कहि, रूपचन काका एकटा गमछा देह पोछेले, माने पानि जे पड़ल रहए तेकरा पोछैले, देलैन।

देह पोछि, गमछा राखि रूपचन काकाकेँ हियासए लगलौं। दू ढंगसँ हिसास करए लगलौं। पहिल जे रूपचन कक्काक प्रति अपन विचार केहेन अछि आ दोसर, गीता वा आध्यात्म सोच जकाँ आध्यात्म आ जीवनक सम्बन्ध रूपचन कक्काक केहेन छैन। तइ बीचमे रूपचन काका बजला- "चाह पीबह?"

ओना, अपना मनमे भेल जे कहि दिऐन 'नइ पीब', मुदा अपने मन रोकैत विचार देलक जे जँ कहीं रूपचन काका अपनो चाह नइ पीने होथि आ हमरा देखि अपनो चाहक आग्रह भेल होइन। तँए, समाजेक लोक जकाँ अपनो विचार भेल जे सभसँ भला चुपे रहब नीक। चुप तँ भऽ गेलौं मुदा मन दू-बटियामे फँसि गेल। एक दिस देखी जे रूपचन काका अपन जुआनीक तावमे बाजि रहला अछि, जुआनीक ताव भेल नित्य सृजनमान शक्ति जागब। आ दोसर दिस देखै छी जे अखन तक अपना रहैले दरबज्जो ने भेलैन अछि.! देखिते छी जे बाल्टीन आगूमे रखने छैथ, जइमे छप्परक पानि चुबि रहल छैन। कबीर बाबाक दू पाटनक बीच जकाँ अपनो मन फँसि गेल। तइ बिच्चेमे रूपचन काका बजला-

"ऐ बेर हथिया नक्षत्र बीतला चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत।"

अपने यएह बुझै छी जे हथिया आ आसीनक दूर्गापूजा संगे-संग चलैए। तइ बीचमे रूपचन काका की बाजि देलैन। अबाक् भेल बैसल रहलौं। रूपचन कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। हथिया नक्षत्रक चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत, तेकर खगता अखन कोन अछि। अखन तँ खगता अछि जे बरसाक पानि जे दरबज्जाक बीचमे चुबि रहल अछि तेकर निराकरणक। मन नइ मानलक। बजलौं- "काका, आब तँ अन्तिम समयमे पहुँच गेलौं। अखनो तक दरबज्जाक यएह गति अछि।"

हमर बात सुनि रूपचन काका मिसियो भरि मर्माहत नहि भेला। जखन मर्माहत नइ भेला तखन घबड़ाइक जरूरते की। जेना जीवन-पद्धतिक अनुकूल

अपनाकेँ पेब रहल छला। गाम-समाजक रीते अछि जे एक-दोसर लग कानियोँ-कानि आ हँसियो-हँसि बजबे-भुकबे करैए। ऐठाम ई नइ बुझब जे महिलाटा केँ कहै छिऐन आ पुरुखकेँ नहि कहै छिऐन। मौगमेहरा पुरुखोक संख्या कि कम अछि। तिनका जरूर कहै छिऐन। रूपचन काका बजला-

"बौआ, की कहबह। जिनगीक मूले जेना लोककेँ छुटल अछि, जइसँ जीवन सेहो दुरुह भइये गेल अछि। तखन तँ..?"

मने-मन विचारए लगलौं जे जिनगीक मूल की भेल? बजलौं-

"से की काका?"

बुलन्दीसँ रूपचन काका बजला-

"बौआ, जीवनक मूल आवश्यकतामे भोजन अछि। तोंही कहह जे केतेक लोककेँ उचित भोजन भेटैए। हम ई नइ कहै छिअ जे केतेकेँ उचितोसँ बेसी भेटैए। तैठाम जँ घरक छत नहियेँ बनल अछि तँ की हेतइ। जएह अछि तेहीसँ ने जिनगीक निमरजना करब।"

रूपचन कक्काक विचार तीर जकाँ हृदयकेँ बेध देलक। अनायास मुहसँ निकैल गेल-

"हँ, से तँ अछिए।"

हँसैत रूपचन काका बजला-

"बौआ, जहिना अपने बुलन्दीसँ जिनगी पार केलौं तहिना तोंहूँ बुलन्दीसँ जिनगी पार करह, यएह हमर शुभकामना छह।" ❑

⧖ अप्पन साती, 2022 ⧖

दसअना-छअना

आइ आठ दिनसँ श्रीकान्त भाय गाममे नहि छला, मुकुन्दबाबाक कठियारीसँ एलाक तेसर दिन भने जे गामसँ निकलला से आइ एला अछि। अबिते पत्नी कहलकैन-

“भने अहाँ गाममे नइ छेलौं, नइ तँ अहूँ मारि खइतौं.!”

पत्नीक अड़आएलो विचार पतिकेँ, नून-अँचार-पियौज मिलाएल जहिना बसियो भात सभकेँ नीक लगिते अछि तहिना श्रीकान्त भायकेँ सेहो नीक लगलैन। जरल मनमे जहिना जरल विचार जन्मैए तहिना भरल मनमे सेहो भरल विचार जनैमिते अछि। सएह भेलैन श्रीकान्त भायकेँ। बजला-

“पहिने चाह-पान कराउ, पछाइत गामक बात करब।”

किछु परिवारक लेल एहेन समय तँ आबिये गेल अछि जइमे जहिना चाहो बनाएब आसान भऽ गेल अछि तहिना पानियोँक भइये गेल अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे राजस्थान, मध्यप्रदेश आकि गुजरातक चर्च कऽ रहल छी, चर्च कऽ रहल छी अप्पन मिथिलाक। जैठाम बालो-बोध माटि-पानिकेँ सानिकऽ आगूमे रखि गीत गबिते अछि जे ‘हाथी पियासल, घोड़ा पियासल दल-दल पानि।’ आब ओ समय थोड़े रहल जे घुरन बाबा लोटामे चाह बनौता आकि गेना बाबा अल्मुनियाक थारीमे। आब तँ लोक एकबेर चाह बना चौबीस घन्टा तक एक्के उपे पीबैत रहै छैथ। तहिना पानियोँक भइये रहल अछि। बैशाख-जेठ मासक कपरजरौन रौद किए ने रहौ मुदा वर्फ देल पानि आसिन मासक पानि जकाँ सुअदगर बनिते अछि। एकर माने ईहो नइ बुझब जे सरद-गरम रोगक चर्च कऽ रहल छी। पान खेलाक पछाइत जखन श्रीकान्त भाइक मन सर्रास भेलैन तखन पत्नी दिस माने नवकी भौजी दिस नजैर उठाकऽ ताकए लगला, ओना, श्रीकान्त भाय दुनू परानीक उमेर पचास बर्खसँ टपि गेल छैन। मुदा जहिना श्रीकान्त

भायकेँ, महाभरतक अभिमन्यु जकाँ, दू युग बीतला पछातियो लोक नवयुवके बुझै छैन तहिना सुकुमारिकेँ माने श्रीकान्त भाइक पत्नीकेँ, दोती बिआह भेने सभ नवकीए भौजी कहै छैन, से आइये नहि सभ दिनसँ कहैत एलैन अछि। दोती माने भेल जे जहिना श्रीकान्त भायकेँ मिड्ल स्कूलमे पढ़ैक समय बिआह भेलैन आ पाँच बरख पछाइत पत्नी मरि गेलैन तहिना सुकुमारि भौजीकेँ सेहो भेलैन। बिआहक चारियो दिन ने पूरल छैलैन कि पति मरि गेलखिन। तँए दुनूक दोतीए बिआह छेलैन। श्रीकान्त भाय बजला-

"अहाँ एहेन बात अबिते किए बजलौं जे भने अहाँ गाममे नइ छेलौं, नइ तँ मारि खइतौं। गाममे हमरा रहने अहाँकेँ अकच्छ लगैए जे एना बजलौं। जँ सएह लगैए तँ खोलिकऽ बाजू।"

ठोराहि स्त्रीगणकेँ जहिना ठोरेपर बरी पकैए तहिना सुकुमारि भौजीकेँ सेहो पाकि गेलैन, बजली-

"हमरा किए अकच्छ लागत। सत्यवान सन पुरुखक संग जखन सावित्री अप्पन सेवा धर्म माने पतिक सेवा धर्म, निमाहलैन तखन कि हम ओइसँ भिन्न छी।"

पत्नीक विचार सुनि श्रीकान्त भायकेँ टुटल बोखार जकाँ थर्मामीटरक पारा एकाएक हहैरकऽ निच्चाँ उतैर गेलैन। बजला-

"गाममे किछु भेल हेन की.!"

पतिक बातपर मोलामा चढ़बैत सुकुमारि भौजी बजली-

"जहिना धारक पानि, चाहे ओ बीच धारक हुअए आकि किनछरिक, दिन-राति चलिते रहैए तहिना ने समयक गतिक संग गामो चलिते अछि, तँए किछु-ने-किछु तँ हेबे करत किने।"

पत्नीक गपक क्रम देखि श्रीकान्त भाय मने-मन आँकि लेलैन जे हिनका माने पत्नीकेँ, गप-सप्प करैक रंग चढ़ल छैन, मुदा अपने तँ आठ दिनक काजक झमारल छी, तँए आराम करैक मन अछि। मुदा पत्नीक जिज्ञासाकेँ पूर्ति केने बिना जँ आराम करए जाएब सेहो केहेन हएत। संयोग बनल, तहीकाल गुलटेन पहुँच गेल। गुलटेनसँ सुकुमारि भौजी धखाइ छैथ, किए धखाइ छैथ से तँ वएह जनती। किए तँ देखै छी जे जइ गाम-समाजमे भैंसूर-भावोक दूरी छाँहो सँ बेसी

मानल जाइए तैठाम हक-हिस्सा ले फाँड़ बान्हि भावो भैंसूरक संग पटका-पटकी करैले तैयार भइये रहल छैथ। मुदा सुकुमारि भौजी गुलटेनसँ किए धखाइ छैथ से नहि कहि। ओना, गाम-घरमे सरकारी खुपिया विभाग जकाँ खुपिया विभाग तँ अछि नहि मुदा एक-एक लोकक चालि-ढालि एक-एक लोक नइ जनै छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि, सभक-सभ जनिते छैथ तँए भऽ सकैए जे कोनो तेहने सन किछु रहल होइन। गुलटेन बाजल-

"श्रीकान्त भाय, बहुत समय लागल?"

गुलटेनक बात सुनि श्रीकान्त भाय बजला-

"गुलटेन, अखन एबे केलौं हेन, कपड़ो-लत्ता देहमे ओहिना अछि, तँए पाँच मिनट समय दएह। पहिने कपड़ा बदैल लइ छी, पछाइत निचेनसँ सभ गप-सप्प करब।"

श्रीकान्त भाय कपड़ा बदलए गेला। सुकुमारि भौजी सेहो उठिकऽ चलि गेली। असगरे गुलटेन बैसल रहल। गुलटेनक मनमे उठल, भरिसक श्रीकान्त भाय सभ काज निपटौनहि एला अछि। मने-मन गुलटेन विचारि रहल छल कि श्रीकान्त भाय कपड़ा बदैल आबि बजला-

"गुलटेन, हाइ कोर्टमे की केना भेल आकि केना की केलौं से पछाइत गप-सप्प करब। पहिने गामक गप कहह जे किछु भेल-तेल हेन ने ते?"

गुलटेन आ श्रीकान्त भाइक बीच जीवनक सम्बन्ध छैन, तँए श्रीकान्त भाइक मुहसँ सुनिते गुलटेन बाजल-

"भाय, अजीव खेल ऐ बीचमे एकटा भऽ गेल। दुनू पार्टी दिससँ अहींकेँ पँच मानल गेल अछि। अहीं दुआरे सभ काज रूकल छइ।"

गुलटेनक बात सुनि श्रीकान्त भाय बजला- "आ जँ हम पाँच दिनक पछाइत अबितौं तखन की होइत।"

अप्पन माथ परक मोटा पटकैत गुलटेन बाजल-

"से जे होइत, मुदा अखन तक अहींपर पनचैती अँटकल अछि।"

गुलटेनक विचार सुनि श्रीकान्त भाइक जिज्ञासा आरो बढ़लैन। बजला-

"कनी फरिछा कऽ बाजह जे अजीव खेल की भेल। देखिते छहक जे अखन खेले-तमासा राजसत्तासँ समाजसत्ता धरिक प्रमुख कर्तव्य भऽ गेल अछि।

मुदा जखन ताशोक पत्तामे ठिकरीक बादशाह बेगमक डरसँ हाथ जोड़ने रहैए जे कहीं भेद ने खुजि जाए जे बादशाह कनाह अछि, तखन आनक कोन बात।”

श्रीकान्त भाइक विचार सुनि गदगदाएल मने गुलटेन बाजल-

“तहूसँ बेसी भऽ गेल अछि भाय साहैब.!”

श्रीकान्त भाय बजला-

“अनेरे समय दुरि नइ करह। जे भेल तेकरा झाड़िकऽ बाजह।”

जहिना श्रीकान्त भाय तगेदा करैत बजला तहिना गुलटेन बिना कोनो लागि-लपेट क बाजल-

“मुकुन्दबाबाक खोपड़ी माने मृत्युक पछातिक क्रिया-कर्मक खोपड़ी, बड़की पोखरिक पुबरिया महारपर बनल छैन। क्रिया-कर्मक पछाइत ओहीठाम महापात्रक संग ठकाइ ठाकुरकेँ थूकम-थूक भेल।”

जिज्ञासा करैत श्रीकान्त भाय बजला-

“थूकम-थूक कथी ले भेलैन?”

गुलटेन बाजल-

“दैछना ले।”

श्रीकान्त भाय बजला-

“की दैछना ले?”

गाम-घरक लोक रहितो गुलटेनकेँ समयक आभास छइहे। बाजल-

“भाय साहैब, मोन अछि कि बिसैर गेलिऐ जे रामखेलौन आ हरिनारायणक बीच बटैया हिस्सा ले जहिना पटका-पटकी भेल रहैन, बुझू जे तहिना दुनू गोरेक बीच, माने महापात्रो आ ठकाइओ ठाकुरकेँ भेलैन।”

एकाएक श्रीकान्त भाइक मनमे उठलैन, बटैया हिस्सा तँ 1888 इस्वी सँ 1903 इस्वीक बीच अंगरेजेक कएल सर्वेमे सिकमी बटेदारक नाम दगा गेल आ कानूनो बनल, मुदा श्राद्ध कर्मक तँ कोनो नक्शा-खतियान नइ अछि, तँए कनी दिक्कत तँ अछिए। ओना, कोनो रस्ताक एक गामक सीमाक अन्त होइते दोसर गामक सीमा शुरू भऽ जाइए, तँए असम्भव नहियेँ अछि। मुदा गामोक तँ समाज समाजे छिया, गाछ परक घोरन जकाँ जखन पकड़त माने काटत, तखन भलेँ

अपने किए ने अधडरेरेपर सँ टुटि जाए मुदा मुँहक हवक देहमे धेनहि रहैए। पाप-पुन कहियौ आकि धर्म-अधर्म, झूठ-सच कहियौ आकि दिन-राति, सबहक गति दू-दिशिया अछिए, मुदा अही दुनू गतिक बीच ने मनुक्ख अपन रास्ता बनबैत जीवनक धार पार करै छैथ। श्रीकान्त भाय बजला-

“जखन महापात्रो आ ठकाइओ ठाकुर पटका-पटकी करए लगला तखन ओइठामक लोक सभ तमाशा देखैत रहैथ आकि जखने बात-चीत माने लेन-देनक हिसाब-बारी, शुरू भेल तखने ने बीच-बचाउ करितैथ।”

गुलटेनक मनमे जेना भीतरे-भीतर खुशी होइत रहै तहिना चेहराक रंग-रूप सेहो चमैकिये रहल छेलइ। गुलटेन बाजल-

“भाय साहैब, सभ दिन सुनै छी जे शिकारी अबैए, जाल बिछबैए, दाना-पानी छिड़ियबैए, लोभसँ ओइमे फँसी नहि। मुदा एक्के-दुइये फँसि जाइए सभ। यएह तँ खेल दुनियाँमे चलि रहल अछि।”

जहिना गुलटेनकेँ बुझल रहै तहिना श्रीकान्त भायकेँ सेहो अपनो काने आ लोकक मुहेँ सुनले बात छेलैन, तँए मिसियो भरि देह नइ सिहरलैन। शान्त-चित्तसँ बजला-

“कनी सोझरा कऽ गुलटेन बाजह। अखन कि कोनो मंचपर ठाढ़ छह जे अलंकार-सवैया आबि बरहमासाक ढंगसँ बजबह। अखन तँ दुनू भाँइ एकठाम बैस अपना घरमे बतियाइ छी।”

श्रीकान्त भाय असथिरसँ बजला मुदा जहिना केकरो मन अगिआइए तँ नाकक साँस तेज भऽ जाइ छै, जइसँ बोली-वाणीमे उष्णता आबिये जाइए, तही स्वरमे गुलटेन बाजल-

“भाय साहैब.! आइये नहि, अदौसँ समाजक बीच बोलीमे चलैन आबि रहल अछि जे श्राद्ध-कर्मक दैछनामे दसअना महापात्रक आ छअना नौआक माने हजामक हिस्सा छिऐन। मुदा आइ जे लाखक कारोबार क्रिया-कर्ममे चलि रहल अछि, तइमे नौआकेँ की हिस्सा भेटै छैन।” ❑

⌛ टकुआटान, 2023 ⌛

माइक सोग

बारह बजे दिन। अपने ऑफिसेमे रही। ऑफिसमे ऑडिट चलि रहल अछि जइसँ व्यस्तता अधिक बढ़ि गेल अछि। सात दिनक ऑडिटमे आइ पाँचम दिन छी। आधासँ बेसी ऑडिट कार्य भऽ चुकल अछि। एकाएक मोबाइलमे रिंग भेल। इच्छा भेल जे अखन मोबाइल नइ उठाएब, फेर अपने मनमे भेल जे उठा कऽ देखि लइ छी जे केतए-सँ के छी। मोबाइल उठा सुनलौं, छोटकी बहिन कनैत कहलक- “भैया, माइक अन्त भऽ गेल.!”

बिनु किछु जवाब देने मोबाइल राखि देलिऐ। किछु ने बाजि भेल.! एक तँ ऑफिसमे ऑडिटक धुमसाहीक चिन्ता, तैपर माइक मृत्युक सूचना.! मनमे जेतेक घबड़ाहट छल ओ आरो बढ़ि गेल। घबड़ाएल मने जहिना कियो कोनो प्रश्नक हल करैए तहिना अपनो केलौं। मनमे ऑफिसक चिन्ता बेसी छल, किए तँ यएह ने अखन जीवन छी आ आगूओ रहत। अहीपर ने अखन अप्पन जीवन ठाढ़ अछि। मने-मन अपना मनकेँ बुझा लेलौं जे केकरो कियो प्राण थोड़े दइए। ऐ धरतीपर जे जन्म लेलक ओ एक दिन मरबे करत, तइले अनेरे सोगे-पीड़ा कऽ कऽ की हएत। किए मनमे अबैत जे मृत्युक पछाइत पहिल क्रिया लहासकेँ जराएब होइए; जइमे मुखाग्नि देब पहिल सन्तानक दायित्व बनैए। तीनू भाए-बहिनक बीच अपने पहिल सन्तान छी, तँए अप्पन दायित्व सभसँ बेसी अछि।

तइ बीच ऑफिसमे एकटा फाइलमे गड़बड़ी भऽ गेल। गड़बड़ी ई भेल जे जइ काजक कागज छल ओ दोसर काजक फाइलमे लगि गेल छल जइसँ गड़बड़ी पैदा लऽ लेने छल। ओना, किरानी फाइल सभकेँ मिला रहल छला मुदा फाइलोक कि कमी अछि जे लगले भेट जाएत। ई गड़बड़ी बड़ाबाबूक चलैत भेल। एक तँ भरि दिने ओ नशासँ मातल रहै छैथ, खासकए ऑफिसमे तँ रहिते छैथ। नशोपानक कि सीमा अछि। कियो भांग खाइ वा पीबै छैथ तँ दिनमे एकबेर खाइ-

पीबै छैथ वा कियो शराबे पीबै छैथ तँ चौबीस घन्टामे एकबेर पीबै छैथ, मुदा बाड़ाबाबू से नहि छैथ। खलियाएल मन रहौन आकि भरियाएल, आगूमे अबिते दोहरा-तेहरा दइ छथिन तइसँ हुनकर मन सदिकाल चढ़ल रहिते छैन। ऑफिस सभक एहेन दिनचर्या बनियेँ गेल अछि जे सदिकाल किछु-ने-किछु आमदनी अबिते रहैए। तहूमे हमरा ऑफिस-दे सभकियो, माने आमजन, जानियेँ रहल छैथ जे जँ कोनो काज जल्दिबाजीमे करबैक हुअए तँ बड़ाबाबू ले किछु जोगार केने जाउ, काज हाथक-हाथ हएत।

संयोग भेल फाइल भेट गेल। दोसर काजक फाइल तेसर काजक फाइलमे लगि गेल छल। फाइलकेँ भेटिते एकाएक सभक चिन्तित मनमे चुहचुही घुमल। फाइलक मिलानी भेने काजक मिलानी भइये गेल। जइसँ ऑडिटक काज आगू बढ़ल।

साढ़े चारि बजे जखन ऑफिस बन्न भेल तखन ऑफिससँ निकैलिते गाम मोन पड़ल। गाम मोन पड़िते माए मोन पड़ल। कनेक दुख मनमे भेबे कएल जे जँ गाममे रहितौं तँ अन्तिम समयमे माइक दर्शन भेल रहैत। जीवात्मासँ मृतात्माक बीचक समयक दर्शन.! मुदा से नहि भेल.! ओना, माता-पिताक मृत्युक दुख सेहो सभ बेटा-बेटीकेँ एक्के रंग नहि होइ छैन। ओहूमे कमी-बेसी होइते अछि। जे बेटा-बेटी माता-पिताक लगमे रहै छैथ, माने संग-संग रहै छैथ, मृत्यु भेने हुनका बेसी दुख होइ छैन आ जे दूर रहै छैथ हुनका कम होइ छैन। अपना केते भेल, माने माइक मृत्युक समाचार सुनि, से तँ अपने जनै छी, मुदा किछु-ने-किछु तँ भेबे कएल।

माइक मृत्युक समाचार सुनि, ऑफिस-डेराक बीचक रास्तामे जखन रही तँ मनमे उठल जे अनायास एकटा खर्चा आगूमे आबि गेल। ओना, मनमे कोनो बेसी चिन्ता नहि भेल। किए तँ जखन लोक चिन्ताक कारण बुझि जाइए तखन स्वयं निर्णय कऽ लइए जे की हेबाक चाहै छल आ की नहि भेल, बस तइ अनुकूल चिन्ता होइए। अखन तक अपने माइक मृत्युक सम्बन्धमे निश्चिन्तसँ नीक जकाँ विचारने नइ छेलौं तँए समाचार सुनि जेतेक चिन्ता हेबा चाही से भऽ रहल छल।

डेरा आबि चुपचाप कपड़ा बदैल फ्रेश होइले टंकीपर हाथ-पएर धोअए गेलौं। पत्नीकेँ कोनो भनक, माने माइक मृत्युक जानकारी, छेलैन नहि तँए आने दिन जकाँ ओ चाह-जलखैक ओरियानमे लागल छेली। अपनो मन कहै छल जे

अखन पत्नी लग नहि बाजब। जखन चाह-जलखै कऽ लेब, तेकर पछाइत जखन दुनियाँदारीक गप-सप्प करब, तखन बाजब। अखन बजलासँ अनेरे चाह-जलखैमे बेवधान हएत। तैबीच दुनू बच्चा सेहो स्कूलसँ आबि गेल।

आने दिन जकाँ पत्नी जलखै आ पानि आनिकऽ टेबुलपर रखि देली आ चोट्टे घुमि बच्चा सभकेँ जलखै दइले चलि गेली। मनमे मिसियो भरि नहि उठल जे माइक मृत्युक छुतका लगल अछि तँए पहिने नहाएब जरूरी अछि, बिनु नहेने मुँहमे अन्न-पानि केना लेब।

जलखै कऽ कऽ भरि छाँक पानि पीलौं। तैबीच पत्नी चाह नेने आबि टेबुलपर रखि देली। टेबुलपर चाह रखिते पत्नीकेँ कहलयैन- “अपनो चाह एतै नेने आउ। चाहो पीब आ किछु गप्पो-सप्प करब।”

तैबीच दुनू बच्चा सेहो जलखै खा कऽ खेलाइ ले चलि गेल। जहिना पत्नीकेँ कहलयैन तहिना ओहो रस्तेसँ, माने कीचन-रूम-सँ- ड्राइंग-रूमक बीचक रस्तामे, अप्पन चाह पीबैत आबि आगूक कुरसीपर बैसली। तैबीच चारि-पाँच घोंट चाह अपनो पीब नेने छेलौं। बजलौं- “माए मरि गेल.!”

पत्नी बजली- “कखन बुझलिऐ?”

कहलयैन- “ऑफिसेमे छेलौं। बारह बजेमे छोटकी बहिन, रीता फोनेसँ कहलक।”

समाजसँ जुड़ल लोक जँ सुलेखा रहितैथ तखन मृत्युक पछातिक काजक प्रक्रिया की सभ होइए से पुछितैथ, से तँ कहियो रहली नहि, सभ दिन पिताक संग शहरेमे रहली, ओहीठाम पढ़बो-लिखबो केलीह। पछाइत जखन विवाह भेलैन तखन अपना संग एली। तँए मृत्युसँ सम्बन्धित ओ किछु ने पुछली। झँपले-तोपल बजली- “जे नीक हएत से तँ करए पड़त।”

तीन साल पूर्व जे पिताक मृत्यु भेल छेलैन तइमे सुलेखा सेहो संगे गाम गेल छेली। मुदा परदेशिया जकाँ श्राद्ध प्रक्रियासँ कोनो मतलब नहि रखने छेली। अपने सभ किछु करैत रहलौं। क्रिया-कर्मक पछाइत पुन: बच्चा सभक संग चलि एलौं।

चाह पीलाक बाद मनमे उठल जे जँ पत्नी लगमे रहती तँ अनेरे डिस्टर्व करती। माने, अपने जे किछु सोचब-विचारब तइमे टोकि-टोकि बाधा उपस्थित

करती, तँए नीक हएत जे पत्नीकेँ कहि दिऐन- अखन अहाँ जाउ। कनी असथिरसँ सोचै-विचारै छी। कहलयैन- “अप्पन काज-उदेमकेँ जा कऽ देखियौ।”

जहिना बजलौं तहिना पत्नी उठिकऽ चलि गेली। सूचनाक क्रान्ति भेने एते तँ सुविधा सभकेँ भइये गेल अछि जे राति-बिराति हौ कि दिन-दुपहरिया, जखन केकरोसँ कोनो गप-सप्प करैक हुअए, आसानीसँ कैये सकै छी। रीताकेँ फोन लगेलौं। रीता फोन उठेलक, पुछलिऐ- “बुच्ची, माइयक दाह-क्रिया भऽ गेलैन?”

भरि दिन रीता कनैत बितौने छल। केना ने कानैत? जाबे धरि माता-पिता जीबैत रहै छैथ ताबे धरि बेटीकेँ अप्पन घर बुझि पड़ैए आ माताकेँ मरिते बेटी लेल परिवार बीरान भऽ जाइए। तहूमे जँ भाए-भौजाइ परदेशमे रहै छैथ तखन तँ आरो बेसी दूरी बनि जाइए। कनैत रीता कहलक- “हँ, माइक दाह-क्रिया भऽ गेल।”

पुछलिऐ- “केतेक गोटे कठिआरी गेल छेला?”

रीता कहलक- “साएसँ ऊपरे लोक गेल रहैथ। आधासँ बेसी तँ धिये-पुते छल।”

रीताक बात सुनि मन मानि गेल जे माइयक दाह-संस्कार भऽ गेल। मृत्युक एक प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल। ऐगला प्रक्रिया आगू हएत तइले देखल जेतइ। रीताक फोन काटि छोट भाए राजेश्वरकेँ लगेलौं।

राजेश्वर बीकानेरमे रहैए। ओना, ओ अपनोसँ दूरमे अछि माने गामक हिसाबे, मुदा आवागमनक सुविधा भेने लग-दूरक तँ सिमाने मेटा गेल अछि। जैठाम लोक पएरे एक गामसँ दोसर गाम आकि नोकरीए-चाकरी करैले नेपाल, बंगाल, असाम तक जाइ छल, तैठाम आब गाड़ी-सवारीक सुविधा भेने देशक कोन बात जे विदेशो लोक जाए लगल अछि। जहिना फोन लगेलौं तहिना राजेश्वर उठेलक। बजलौं- “बौआ! माए मरि गेलखुन, गाम कहिया एबह?”

राजेश्वर बाजल- “हम गाम जाइक तैयारीमे लगि गेल छी, रौतुका गाड़ी पकैड़ लेब।”

राजेश्वरक समाचार सुनि मोबाइल रखि देलिऐ। मोबाइल रखैक कारण भेल जे अपनो तँ गाम जेबे करब, ओत्तै आन-आन गप-सप्प करब।

एकान्त भऽ कुरसीपर ओङ्गैठ कऽ बैस विचारए लगलौं। जहिना कर्म-

ज्ञान-भक्तिक मिश्रणसँ धियान योग बनैए तहिना अपने ध्यानस्त भेलौं। ध्यानस्त होइते मनमे अनेको प्रश्न उठि-उठि ठाढ़ हुअ लगल। ऐगला कर्म, माने माइक मृत्युक श्राद्ध-कर्म, केना करब? ड्राइंग रूममे असगरे ओङ्गैठ कऽ बैसल मने-मन विचारए लगलौं। मनमे उठल जे जीवनक अन्तिमो क्षण तक लोकक मनमे आशा बनल रहिते अछि जे भऽ सकैए कोनो दवाइ एहेन लाइग करैन जे पुन: पहिलुके जकाँ नीक भऽ जाइथ। मुदा मृत्युक पछाइत तँ से विचार समाप्त भइये जाइए। तखन तँ भेल जे मृत्युक पछातिक जे प्रक्रिया अछि सएह ने आब हएत। एकाएक मनमे क्रिया-कर्म आबि गेल। दू दिन आरो ऑडिट चलत, तइ बीचमे नहियेँ जा हएत। चारिम दिन गाम जरूर विदा भऽ जाएब। तैबीच यएह ने हएत जे दाह-संस्कारसँ लऽ कऽ छौरझँप्पी तकक प्रक्रिया भऽ गेल रहत। आब तेरातिक भोजक प्रक्रिया समाप्ते भऽ गेल। जहिया से होइत रहै तहिया कठिआरी गेनिहारकेँ भोज खुआबए पड़ैत छल। ओना, नह-केशक आधा प्रक्रिया अखनो जीवित अछिए। माने ई जे परिवार आ दियाद-वाद ने दसम दिन नह-केश कटबै छैथ मुदा दियाद-वादक अतिरिक्त लोक जे कठिआरी जाइ छैथ ओ तँ तेसरे दिन नह-केश कटा पाक भऽ जाइ छैथ। ओना, तोहू प्रक्रियामे किछु बदलाउ आबिये गेल अछि। आब तेरहा, माने तेरह दिनमे श्राद्ध-कर्मक प्रक्रिया हुअ लगल अछि, तँए दसम दिन नह-केश होइए। मुदा जखन मासी होइत रहै, तखन तँ दस दिनक बदला सत्ताइसम दिन होइ छल। खाएर जे छल, जे विधि-विधान समाप्त भऽ गेल ओ तँ मेटा गेल। ओना, अखनो समाजमे, जाइतिक हिसाबसँ श्राद्धक अनेको प्रक्रिया जीवित अछिए, कोनो जाइतिक समाजमे अर्द्धमासी होइए, माने तेरह दिनक बदला पनरह दिन, तँ कोनो समाजमे पनरह दिनक बदला अठारह दिनमे होइए। खाएर जे होइए, से होइए। ओना, कम उमेरक बच्चाक क्रिया-कर्म तीनियेँ दिनक होइए आ तहिना भाए-बहीनिक बीच सेहो मुक्त हेबाक प्रक्रिया अलग-अलग अछिए। जैठाम पुरुख वर्ग, माने बेटा वर्ग तेरह दिनमे पाक होइ छैथ तैठाम बेटी वर्ग तीनियेँ दिनमे भऽ जाइ छैथ।

विचार आगू बढ़ल। अखन तक अपनो श्राद्ध-कर्मकेँ विरोधेक नजैरसँ देखै छी। माने, विचारोमे अछि आ बजबो तँ करिते छी। अपनोसँ बेसी पत्नी छैथ। ओ तँ एकदम्मे श्राद्ध-कर्मक विरोधी छैथ, मुदा मनमे विचार उठल जे एहेन विचार एक भेल आ दोसर भेल जे समाज ओकरा मानिकऽ उठा दिअए, ओ तँ दोसर भेबे कएल। बाजब आ करबमे अन्तर अछिए। विचारसँ अपनो श्राद्ध-कर्मक विरोधी

छी मुदा नइ केलाक परिणाम की हएत सेहो तँ अपने ने विचारए पड़त। समाजक जे प्रवाहित धारा अछि, तइमे जँ श्राद्ध-कर्मकेँ विरोध करैत नइ करब, तखन समाज थोड़े अप्पन मुँह चुप राखत आकि हाथ-पएर मारिकऽ बैसल रहत। ओ तँ पतीत कहि बजबो करत आ जातीय बन्धन जे अछि तइमे बान्हि छोड़ियो तँ देबे करत। जइसँ असगरक असगर रहिये जाएब। हँ, जँ समाजक सोल्होअना लोक भलेँ नहि मानैथ मुदा किछुओ लोक, माने चारियो-आठअना लोक जँ एक सूत्रमे बन्हि संगठित भऽ श्राद्ध-कर्मकेँ छोड़ि दैथ तँ असंभवो संभव भइये सकैए। अन्तो-अन्त अही निष्कर्षपर पहुँचलौं जे समाजक अनुकूल, अपनो माइयक श्राद्ध-कर्म करब अछि।

आब प्रश्न उठल जे श्राद्ध-कर्म कोन रूपेँ करब। तीन तरहक विधान समाजमे चलि रहल अछि। पहिल- बिरखौ, दोसर- पंचदान आ तेसर- कुरसी। खर्चोक हिसाबसँ आ किरियो-कर्मक हिसाबसँ तीनूमे अन्तर अछिए। ऐठाम ई नहि बुझब जे एक्के काज, माने माता-पिताक श्राद्ध-कर्मक तीन प्रक्रिया किए अछि। आ जँ अछि तँ कतौ-ने-केतौ, किछु-ने-किछु पेंच अछि। अखन तइ सभकेँ छोड़ू। समाजमे अधिकांश लोक जे करै छैथ सएह मानि लइ छी। समाजो तँ समाज छीहे। रंग-रंगक चलैन सेहो अछिए। हालेमे एक गोटे दू करोड़ रुपैआ खर्च कऽ कऽ माइयक श्राद्ध कर्म आ भोज-भात केलैन। ओना, हाथी-धोड़ा दानक अनेको उदाहरण सभकेँ बुझले अछि, मुदा अपने जइ जोकरक छी सएह ने करब। अन्तो-अन्त विचार भेल जे समाजक चालीस प्रतिशत लोक ओहन छैथ जे दू लाखसँ दस लाख रुपैआक श्राद्ध-कर्म माए-बापक करै छैथ। सीमो बनल अछि जे विधिवत पंचदानक श्राद्ध-कर्म, जे आँगनसँ पोखरिक घाट धरि होइए आ जाइतिक बीच भोज-भातक सीमा सेहो बनले अछि; जेकरा सभा, सौजनी इत्यादि कहल जाइए। दुनू मिलाकऽ पाँच लाख खर्च हेबे करत।

चारि दिनक पछाइत अपने गाम एलौं। छोट भाए, राजेश्वर परिवारक संग पहिनहि आबि चुकल छल। बीतल चारि दिनक प्रक्रियामे जे काजसभ छल, ओ समाप्त भऽ गेल छल। आइसँ नौत-पिहानी, कुटुम्ब सभक बीच, शुरू हएत जे गाम आबिते केलौं।

अपना अबैसँ पहिने गाम-समाजमे गुनगुनी पसैर गेल छल जे किरियो-कर्म आ भोजो-भात नीक हेबे करत। किए तँ सभ जानिये रहल अछि जे दुनू भाँइ

मनोहर खूब कमा रहल अछि।

गाम एला पछाइत दोसर दिन समाजक बैसार केलौं। सभकियो एकमत भऽ विचार देलैन जे पंचदान श्राद्ध आ दसगामा जे सभा अछि ओकरा भोज दिऐ। समाजक विचार मानि सएह केलौं। मोटा-मोटी चारि लाख रुपैआ खर्च भेल। भोजमे खूब जस भेल।

तेरहम दिन श्राद्ध-कर्मसँ निवृत्त भेलौं। चौदहम दिन सत्य नारायण भगवानक पूजा करि कऽ पनरहम दिन गाड़ी पकैड़ लेलौं। स्लीपर डिब्बाक रिजर्वेशन टिकट छल। सभकेँ बैसा अपने ऊपरका सीटपर जा असगरे ओंघरा गेलौं। ओंघराइते मनमे उठल जे उमेरक हिसाबसँ माए अखन मरैवाली नहि छल, सतावन-अठावन बरख मरैक उम्र थोड़े भेल। आन-आनकेँ देखै छी जे अस्सी-पचासी, नब्बे बर्खपर मरैए, तैठाम माए साठियो बरख नहि पार कऽ सकल। अपने मन विचार देलक, लोक भलेँ मृत्युक सीमाकेँ नहि मानि अनिवार्य मानि लैथ मुदा अप्पन आत्मा की कहैए? एकाएक मन मानि लेलक जे बेटा जकाँ माइयक सेवा अपने नहि कऽ सकलौं। जँ नीक जकाँ सेवा करैत रहितौं तँ अखन माए नहि मरैत।

माइयक मृत्युक दोख जखन अप्पन मन मानि लेलक तखन एकाएक विचारक एक सीमापर मन अँटैक गेल। ने आगू किछु फुरि रहल छल आ ने पाछू उनटैक कोनो रास्ता देखा पड़ि रहल छल। गुन-धुनमे पड़ल मनमे उठल जे भरिसक परिवारक अर्थे बुझैमे ने दोष भऽ रहल अछि? अप्पन जे जीवन चलि रहल अछि ओ तँ यएह ने चलि रहल अछि जे अपने छी, पत्नी छैथ आ दूटा बच्चा अछि। की बेवहारिक दौड़मे परिवारकेँ माता-पिता छोड़ि कऽ नहि मानने छी? माए गाममे रहै छल, अपने सभ दिल्लीमे रहै छी, तखन माइयक सुख-दुखमे अप्पन की सेवा अछि? माइयक मृत्युक सोगमे तेना सोगा गेलौं जे किछु फुरिये ने रहल छल। मनमे बेर-बेर उठि रहल छल- दोखी तँ अपने छी। ❑

⌛ सहोदर भाय, 2024 ⌛

गाम भगा देलक

ऐबेर हथिया नक्षत्रमे खूब बरखा भेल। ओना, आन साल हथिया नक्षत्र शारदीय नवरात्रा, माने आसीनक दुर्गापूजामे पड़ैत रहल से ऐबेर नइ भेल। दुर्गापूजा अगुआ गेल हथिया नक्षत्र पछुआ गेल। माने ई जे जइ दिन दुर्गापूजा समाप्त भेल तेकर दोसर दिन हथिया नक्षत्र चढ़ल। ओना, ऐ साल शुरूहेसँ समय-समय बरखा भेने धानोक फसल राघोपुरे गाम टा मे नहि, परोपट्टाक आन-आन गाममे सेहो नीक अछिए। जइसँ किसान सभक मन आनन्दित छैन्हे। हथिया नक्षत्रक तेसर दिन भारी बरखा भेल जइसँ इलाकामे, माने कोसी नदीसँ पच्छिम आ कमला नदीसँ पूबक जे क्षेत्र अछि, तइमे खूब बाढ़ि आबि गेल। कोसीक पछबरिया बान्ह टुटने आ कमलाक पूबरिया छहर टुटने इलाका जलमग्न भइये गेल अछि। बाध दिससँ घुमिकऽ एला पछाइत सरूपकाका दरबज्जापर बैसबे केलाह कि बरखा शुरू भेल।

शुरूमे सरूपकाका बुझलैन जे ऐ बेरुका समय ढेनुआर अछिए तँए आने दिनक बरखा जकाँ बरखा हएत। मुदा से नहि, भारी बरखा भेल। बरखाक अनुमान करैत कियो बजैत जे बादल फटि गेल तँ कियो बजैत जे मेघ फटि गेल.! सोझमतिया सरूपकाका बुझबे ने करैथ जे बादल फाटब की भेल आ मेघक फाटब की भेल। तैबीच भातीज मुनेसर दरबज्जापर एलैन। मुनेसर हाइ स्कूलमे पढ़ैए। मुनेसरकैँ सरूपकाका पुछलखिन- “बौआ, लोकसभ जे बजैए जे बादल फटि गेल से की भेल?”

मुनेसर दसमा क्लासमे पढ़ैए। आर्टक विद्यार्थी रहने भूगोल सेहो पढ़ैए, बाजल- “काका, आइ जे बरखा भेल, तइमे देखलिऐ ने जे जेना धान-चाउरक बोरा वा कोठीक मुँह खुजिते भुभुआ कऽ धान-चाउर निकलैए तहिना ने बरखो भेल छल। यएह भेल बादल फाटब।”

अपना जनैत मुनेसर बाजल मुदा सोझमतिया सरूप कक्काक मन नइ मानलकैन। बजला- "बौआ, कनी फरिछा कऽ कहह।"

दसमा क्लासक विद्यार्थी मुनेसर, सरूप कक्काक प्रश्नक उत्तर नीक जकाँ नहि दऽ सकल, से बुझैत मुनेसर विषयकेँ आगू बढ़बैत बाजल- "काका! आसाममे, आब मेघालय, एकटा स्थान अछि ओकर नाम छिऐ चेरापूँजी। ओइठाम सबसँ बेसी बरखा होइए।"

विचारक प्रवाहमे सरूपकाका बजला- "चेरापूँजीमे सभसँ बेसी बरखा होइए आ सभसँ कम बरखा केतए होइए?"

जहिना सरूपकाका पुछलखिन तहिना मुनेसर कहलकैन- "जैकबाबादमे। देशक आजादीसँ पूर्व, माने 1947 इस्वीसँ पहिने, जैकबाबाद भारतेक अंग छल मुदा देशक बँटवारा, माने भारत-पाकिस्तानक बँटवाराक पछाइत जैकबाबाद पाकिस्तानमे पड़ि गेल आ चेरापूँजी अखनो भारतेमे अछि।"

सोझमतिया लोक सरूपकाका बजला- "ओइठाम, माने चेरापूँजीमे खेती-पथारी केहेन अछि आ गाछ-बिरीछ सभ केहेन अछि?"

बालबोध मुनेसर अन्दाजसँ तँ किछु कहलकैन मुदा अप्पन विश्वास बँचबै दुआरे बाजल- "काका, नीक जकाँ नइ बुझल अछि।"

जहिना कोनो देवस्थान वा धर्मस्थानक नाम सुनि सुननिहारक मनमे देखैक जिज्ञासा जगैए, तहिना सरूप कक्काक मनमे सेहो चेरापूँजी देखैक जिज्ञासा जगलैन। जइसँ मने-मन विचारए लगला जे जँ कियो संगी भेटैत तँ ओइ स्थानकेँ देखि अबितौं जे चेरापूँजी केहेन अछि। ओइठामक खेती-पथारी, माल-मवेशी आ गाछ-बिरीछ केहेन अछि।

संयोग भेल गामेक एक गोरे, माने राघोपुर गामक एक गोटा, आसामक चाय बगानक एक गोटा ऐठाम नोकरी करैए। सुन्दरलाल नाम छिऐ। ओ सरूपकाकाकेँ भेँट भेलैन। गप-सप्पक क्रममे सुन्दरलाल कहलकैन- "सरूप भाय, आठम दिन हम आसाम जाएब।"

सुन्दरलालकेँ सरूपकाका कहलखिन- "सुन्दर, हमरो नेने चलिहह।"

सुन्दरलाल ई नहि बुझलक जे सरूप भाय किए जेता, तँए बाजल- "भाय, अहाँ जे आसाम जाएब तँ ऐठाम, माने गाममे खेती-पथारी आ माल-जाल के

सम्हारत?”

सरूपकाका बजला- “हम की कोनो नोकरी करए जाएब। घुमै-फिड़ैले जाएब। सुनै छी जे ओइठाम एकटा स्थान अछि, जेकर नाम चेरापूँजी छिऐ, ओतए दुनियाँक सभसँ बेसी बरखा होइ छै, तँए ओइ जगहकेँ देखए जाएब जे ओइठामक खेती-पथारी, माल-जाल आ लोकक घर-दुआर केहेन अछि।”

सरूप कक्काक विचार सुन्दरलाल बुझि गेल। बाजल- “भाय, आठम दिन तक गाममे छी नअम दिन गामसँ चलि जाएब। जँ अहूँ चलब तँ संगे चलब। बड़ लोक अपना इलाकाक ओइठाम रहै छैथ।”

विचारक प्रवाहमे सरूपकाका बजला- “अपना इलाकाक केते लोक आसाममे रहै छैथ?”

सुन्दरलाल बाजल- “भाय, लोक केते रहै छैथ से तँ नइ बुझै छी मुदा अप्पन भाषा, माने मैथिली बजनिहार चारि लाख लोक छैथ।”

सात दिन बाद। आठम दिन सुन्दरलालक संगे सरूपकाका आसाम गेला। आन-आन देखनिहार जकाँ सरूपकाका नहि छैथ। माने आन-आन बेसी देखनिहार लोक प्राय: ओहन होइ छैथ जे मात्र तीर्थ स्थल देखै छैथ, मुदा तइसँ भिन्न सरूपकाका छैथ। सरूपकाका ओइठामक खेत-पथार, पहाड़-पहाड़ी, गाछ-बिरीछ, धार-धूर इत्यादिकेँ देखै छैथ आ तैसंग अपना ऐठामक खेत-पथार, गाछ-बिरीछ इत्यादिसँ तुलना सेहो करै छैथ।

दू दिनक पछाइत सरूपकाकाकेँ मोन पड़लैन जे चालीस बरख पूर्व रधिया भौजी अपन सात बर्खक बेटाकेँ लऽ कऽ सेहो आसामे आएल छेली।

स्वरूपकाका केकरो मुहेँ सुनने छला जे रधिया भौजी चाहेक बगानमे काज करै छैथ। ओना, हुनका मनमे ईहो होनि जे बहुत दिन पहिलुका घटना छी, भऽ सकैए रधिया भौजी मरि गेल होइथ। मुदा ईहो मनमे होनि जे सात बर्खक बेटाकेँ सेहो लऽ कऽ आएल छेली। जँ कहीं अपने मरियो गेल हेती तँ बेटा तँ जीवित हेबे करतैन। ओना, मनमे ईहो होनि जे ओ चिन्हत कि नहि चिन्हत। फेर लगले ईहो मनमे उठि गेलैन जे परिचय देलाक बाद तँ लोक एक पुस्तकेँ के कहए जे सात पुस्त पहिलुको लोककेँ चिन्हबे करैए।

तर्क-वितर्क करैत सरूपकाका विचार पक्का कऽ लेलैन जे जखन एतेक

लोक ऐठाम छैथ तखन एक दिने नहि दू दिने, दू दिने नहि तीन दिने, मुदा भाँज तँ लगिये सकैए..।

हेराएल लोकक चर्चा सुनि लोकक मनमे एहेन जिज्ञासा जगिते अछि जे सभकिछु छोड़ि ओकरा देखए चाहिते अछि। सरूपकाकाकेँ सेहो तहिना जिज्ञासा जगलैन। जिज्ञासा जगिते भाँज लगबए लगला। एक गामक लोक जहिना दोसर गाममे खोजलापर भेट जाइए, एक जिलाक लोक दोसर जिलामे भेट जाइए, तहिना एक राज्यक लोक सेहो दोसर राज्यमे भेटिये जाइए। दोसर दिन, माने रधिया भौजीक खोज करैक क्रममे दोसर दिन, सरूपकाकाकेँ रधिया भौजी भेट गेलैन।

सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक रधिया भौजीकेँ देखि पहिने तँ ने सरूपकाका चिन्ह सकलैथ आ ने रधिया भौजी सरूपकाकाकेँ चिन्हलकैन। मुदा दुनू गोरेक बीच जखन गामक परिचय दैत गप-सप्प भेलैन तखन दुनू गोरे दुनू गोरेकेँ चिन्हलैथ। चिन्हते रधिया भौजी सरूपकाकाकेँ आगत-भागत करए लगलैन। आगत-भागत करैत रधिया भौजी कहलकैन- “बौआ, ऐठाम एला चालीस बरख भऽ गेल। जमीन कीनिकऽ अप्पन घर सेहो बना नेने छी। कोनो चीजक दिक्कत नहि अछि। बहुत दिनक सम्बन्ध, माने चालीस बर्खक सम्बन्ध पछुआएल अछि तँए कमसँ कम सात दिन रहू। केना-केना ऐठाम एलौं आ किए गाम छोड़लौं, सब वृतान्त कहब।”

अखन तक सरूपकाका अपनाकेँ आनठाम, माने आन राज्य, आन जगहपर बुझि रहल छला मुदा रधिया भौजी ऐठाम सरूपकाका अपनाकेँ अप्पन गाम आ अप्पन घर बुझए लगला। पहिल दिन, माने जखन सरूपकाका रधिया भौजीक ऐठाम पहुँचला, देखबे-सुनबेमे बित गेलैन।

सुर्यास्त भेला पछाइत मुनेसर, रधिया भौजीक बेटाक नाओं सेहो मुनेसरे छी, कामपर सँ आएल। ने सरूपकाका मुनेसरकेँ चिन्हलैन आ ने मुनेसर सरूपकाकाकेँ चिन्हलकैन। नहा-धो कऽ मुनेसर माएकेँ पुछलक- “माए, के छैथ?”

रधिया भौजी कहलखिन- “बौआ, पहिने कपड़ा बदैल कऽ तैयार भऽ जा पछाइत सब कियो एकठाम बैस सब गप-सप्प करब।”

जहिना माए बेटाकेँ कहलैन तहिना मुनेसर केलक। तैबीच अलोधनी, माने

रधिया भौजीक पुतोहु, जलखै बनौलक। दूटा घर रधिया भौजी बनौने छैथ। एकटा घरमे तीन टा कोठरी छैन, आ दोसर घर दरबज्जा जकाँ बैसार-उसार करैले छैन। घरक तीन भाग छहरदेवाली सेहो देने छैथ।

तीनू गोरे, माने सरूपो काका, रधियो भौजी आ मुनेसरो एकठाम बैस, आसामक चर्च शुरू केलैन। रधिया भौजी बजली- “बौआ सरूप, हमहूँ बुढ़ भेलौं आ अहूँ चौथापनमे पहुँचिये गेल छी, मुदा बेटो, माने मुनेसरो आ पुतोहुओ, माने मुनेसरक पत्नियो तँ से नहि अछि, तँए पहिने गामक, माने राधोपुर गामक खिस्सा कहै छी। किए तँ जहिया हम गाम छोड़ि ऐठाम- असाम एलौं, तहिया अहूँ नवजुवके रही तँए सब गप नइ बुझल हएत। तहिया मुनेसर तँ सहजे साते बर्खक बाल-बोध रहए।”

जहिना रधिया भौजी बजली तहिना सरूपकाका स्वीकार करैत बजला-

“हँ, से तँ नहियेँ बुझल अछि आ जेहो बुझल अछि सेहो, बहुत दिन भेने, बिसैर गेलौं।”

रधिया भौजी बजली- “बौआ, अहूँ सुनू आ मुनेसर, तहूँ सुनह। ओइ समयमे, माने जहिया गाम भगा देलक, माने गामक लोक घर उजारि घराड़ी छीनि लेलक, तहियाक समयक खिस्सा कहै छिअ। मालिक-मलिकानक गाम छल। माने राजा-रजबार जमीन्दार सब गामक मालिक छल। वएह सब किसानो आ बोनिहारो सभक, माने जेकरा थोड़-बहुत खेत-पथार छेलै, तेकरासँ जमीनक मलगुजारी असुलै छल। माने साले-साल जमीनक टेक्स लइ छल। दू साल जे पछुआ जाइ छल, ओकर जमीन निलाम कऽ लइ छल, माने ओ जमीन मालिक-मलिकानक भऽ जाइ छेलइ। दोसर छल, सूदिखोर महाजन, बेर-बेगरतामे जे लोक रीन-पैंच लइ छल तँ ओकर ओ सूदि लइ छल, तइमे झूठ-फूस कऽ कऽ बेइमानी सेहो करै छल, आ समयपर नइ देने ओ खेत-पथार छीनि लइ छल। तेसर छल, गामक बलंठ लोक, जे गरीब-गुरबाक खेत धकिया कऽ अपना खेतमे मिला लइ छल, जइसँ ओ बेलल भऽ जाइ छल। तहिना राँड़-मसोमात कहक आकि विधवा, जेकरा कियो पीठपोहू नइ होइ, माने जेकरा पीठपर कियो रक्छा करैबला नइ छल, तेकरासभकेँ डाइन कहि मारबो-पीटबो करै छल आ गामसँ भगा ओकर खेत-पथार हरैप लइ छल। ई छल पुरना खिस्सा।”

सरूपकाका बजला- “भौजी, हमरा ते लोक सबदिन बकलेल-ढहलेल

कहैत आबि रहल अछि, किए तँ अप्पन मेहनतसँ परिवारो चलबै छी आ अपनो जीबै छी। सब दिन सोझमतिया लोक रहलौं, अहाँक संग कि भेल जे गाम छोड़ि ऐठाम आबि रहै छी?”

सरूप कक्काक विचार सुनि रधिया भौजीक दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। मुँहक बकार बन्न भऽ गेलैन। कँपैत हृदयसँ बजली- “बौआ, ओइ समयमे, माने चालीस बरख पहिने, गाम-गाममे महामारी-हेजा, चेचक, प्लेग इत्यादि होइ छल। अपनो गाममे हेजा भेल। बहुत लोक मरल। तही हेजामे मुनेसरक बाप सेहो मरि गेला। श्राद्ध-कर्म भेलाक पाँच दिनक पछाइत झबड़ूलाल तीनू बापूत पहुँच कहलक जे हमरासँ अहाँक घरबला तीन साए रुपैआ आ पाँच मन धान कर्ज नेने छल, जे सूदि-सवाइ लगा पाँच साए रुपैआ आठ मन धान भऽ गेल अछि, से दिअ। अपना तँ बुझल नइ छल, तँए कहलिऐ, हमरा नइ बुझल अछि।”

हमर बात सुनिते झबड़ूलाल गरियाएब शुरू केलक। हम चुप्पे रही। गाममे बहुतो असहाय स्त्रीगण सभक दशा देखनहि रही। की करितौं, चुपचाप बरदास कऽ लेलौं।”

सरूपकाका बजला- “तखन की भेल?”

रधिया भौजी बजली- “साँपक मुँह साँप चटैए। गामोक लोक सभ झबड़ूए लालक संग पकैड़ लेलक। निस्सहाय भऽ गेलौं। घरमे जे सभ रहए, सभटा लऽ लेलक.!”

विह्वल होइत सरूपकाका बजला- “तब की भेल?”

रधिया भौजी बजली- “सात बर्खक मुनेसर छल। बुझि पड़ल जे आब मार-पीट करत। अपने तँ मारि बरदासो करितौं मुदा बेटा तँ मरिये जाइत। एकरा सभकेँ, माने महाजन सभकेँ, की कोनो दया-धरम होइ छै। बेटाकेँ संग केलौं आ नैहर चलि गेलौं। हम्मर भाए अहीठाम, माने असामेमे, चाह बगानक मालिक ऐठाम नोकरी करै छल। ओ गाम आएल छल। जाबे ओ गाममे रहल ताबे हमहूँ महिनाथेपुरमे रहलौं। सात दिनक पछाइत जखन ओ परिवारक संग एतए आबए लगल तँ हमरो दुनू माइपुतकेँ संगमे नेने आएल। दू दिन तक गाड़ीमे चढ़ल रहलौं, पछाइत असाम पहुँचलौं। शुरूमे ऐठामक बोन-झाड़ आ पहाड़ देखि डरो हुअए मुदा भाइयक परिवार रहने, धीरे-धीरे डर मेटा गेल।”

सरूपकाका- “तब की भेल?”

रधिया भौजी बजली- “गाममे जे काज करै छेलौं, से काज तँ ऐठाम छल नहि। तँए, सोल्होआना अनाड़ीए रही। संयोग एहेन भेल जे जइ मुहल्लामे रहै छेलौं, ओइ मुहल्लामे चाहे-बगानमे काज करैबला लोकसभ बेसी छल। एकटा महिला, जे मसोमात छेली, हुनकर घरबला, जे हाइ स्कूलमे शिक्षक छेलखिन। ओ बस एक्सीडेन्टमे मरि गेल छेलैन। वएह महिला अपने ऐठाम स्कूल चलबै छेली। बच्चा सभकेँ पढ़बै छेली। हुनके ऐठाम नोकरी भऽ गेल। हुनके घरमे, माने जइ घरमे स्कूल चलबै छेली, तहीमे दुनू माए-बेटा रहबो करी आ काजो करी।”

नमहर साँस छोड़ैत सरूपकाका बजला- “आब तँ अप्पन सभ किछु भऽ गेल?”

‘अप्पन सभकिछु’ सुनि रधिया भौजी मुस्कुराइत बजली- “हँ, से तँ सभकिछु भइये गेल अछि। अहाँ सबहक असीरवादसँ मुनेसरो बढ़ियाँ नोकरी करैए। दूटा पोता अछि, जे दुनू पढ़ैए। पोती जेठ अछि, ओ सासुरमे रहैए।”

सरूपकाका बजला- “एक बेर गाम चलू।”

रधिया भौजी बजली- “जे गाम भगा देलक ओइ गामक मुँह की देखब। आब तँ सहजे पाकल आम भेलौं, जे दिन जीबै छी, से दिन जीबै छी।”

मुनेसरकेँ सरूपकाका कहलखिन- “बौआ, हम तँ ऐठाम अनाड़ी छी, किछु देखल-सुनल नइ अछि। हमरा तूँ चेरापूँजी देखा दएह।”

मुनेसर कहलकैन- “चाचाजी, पहिने, जखन आसाम-मेघालय बँटवारा नइ भेल छल, तखन चेरापूँजी आसामे राज्यमे पड़ै छल मुदा आब ओ मेघालयमे पड़ि गेल अछि। परसू रबि छी, छुट्टी रहत। भोरे दुनू-बापूत विदा हएब। बसक रास्ता अछि। साँझ तक देखि-सुनिकऽ घुरि आएब।” ❑

⧖ सत्यमेव जयते, 2025 ⧖

❑❑❑

❑❑

❑

Notes